विषय-सूची

प्रथम-खण्ड

वैदिक तथा हिन्दू काल

द्वितीय खण्ड

मुसलिम—काल

तृतीय खण्ड

अंग्रेजी-काल

विषय पृष्ठ संख्या

दो शब्द

आम तौर से विद्यार्थी यह शिकायत किया करते हैं कि उन्हें कई बार पढ़ लेने पर भी इतिहास याद नहीं होता। इसी बात से घबराकर वे हाईस्कूल कक्षाओं में तो इतिहास को ऐच्छिक विषय होने के कारण छोड़ तक देते हैं। इतिहास का अध्ययन कितना लाभकारी है और इसके द्वारा विद्यार्थी कितने कुशल राजनीतिज्ञ बनकर सांसारिक विषयों का कितना सुन्दर अनुभव प्राप्त कर लेते हैं तथा जीवन में आने वाली कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने के लिए कितने योग्य बन जाते हैं ?—इस सम्बन्ध में हमें यहाँ कुछ नही कहना है। अपने राम तो यहाँ इतिहास के याद होने और न होने के प्रश्न को लेकर उपस्थित हुए हैं और इसी की कुछ चर्चा इन पंक्तियों में चलानी है।

प्रायः यह देखा गया है कि अध्यापक गण छात्रों को न तो क्रमानुसार घटनाओं के शीर्षक बोर्ड (श्याम पट) पर लिखकर पाठ ही पढ़ाते हैं और न उन्हें इस विषय के (कापियों में) संक्षिप्त नोटस् ही लिखवाते हैं। अधिकांश स्थानों पर पौराणिक कथाओं की भाँति या तो अध्यापक महोदय डैस्क के ढक्कन के शब्द के साथ, या बेंत अथवा रूल डंडे को मेज़ पर बजा, पुस्तक खोलकर पाठ पढ़ना शुरू कर देते हैं या किसी शीघ्र पाठी बालक

को खड़ा कर देते हैं और उससे पंजाबमेल की रफ़्तार से घन्टा बजने तक वह पाठ समाप्त करा देते हैं। फलस्वरूप बालक न इतिहास समझ पाते हैं और न उनमें इस विषय के लिए किसी प्रकार की रुचि ही पैदा होती है। जब बालक याद करने बैठते हैं तब नोटस् इत्यादि के न होने से उन्हें महाभारत के समान मोटे पोथे को पढ़ना बुरा लगता है और वे उसे भयंकर सर्प समझ अपने पिटारे के बाहर निकालने का प्रयत्न तक भी नहीं करते।

मान लीजिए कि स्कूल से कोई बालक 'महमूद तुगलक' का पाठ पढ़कर आया है। अब यदि उसके पास एक पृष्ठ में उसका निम्नलिखित ढँग का नोट या टिप्पण मौजूद है तो वह बहुत जल्द उसे याद कर लेगा। देखिये—

१. चरित्र—योग्य, कई भाषाओं का विद्वान्, परिश्रमी, बात को समझ कर मानने वाला, धर्म का पाबन्द, उत्तम व्याख्याता इत्यदि।

२. स्वभाव—जिद्दी, उतावला, आज्ञाओं का पालन कराने में कठोर।

३. विजय—(१) कमायूँ। (२) गढ़वाल। (३) मुल्तान। (४) लाहौर (५) दिल्ली से दक्षिण में मदूरा तक (६) सिन्ध से बंगाल तक।

४. भूलें—(१) खुरासान और चीन पर चढ़ाई। (२) दोआब का

कर। (३) राजधानी बदलना। (४) ताँबे का सिक्का इत्यादि।

५. फल—राज्य में अन्त समय में अशान्ति और दक्षिण में स्वतन्त्र राज्यों का कायम होना।

अब सब से बड़ा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि कौन तो इतनी बड़ी कापी बनाए, कौन चैक करे, और कौन उसे सुरक्षित रक्खे ? यह कहावत प्रसिद्ध है कि—

"दर्दे सर के वास्ते सन्दल लगाना है मुफ़ीद,
इसका घिसना और लगाना भी तो दर्दे सर से कम नहीं।"

अस्तु, इतिहास की एक ऐसी पुस्तक लिखने का जिसमें सम्पूर्ण इतिहास थोड़े से पृष्ठों में आजावे और कोई बात रहने भी न पावे, मैं कुछ दिनों से इच्छुक था। संयोग से जब गर्मी की छुट्टी में अपनी मंसूरी 'निवाई' गया तब वहाँ के स्टेट वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल के योग्य इतिहास-भूगोल-अध्यायक पं० नानगरामजी शर्मा तथा बा० कल्याणमलजी जैन से बातचीत हुई। मालूम हुआ कि आपके पास मेरी इच्छित वस्तु तैयार ही है। "काग़ज़ काफ़ी महंगा है और बुकसेलर बिना तगड़ा मुनाफा लिए कोई पुस्तक न देने के आदी हैं, अतः वर्नाक्यूलर स्कूलों के ग़रीब विद्यार्थी लाभ न उठा सकेंगे"—इस ख़याल से मैंने मास्टर साहिबानों से स्वयम् ही इसे छपा डालने के लिए अनुरोध किया और हर्ष है कि आप इस बात पर राज़ी हो गए कि यदि

इसका सम्पादन मैं कर दूँ तो फिर उन्हें इस कार्य में कोई अड़-चन न होगी। पुस्तक आपके कर कमलों में है और इसका सम्पादन कैसा हुआ है वह भी आप ही जानें। खास तौर से परीक्षा के दिनों में जब कि सारे इतिहास के पोथे को पढ़ना असंभव है यह पुस्तक बड़े काम की सिद्ध होगी। विद्यार्थी रात्रि को केवल दो घन्टे में—जैसा कि पुस्तक का नाम है—सारे भारत-वर्ष का दौहरान करके सो जावें और मज़े से सुबह परीक्षा दे आएँ। आशा है विद्यार्थी लेखक महोदयों के परिश्रम से पूरा पूरा लाभ उठाएँगे और योग्य अध्यापक गण भी अपने अपने विद्या-र्थियों से इसके पढ़ने के लिए परामर्श करेंगे। कागज की इस मँहगाई में इसका मूल्य बारह आना न्योछावर मात्र है।

साहित्य कुटीर,
जयपुर। } एन० एल० माथुर अध्यापक,

नम्र निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक इतिहास पाठी विद्यार्थियों के लिए कितनी उपयोगी सिद्ध होगी—यह बात तो सम्पादक महोदय ने अपने 'दो शब्द' में भली भाँति प्रकट कर दी है। हमारा यह प्रथम प्रयास है। मिडिल कक्षाओं को इतिहास पढ़ाते समय हमें यह महसूस हुआ कि इतिहास के पाठों के इस प्रकार के संकेत विद्यार्थियों के लिए बड़े काम के साबित होंगे। कई बार हमने इन्हें ही नोट्स के तौर पर कक्षाओं में लिखवाया भी। अनुभव यही हुआ कि बालकों को इतिहास इनके द्वारा आसानी से और पक्का याद हो गया। सम्पादक महोदय के अनुरोध से हमने इनको उन्हें दे दिया और फलस्वरूप वे ही संकेत आज आपके सामने इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत हैं। यदि विद्यार्थी इससे लाभ उठावेंगे तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सफल हुआ।

विनीत—

निवाई—
दीपावली सं० १९९९

नानगराम शर्मा,
कल्याणमल जैन

प्रथम-खण्ड

वैदिक तथा हिन्दू काल

१—भारतवर्ष का भौगोलिक वृत्तान्त और इतिहास से लाभ

भारतवर्षः—भारत + वर्ष या भरत + वर्ष (वर्ष = द्वीप का भाग)

हिन्दुस्तानः—हिन्दू + स्थान (सिंधु के पूर्वी भाग को कहते हैं)

इण्डियाः—हिन्द का विगड़ा हुआ शब्द इण्ड है।

हिन्द से यूरोप वालों ने इण्ड वनाया और इण्डिया नाम रक्खा।

जलवायु का मनुष्य पर प्रभावः—(अ) मैदानी और गरम। (ब) पहाड़ी और ठंडी।

(१) स्वभाव। (२) कपड़े। (३) भोजन। (४) रहन-सहन।

भारत की स्थिति का उसके इतिहास पर प्रभावः—१—हिमालय (१) हमले। (२) सभ्यता में भेद। (३) उपयोगिता।

२—समुद्रः—यूरोपीय कोमों का हिन्दुस्तान में आना।

मौलिक एकता

१—पुरानी रीति से—

(१) वेदपुरान। (२) तीर्थ और पवित्र स्थान। (३) त्योहार और रीति रिवाज।

२—नई बातों से—

(१) भाषा। (२) कपड़ा। (३) शासन।

भारत की प्राकृतिक बनावट का इतिहास पर प्रभावः—(१) हिमालय। (२) विन्ध्याचल। (३) नदियाँ। (४) मैदान। (५) रेगिस्तान।

इतिहास पढ़ने के लाभः—१—आदमी वर्तमान दशा को किस प्रकार पहुँचा। (२) ऐतिहासिक घटनाएँ। (३) राजनीति और नीति। (४) भले बुरे में भेद। (५) बुरों से घृणा और भलों का अनुकरण। (६) मानसिक शक्तियाँः—(अ) धारणा शक्ति; (ब) अन्वेषण शक्ति; (स) कल्पना शक्ति की वृद्धि होती है।

२—प्राचीन निवासी और उनकी सभ्यता

पाषाण-कालः—(१) सूरत शक्ल। (२) रहन-सहन। (३) खूराक। (४) पत्थर से काम लाना।

उत्तर-पाषाण कालः—(१) सूरत शक्ल। (२) रहन-सहन। (३) भोजन। (४) दस्तकारी।

द्राविड़ः—(१) कहाँ से आये। (२) दक्षिण में जाना।

द्रविड़ों का हाल और उनकी सभ्यता

१—सूरत शक्लः—काले और ठिंगने। २—रहन सहनः—मकान तथा किले बनाकर रहना। ३—व्यापारः—उन्नति और बाहर जाना। ४—दस्तकारीः—जेवर, सिक्के और जहाज बनाना। ५—धार्मिक विचार और रीति रिवाज़—१-देवताओं की पूजा; २-मुर्दों का गाड़ना। ६—शिक्षाः—१-तस्वीर और नकशे का प्रयोग; २-लिखना पढ़ना।

५००० वर्ष पूर्व की सभ्यता

१—मोहिन जोदड़ो:—

(१) इमारत (२) तालाब। (३) नदी। (४) नहरें। (५) सड़कें। (६) दूकान। (७) दालान।

२—हरप्पा:—(१) इमारत। (२) मूर्तियाँ। (३) वस्त्र। (४) जेवर।

वस्त्र:—ऊँचे दरजे के लोग—दुशाला और धोती। नीचे दरजे के लोग—नंगा रहना।

जेवर:—स्त्री पुरुष का शौकीन होना।

धर्म:—मन्दिरों का होना।

रीति रिवाज:—(१) औरतों का छोटी धोती बाँधना। (२) मर्दों का छोटी दाढ़ी रखना। (३) जेवर का शौक। (४) मुर्दों को जला कर हड्डियाँ गाड़ना।

दस्तकारी और काश्तकारी:—(१) कातना, बुनना। (२) हथियारों का कम होना। (३) जानवरों का पालना।

लिखना पढ़ना:—मुहरों का मिलना।

हिन्दुस्तान के प्राचीन हमलावर २—आर्य

आर्य कौन थे:—यूरोपीय नस्ल का होना।

कहाँ से आये:—इतिहासकारों को चार जगहों से बतलाना।

किसप्रकार बस गये:—(१) झुंड बनाकर धीरे-धीरे दो आबे तक फैलना। (२) अनार्यों के साथ लड़ाई।

आर्य सभ्यता—(१) गृहस्थ जीवन:—झोंपड़े बना कर रहना,

बड़ों का घर में हुक्म मानना, बाल विवाह की प्रथा न होना। (२) स्त्रियों की दशाः—उनमें पर्दे का रिवाज न होना, पतियों के साथ यज्ञ करना, कसीदाकारी व रँगना जानना। (३) खाना-पीनाः—भोज्य पदार्थ, मांस, सोम और शराब। (४) स्वभाव और विचार (१) अतिथि सत्कार करना (२) दीन दुखियों की मदद करना। (५) धर्मः—ऊषा, अग्नि, वायु, सूर्य, मेव इन्द्र की पूजा करना, यज्ञ करना, धीरे-धीरे ईश्वर का ज्ञान होना। (६) कारोबारः—(१) मवेशी पालना। (२) खेती करना। (३) नहरें खुदवाना। (४) बरछी भाला बनाना। (५) लकड़ी से जहाज, नाव, रथ बनाना। (७) व्यापारः—नाव, जहाजों में चढ़कर समुद्र पार व्यापार के लिए जाना। (८) शासनः—१-बड़े-बड़े दलों का राजा होना। २-सभा में बैठ कर राज्य के मामलों पर बहस करना और राजा को अपनी सलाह देना। ३- चोरों के लिए सजा देना। ४-कर्जदार को अपने महाजन का गुलाम बनना। ५-युद्ध का शौकीन होना।

उत्तर वैदिक काल

जीवनः—चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

स्त्रियों की दशाः—(१) शिक्षा की उन्नति। (२) स्त्रियों का आदर। (३) गार्गी, मैत्रयी आदि विदुषी स्त्रियों का जलसों में विद्वानों के साथ वादविवाद करना।

खाना-पीना—गोश्त शराब बन्द करना।

स्वभाव और विचारः—(१) वर्ण के लिहाज से घमंडी होना। २–जातियों का बढ़ना। (३) छूतछात का बढ़ना।

धर्मः—(१) नये देवता। (२) जीवन का चालीस संस्कार। (३) यज्ञ-तप-ईश्वर आत्मा पर बहस। (४) आर्यों और शूद्रों के खयालात।

कारोबारः—(१) खेती। (२) दस्तकारी की चीजें।

शासन—अश्वमेध यज्ञों से प्रगट होता है कि छोटे-छोटे राज्य स्थापित थे।

शिक्षाः—(१) सूत्रों का बनाना। (२) पाणिनी का अष्ठाध्यायी नामक ग्रन्थ बनाना। (३) शून्य का आविष्कार। (४) ज्योमेट्री का ज्ञान (५) बीमारियों की चिकित्सा।

३—रामायण और महाभारत काल की रूपरेखायें

रहन सहनः—रामायण और महाभारत के समय में समाज की दशा बदलना, काश्तकारी और दस्तकारी आदि पेशों पर अपनी जिन्दगी बसर करना। जाति भेद बढ़ना।

धर्म—ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा, यज्ञ करना, चांडालों से घृणा।

स्त्रियों की दशाः—पतिव्रता और सुशिक्षित होना। सती की प्रथा। पर्दे की नींव।

रीति-रिवाजः—एक से अधिक विवाह। बाल-विवाह की प्रथा न होना। स्वयंवर। शूद्रों में शादी करना और उनके हाथ का खाना खाना बुरा समझना।

दस्तकारी और उन्नतियां—जेवर, हथियार, फौज का प्रबन्ध, व्यापार के लिए दूसरे देशों में जाना।

४—जैन और बौद्ध-धर्म की रूपरेखायें

नये धर्मों की उत्पत्ति—ब्राह्मणों का ऊँचा होना, छूत-छात का विचार, कई लोगों का वैदिक धर्म न मानना और उनका जङ्गल में रहकर तप करना। उन लोगों का अपने चेलों को शिक्षा देना, महावीर और गौतमबुद्ध का इन्हीं लोगों में से होना।

जैन धर्मः—ईसा से ५०० वर्ष पहले जारी रहना। विद्वानों का इस धर्म को बौद्ध-धर्म से ज्यादा पुराना बतलाना।

चलाने वाले कौन थेः—महावीर स्वामी का जन्म और मृत्युः—

५४० ईसा पूर्व महावीर स्वामी का जन्म हुआ और ४६८ ई० पूर्व मृत्यु हुई।

शिक्षाएँ:—(१) सच बोलना, अहिंसा, चोरी न करना, रुपया जमा न करना, ब्रह्मचर्य पालन करना। (२) तप, दया और ज्ञान मोक्ष के साधन हैं। (३) कर्म का फल भोगना।

जैन-धर्म में भेदः—श्वेताम्बर और दिगम्बर।

धर्म और शिक्षा का प्रभावः—(१) जानवरों पर दया। (२) अस्पताल। (३) जैनी राजाओं का शान्त राज्य करना। (४) जैन मन्दिरों और इमारतों की दस्तकारी।

बौद्ध-धर्म

बौद्ध-धर्म और उसके प्रचारकः—(१) इनका जन्म और मृत्यु। (२) संसार को त्यागना।

बौद्ध-धर्म के सिद्धान्त और शिक्षाएँ:—(१) अच्छे रास्ते पर चलना। (२) किसी को न सताना। (३) जब तक मन शुद्ध न हो यज्ञ, जप, तप सब व्यर्थ हैं। (४) कर्म बड़ी चीज है कोई इसके फल से नहीं बच सकता। (५) अच्छे कर्म द्वारा आवा-गमन से छुटकारा मिल जाता है। (६) आदमी को मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहना चाहिये। (७) हमेशा सच बोलना और झूठ से परहेज। (८) ईर्ष्या, द्वेष, चोरी को बुरे काम बतलाना।

बौद्ध-धर्म की सफलता:—(१) भिक्षुओं का रुचिपूर्वक काम करना। (२) जाति पांत का भेद व्यर्थ बतलाना। (३) साधारण भाषा में शिक्षा। (४) आडम्बर का न होना। (५) राजाओं का सहायता करना।

पतन के कारण:—(१) गुप्त राजाओं का वैष्णव होना और इस समय ब्राह्मणों का जोर। (२) बौद्ध धर्म में खराबी होना। (३) भिक्षुओं का दुराचारी और लापरवाह होना। ४) शंकराचार्य और कमानल भट्ट का वेदान्ती शिक्षा देना और बौद्ध-धर्म को मुकाबिले में नीचे दिखाना। (५) राजपूतों का जोर। (६) मुसल-मान और हूणों के हमले। (७) राजाओं से मदद मिलना।

जैन और बौद्ध-धर्म की तुलना

समानता:—(१) अहिंसा परमोधर्म। (२) वैराग्य की शिक्षा। (३) साधारण भाषा में शिक्षा। (४) जाति-पाँत का भेद व्यर्थ। (५) यज्ञ न मानना। (६) भिक्षुओं और चेलों के द्वारा शिक्षा। (७) मोक्ष तक आवागमन जारी रहना। (८) दुनिया के जंजाल से बच कर निर्वाण पाने की शिक्षा।

भिन्नता:—(१) मोक्ष का ढंग अलग २। (२) जैन-धर्म में तप, वैराग्य और शरीर के कष्ट पर जोर देना लेकिन बौद्ध-धर्म का जरूरी न समझना। (३) जैनियों का अहिंसा पर जोर लेकिन बौद्ध-धर्म वालों का चीन और जापान में माँस खाना भी बुरा न समझना।

बुद्ध के समय का राजनैतिक भारत

बड़े राज्य:—कोशल, कोशाम्बी, अवन्ती और मगध में बड़े राजाओं का होना।

छोटे राज्य:—शाक्य, कुशीनारा, मल्ल, मोरिय, लिच्छवि और विदेह प्रजा तन्त्र राज्यों का होना जिनका प्रबन्ध प्रजा से चुने हुए मेम्बरों से होना।

शासन:—(१) प्रजा का सभा में एक सरदार चुनना। (२) सभा की मदद से राज्यों का प्रबन्ध होना। (३) नगरों में सभा की इमारतें होना जिनमें राज्य का काम भी किया जाना। (४) अपराधों का कम होना। (५) छोटे-छोटे गाँवों की बस्तियाँ होना।

५—६०० ई० पूर्व से सन् ६४२ ई० तक के राजा और राज्य

मगध राज्य से जानकारी

समय:—६०० ई० पूर्व।

स्थान:—वर्तमान विहार उड़ीसा जहाँ पर है वहाँ पर था।

शासकः—शिशुनाग वंश के लोगों का राज्य करना। बिम्बसार और अजातशत्रु प्रसिद्ध राजाओं का होना।

बिम्बसार और अजातशत्रु का हालः—(१) अजातशत्रु का कौशल जीतकर वहाँ की राजकुमारी से विवाह करना। (२) काशी का दहेज में मिलना। (३) अजातशत्रु का पाटलिपुत्र बसाना। (४) इस वंश के अन्तिम राजा महानन्द का एक शूद्र स्त्री से विवाह करना। (५) इस स्त्री से महापद्मनन्द का पैदा होना।

नन्द वंशः—(१) महापद्मनन्द का नन्दवंश में पहला राजा होना। (२) कौशल, कौशाम्बी, अवन्ती के राजाओं को हराकर एक बड़ा राज्य स्थापित करना। (३) महापद्मनन्द का इतना शक्तिवान होना कि सिकन्दर का यहाँ आते हुए हिचकिचाना।

सिकन्दर कौन थाः—यूनान में मकदूनिया रियासत के राजा फिलिप का लड़का।

सिकन्दर की विजयः—(१) आरम्भ में कई राज्य जीतना। (२) अपने पुराने दुश्मन फारिस के बादशाह दारा को हरा कर रास्ते में अफ़गानिस्तान को जीतते हुए ३२७ ई० पूर्व पंजाब में दाखिल होना। (३) तक्षशिला के राजा का अधीन होना और पुरु के राजा का लड़ कर हारना।

सिकन्दर का लौटनाः—(१) व्यास नदी तक आकर अपने सिपाहियों की इच्छा से झेलम के रास्ते से वापिस होना। (२) रास्ते में लड़ाइयाँ और कत्ल। (३) फौजों को जहाजों से

चिस्तान तक । दक्षिण में नर्मदा तक । पूर्व में बंगाल से पश्चिम में सिन्ध तक फैला होना ।

शासन-प्रबन्धः—(१) राजा की निगरानी । (२) प्रजा की भलाई । (३) कानून की सख्ती । (४) गुप्तचरों का होना । (५) फौज—फौज के चार हिस्से । (६) शहर के प्रबन्ध के लिये सभाएँ । (७) गाँवों में स्वराज्य ।

मेगस्थनीज का विवरण—रहन-सहनः—(१) ताले न लगाना । (२) ईमानदारी । (३) गिरवी रखकर लौटाना । (४) सादा जीवन । (५) प्रेम । (६) मुकदमे न होना ।

रीति-रिवाजः—सती प्रथा ।

धर्मः—(१) विष्णु और शिव की पूजा । (२) गंगा की पवित्रता ।

व्यापारः—(१) सोने चाँदी के जेवर और मसाले का आना जाना । (२) भाव का मुकर्रिर होना । (३) सौदागरों की गैर अख्तयारी ।

दस्तकारीः—जेवर और कारीगरी वगैरह ।

सल्तनत-प्रबन्धः—६ सभाओं का होना इत्यादि ।

अशोक (२७३ ई० पू० से २३२ ई० पू०)

राजा होनाः—अपने बाप बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अपने भाइयों को पराजित करके राजा होना ।

स्वभावः—शान्तिप्रिय, दयावान और धर्मात्मा होना ।

कलिङ्ग-विजयः—उस राज्य को जो उड़ीसा से हैदराबाद के

और स्वयं का बिलोचिस्तान के रेगिस्तान में होते हुए वापिस लौटना।

मृत्युः—लौटते हुए ३३ वर्ष की अवस्था में बेबीलन के मुकाम पर ज्वर से पीड़ित होकर ३२३ ई० पूर्व में मरना।

आक्रमण का परिणामः—(१) लूटमार, कत्ल और बरबादी। (२) दो भिन्न जातियों का मेल। (३) हिन्दुस्तान की कला-कौशल का यूनानियों पर प्रभाव। (४) यूनानियों की कला-कौशल को भारतवासियों का सीखना। (५) हिन्दुस्तानी राज्यों का कमज़ोर होना। (६) राज्यों का कमज़ोर चन्द्रगुप्त मौर्य का विशाल राज्य स्थापित करना जिससे इतिहास का भाव पैदा होना।

मौर्य-वंश (३२० ई० पू० से १८४ ई० पू०)

मौर्य-वंश की इब्तदाः—चन्द्रगुप्त मौर्य का विष्णुगुप्त (चाणक्य) नामक ब्राह्मण की सहायता से महापद्मनन्द को ३२० ई० में उतार कर खुद राजा बनना।

मौर्य का अर्थः—मुरा से मौर्य होना न मानकर चन्द्रगुप्त का मोरिय क्षत्री-वंश में से होना।

चरित्रः—चन्द्रगुप्त का बहादुर, बुद्धिमान और प्रतापी होना।

सिल्यूकस से लड़ाईः—३०४ ई० पू० में सिल्यूकस का चन्द्रगुप्त से हारकर आधा राज्य और अपनी बेटी देना। इस विजय से चन्द्रगुप्त पर अच्छा प्रभाव।

राज्य-विस्तारः—उत्तर में हिन्दूकुश अफ़गानिस्तान और बिलो-

चिस्तान तक। दक्षिण में नर्मदा तक। पूर्व में बंगाल से पश्चिम में सिन्ध तक फैला होना।

शासन-प्रबन्धः—(१) राजा की निगरानी। (२) प्रजा की भलाई। (३) कानून की सख्ती। (४) गुप्तचरों का होना। (५) फौज—फौज के चार हिस्से। (६) शहर के प्रबन्ध के लिये सभाएँ। (७) गाँवों में स्वराज्य।

मेगस्थनीज का विवरण—रहन-सहनः—(१) ताले न लगाना। (२) ईमानदारी। (३) गिरवी रखकर लौटाना। (४) सादा जीवन। (५) प्रेम। (६) मुकदमे न होना।

रीति-रिवाजः—सती प्रथा।

धर्मः—(१) विष्णु और शिव की पूजा। (२) गंगा की पवित्रता।

व्यापारः—(१) सोने चाँदी के जेवर और मसाले का आना जाना। (२) भाव का मुकर्रिर होना। (३) सौदागरों की गैर अख्तयारी।

दस्तकारीः—जेवर और कारीगरी वगैरह।

सल्तनत-प्रबन्धः—६ सभाओं का होना इत्यादि।

अशोक (२७३ ई० पू० से २३२ ई० पू०)

राजा होनाः—अपने बाप बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अपने भाइयों को पराजित करके राजा होना।

स्वभावः—शान्तिप्रिय, दयावान और धर्मात्मा होना।

कलिङ्ग-विजयः—उस राज्य को जो उड़ीसा से हैदराबाद के

पूर्वी हिस्से तक द्राविड़ों की सभ्यता में था जीतना। युद्ध में लाखों आदमियों के कत्ल और खून से दया आना।

राज्य-विस्तारः—उत्तर में हिन्दुकुश, से दक्षिण में चोल, पाण्डय, केरल तक पश्चिम में बिलोचिस्तान और सुराष्ट्र से पूर्व में कलिंग और बंगाल तक होना।

अशोक का बौद्ध होनाः—पहले से दयावान् होना। कलिंग की लड़ाई से इस पर प्रभाव। उपगुप्त की शिक्षा।

अशोक पर बौद्धधर्म का प्रभावः—(१) महल में जानवरों का न मारा जाना। (२) शराब और मांस की मनाह। (३) दौरे करके शिक्षा देना। (४) बौद्ध-तीर्थों को देखना। (५) मठ, मन्दिर स्तूप बनवाना। (६) खेल तमाशे जिनमें जीव हत्या होती थो बन्द करना।

शिक्षाः—(१) दूसरे धर्म को बुरा न कहना। (२) धर्म के चार अंग—दया, दान, सत्य, शौच। (३) जानवरों पर दया। (४) माँ बाप की सेवा। (५) भाई-बन्धुओं से प्रेम।

अशोक का बौद्ध-धर्म प्रचारः—(१) शिक्षाओं को शिलाओं और लाटों पर खुदवाना। (२) पाटलिपुत्र में भेद मिटाने को सभा। (३) महामात्र का नियुक्त होना। (४) अपने बेटे महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को धर्म-प्रचार करने को भेजना।

शासन-प्रबन्धः—(१) प्रेम इलाज। (२) प्रजा को संतान के बराबर समझना। (३) गरीबों और दीनों पर रहम करने की आज्ञा। (४) दरख्त, सड़कें, कुएँ, अस्पताल, धर्मशाला बनवाना।

(५) अहिंसा का कानून। (६) फरयाद सुनने को तैयार रहना। (७) मुकद्दमे शीघ्र तय करना।

समाज की दशा

धर्मः—(१) यथा राजा तथा प्रजा। (१) यवनों का हिन्दू होना। (२) गोश्त खाना बुरा समझना। (३) यज्ञ बन्द होना। (४) लोगों का संन्यास लेना।

रहन-सहनः—(२) आराम, चैन के साथ-साथ जिन्दगी बसर करना।

मौर्य-काल की कला-कौशलः—(१) साँची और भारहुत के स्तूप में अच्छा काम। (२) पहाड़ों और चट्टानों के अन्दर कमरे। (३) संगतराशी। (४) सारनाथ में मूर्त्तियाँ। (५) राजा के महल फाह्यान के कथानुसार देव महल होना।

मौर्य-साम्राज्य का पतनः—(१) अशोक की पोलिसी। (२) फौज की कमजोरी। (३) सूबों में हाकिमों का जुल्म। (४) अशोक के उत्तराधिकारियों की निर्बलता। (५) बाहरी आक्रमण। इन बातों से पुष्यमित्र का आखिरी मौर्य राजा ब्रहद्रथ को १८४ ई० पू० में मारकर शुंग वंश की नींव डालना।

शुंग-वंश (१८४ ई० पू० से ७२ ई० पू० तक)

पुष्यमित्रः—(१) कलिंग के राजा का पुष्यमित्र को पाटलिपुत्र से निकालना। (२) डिमिट्रिअस और मेनेन्डर (मिलिन्द) का पुष्यमित्र पर हमला। (३) पुष्यमित्र की विजय और अश्वमेध यज्ञ। (४) वैदिक धर्म की उन्नति। (५) यज्ञ होना। पाणिनी के

आष्य पातञ्जलि का इसी समय बनना। १४६ ई० पू० में पुष्यमित्र की मृत्यु।

अग्निमित्र का राजा होना:—(२) इसके बाद देव भूमि का राजा होना। वासुदेव मंत्री का देव भूमि को कत्ल करके कान्व वंश की नींव डालना।

कान्व-वंश (७२ ई० पू० से २७ ई० पू० तक)

(१) वासुदेव कान्व का ७२ ई० पू० में राजा होना। (२) चार शासकों का ४५ साल राज्य करना। (३) आन्ध्र वंश वालों का इस वंश के अन्तिम निकम्मे राजा सुशुमी को मार कर २७ ई० पू० में मगध पर अधिकार।

आन्ध्र वंश:—(१) राजाओं का ताकतवर होना। (२) हिमालय से तंगभुद्रा तक राज्य-विस्तार। (३) इनके समय में शिल्प, वाणिज्य, विद्या की उन्नति। (४) अरब फारस से व्यापार। (५) कल्याण, सूरत और भड़ौच के बन्दरगाह।

शक-वंश:—(१) यूनानियों को बेक्ट्रिया से निकाल कर हिन्दु कुश पर्वत से उतर कर उत्तरी-पश्चिमी देशों पर अधिकार। फिर आगे बढ़ना। (२) तक्षशिला, मद्रास और सौराष्ट्र में राज्य करना। और आन्ध्र वंश को हरा कर कृष्णा तक उनका राज्य छीन लेना।

कुशान-वंश:—(१) यूर्ची कौम का आमू नदी से पार उतरना। (२) इसकी एक शाखा कुशान का भारत में प्रवेश करना। (३)

यूनानी और शक कौम को हरा कर अपना राज्य कायम करना। (४) कुशान-वंश में कनिष्क का राजा होना।

कनिष्क का राजा होनाः—हिन्दुस्तानियों का ७८ ई० में अँगरेजों का १२० ई० में राजा होना बतलाना। और इसी समय शाक-संवत जारी करना।

कनिष्क की विजयः—कनिष्क का वीर और योद्धा होना। (२) मगध, मालवा पार्थिया, चीन, काशगर, यारकंद और खुतन जीत कर बड़ा साम्राज्य बनाना और देवपुत्र कहलाना।

राज्य-विस्तारः—उत्तर में अलताई से दक्षिण में नर्मदा तक, पश्चिम में सिंध से पूर्व में बनारस तक।

धर्मः—(१) पहले देवताओं का मानना। बाद में बौद्ध होना जैसा सिक्कों से प्रकट है। (२) बौद्ध-सभाएँ करके मठ और मीनार बनवाना। (३) बुद्ध की हड्डियाँ पेशावर की मीनार में रखना।

विद्याः—(१) विद्वानों का आदर। (२) नागार्जुन, अश्वघोष, चरक विद्वानों का होना।

व्यापारः—(१) रूम से सोना आना। (२) हिन्दुस्तान से कीमती माल जाना। (३) सोने का सिक्का चलाना।

कला-कौशल—(१) गान्धार-शैली का आविष्कार। (२) यूनानी कारीगरों का पेशावर में स्तूप बनाना। (३) मथुरा के अजायब घर में सरकटी मूर्ति।

पतनः—(१) वाशिष्क और हुविष्क का कनिष्क जैसा न

होना। (२) हुविष्कपुर और मथुरा में हुविष्क का मठ बनावाना। (३) कई कमजोर राजाओं का होना। (४) सूबेदारों का स्वतंत्र होना।

गुप्त-साम्राज्य ३२० ई० से

स्थापना:—(१) कनिष्कके बाद कई अर्से तक छोटे २ राज्य। (२) चौथी सदी में गुप्त खानदान वालों का मगध में राज्य स्थापित करना। (३) चन्द्रगुप्त का ३२० ई० में अपने सुसराल लिच्छवि खानदान वालों से मदद पाकर राज बढ़ाना। सिक्का और संवत् चलाना।

समुद्रगुप्त

राजा होना:—३४० ई० में चन्द्रगुप्त (प्रथम) की मृत्यु होने पर राजा होना।

समुद्रगुप्त की विजय—(१) उत्तरी भारत में नैपाल, आसाम, बंगाल, गुजरात और अफगानिस्तान। दक्षिण में उड़ीसा की खाड़ी के किनारे २ गंजाम, विजगापट्टम, काञ्जीवरम तक पहुंचना। (२) दक्षिण के देश जीतकर राजाओं को वापिस देना।

राज्य-विस्तार:—अशोक की लाठ के मुवाफिक कश्मीर से नर्मदा तक पंजाब से ब्रह्मपुत्र तक।

समुद्रगुप्त का चरित्र:—(१) लड़ाका किन्तु दयावान होना। (२) योग्य, कवि और गान विद्या में निपुण। (३) वीणा का शौकीन। (४) महाराजाधिराज का पद लेकर अश्वमेध यज्ञ करना। (५) ब्राह्मणों को सोने के सिक्कों का दान।

धर्मः—वैष्णव होते हुए दूसरे धर्मों का आदर करना। (२) बौद्ध गया में लंका के राजा को मठ बनाने की इजाजत। (३) यज्ञ करना।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (३८० ई०-४१३ ई० तक)

(१) समुद्र गुप्त के मरने पर रामगुप्त का राजा होना। (२) मथुरा के शक राजा से लड़ाई। (३) रामगुप्त का कत्ल। (४) चन्द्र-गुप्त की विजय और राजा होना। मालवा, गुजरात, काठियावाड़ के शक राजाओं को हराकर उन्हें जीतकर शकारि कहलाना।

राज्य-विस्तारः—हिमालय से नर्मदा, पंजाब सिंध से बंगाल तक।

धर्मः—(१) वैष्णव होना, । (२) हिन्दू धर्म की उन्नति। (३) ब्राह्मणों का प्रभाव। (४) यज्ञ करना।

विक्रम-संवतः—५७ साल ई० पू० से आरम्भ होना। (२) उज्जैन के राजा विक्रमादित्य मालव का जिसकी कौम कभी पंजाब में आबाद थी इस संवत् का चलाना। (३) मालव की वजह से मालवा नाम भी पड़ना।

चन्द्रगुप्त के जमाने का हालः—फाह्यान के विवरण से।

फाह्यानः—चीनी यात्री फाह्यान का बौद्ध-धर्म की किताबें तलाश करने हिन्दुस्तान में आना। ६ साल रहना। चन्द्रगुप्त के जमाने का हाल लिखना।

शासन-प्रबन्धः—(१) प्रजा प्रसन्न। (२) टेक्स कम। (३) सफर में आजादी। (४) नरम कानून। (५) साधारण अत्याचारों पर

जुर्माना। (६) फाँसी कम। (७) बागियों को अंगभंग का दंड देना। (८) धर्मशाला और अस्पताल।

धर्मः—(१) ब्राह्मणों का जोर। (२) जानवरों का न मारना। (३) शराब, सूली की मनाई। (४) गोश्त और शराब की दूकानें शहर बाहर। (५) धार्मिक स्वतन्त्रता। (६) मठ मन्दिरों की भरमार। (७) गरीब और यतीमों पर रहम। (८) मुफ्त दवा।

विद्याः—(१) ब्राह्मणों का इल्म पाना। कालिदास आदि बड़े-बड़े विद्वानों का होना। किताबें बनना।

कला-कौशलः—(१) पाटलिपुत्र का रोनकदार होना। (२) मन्दिरों मठों में कारीगरी का काम।

कुमारगुप्त (४१३—४५५)

अमन चैन से राज्य करना। आखिरी समय में हूणों से लड़ाई।

स्कन्दगुप्त (४५५—४६७ तक)

१ः—हूणों के हमले। स्कन्द गुप्त का बहादुरी से लड़ना और राज्य को बचाना।

गुप्त साम्राज्य का पतनः—(१) कुमारगुप्त के समय में कमजोरी होना। (२) हूणों के हमले। (३) अंतिम उत्तराधिकारियों का बहुत ही कमजोर होना।

गुप्त काल की उन्नति—विद्याः—(१) संस्कृत की उन्नति। (२) पुराणों का फिर से संगठन। (३) मुद्राराक्षस, मृच्छकटिक,

शकुन्तला, मेघदूत, रघुवंश और कुमार सम्भव ग्रन्थों का बनना। (४) कालिदास का साहित्य में, आर्यभट्ट और वराहमिहिर का ज्योतिष में नामपाना। (५) बनारस में विश्वविद्यालय। (६) चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्त के समय में वसुबन्धु बौद्ध विद्वान् का होना।

व्यापारः—गुजरात का राज्य भारतवर्ष के राज्य में मिलने से व्यापार में उन्नति (२) समुद्र के किनारे बन्दरगाह बनना। (३) विदेशों से व्यापार।

कला-कौशलः—(१) संगतराशी में कानपुर के भीतर गांव और ललितपुर के देवगढ़ मन्दिर में संगतराशी की प्रदर्शनीय बातें। (२) मूर्ति पूजा से दस्तकारी में और भी उन्नति। (३) इमारतों में नक्काशी और कन्दाकरी। (४) अजन्ता की गुफा में नक्काशी का उम्दा काम। (५) समुद्रगुप्त की लोहे की लाट से धातु का काम प्रकट होना।

धर्मः—(१) वेदों की उन्नति। (२) मन्दिरों की अधिकता। (३) अन्य धर्मों का आदर। (४) जैन मूर्तियाँ बनना।

गुप्त खानदान के बाद हिन्द की हकूमतें:—(१) मौखरी साम्राज्यः—वर्तमान संयुक्त प्रांत में मौखरी वंश का राज्य था। (२) मगध राज्य—जिसमें गुप्त के कमजोर राजा राज्य करते थे। (३) थानेश्वर—पंजाब के पूर्व में थानेश्वर का राज्य था। जहाँ प्रभाकर वर्धन राज्य करता था। (४) हूणसाम्राज्य—जो एशिया के देशों में दूर तक फैला हुआ था। साकल इसकी राजधानी था।

(५) मालवा—जिसका मशहूर राजा यशोधर्मन हुआ जिसने ५२८ ई० में मगध के राजा बालादित्य की मदद से मिहिर कुल को भगा दिया और थोड़े ही समय में तमाम उत्तरी भारत को जीत कर अपना राज्य स्थापित कर लिया जो शीघ्र ही मिट भी गया।

गुप्त साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने पर तीन प्रसिद्ध राज्यों का बनना :—(१) मोखरी वंश का राज्य। (२) मगध का राज्य। (३) थानेश्वर।

हर्ष की विजयः—मालवा के राजा का राज्यश्री को आजाद करना। (२) राज्यश्री का पता लगवाना। (३) बंगाल से बदला और कब्जा। (४) गुजरात, काठियावाड़, मालवा को राज्य में मिलाना।

दकनः—(१) दकन पर हमला लेकिन ६२० ई० में पुलकेशी द्वितीय का हर्ष को रोकना।

राज्य विस्तारः—राजपूताना और पंजाब के अलावा कुल उत्तरी भारत पर कब्जा।

धर्मः—(१) पहले शिव की पूजा बाद में बौद्ध होना। (२) दूसरे धर्मों का आदर। (३) पाँचवे साल धार्मिक जल्सा। (४) प्रयाग में दान।

ह्वेनसांगः—चीनी यात्री (६२९—६४३)

बौद्ध धर्म की धार्मिक शिक्षा पाने के लिये भारत में आना।

विवरण-धर्मः—(१) बौद्ध धर्म का पतन होना। (२) राजा का बौद्ध होना। (३) प्रयाग का दान। (६) राजा का सभा करना।

शित्ताः—(१) बड़े-बड़े मदर्से, तत्तशिला, नालन्द, विक्रमशील (२) नालन्द में दश हजार विद्यार्थियों का मुफ़्त शित्ता पाना। व्याख्यान के लिये १०० बड़े-बड़े कमरे। (३) स्त्री शित्ता।

राज्य-प्रवन्धः—(हर्ष का राज्य प्रवन्ध)...

(१) राजा का राज्य में दौरा करना और हर एक वात की खुद जाँच करना। (२) प्रजा का प्रसन्न होना। (३) देहात में जाते समय लोगों का दही, चीनी, फूल भेंट करना। (४) राज्य के कर्म-चारियों की तनख्वाह नक्द दी जाना और जागीरें भी दी जाना। (५) जुर्म कम होना। (६) कानून फोजदारी कठोर होना। (७) वेगार की प्रथा न होना (८) मामूली अपराधों के लिए अंगभंग का दण्ड। (९) किसानों की पैदावार का छठा भाग लेना। (१०) राज्य के प्रत्येक काम का पूरा-पूरा व्यौरा लिखा जाना। (११) राज्य कर्मचारियों का किसी को सताने न पाना।

रहन-सहनः—(१) मिलकर सव का शुद्ध स्वभाव से रहना। (२) धोखा न देना। (३) वात के पक्के। (४) कर्जा मय सूद आसानी से देना। (५) प्याज लहसुन का कम खाया जाना। (६)नीच कर्म वालों का शहर से वाहर रहना। तिजारत व दस्त-कारी में तरक्की।

नोट—समाज की दशा ह्वेनसांग के विवरण से हर्ष के जमाने की अच्छी तरह मालूम होती है।

८—मुसलमान और उनका भारत पर आक्रमण

इस्लाम की आबादी:—(१) मुसलमानों का इस धर्म को पुराना बतलाना। (२) लेकिन कुरान शरीफ़ के धर्म को मुहम्मद साहब का फैलाना। (३) अफ्रीका, मिस्र, टर्की, मध्य एशिया में अब तक इस धर्म का जोर होना।

मुहम्मद साहब का जीवन:—(१) ५७१ ई० में मक्का में पैदा होना। (२) पहले व्यापार करना बाद में धर्म फैलाना। (३) अरबों की बुरी हालत। (४) मुहम्मद साहब का सुधार करना। (५) अरबों का न मानना और तकलीफ पहुँचाना। (६) ६२२ ई० में मक्का से मदीना जाना। (७) वहाँ धर्म फैलाना और सफल होना। (८) ६३२ ई० में मृत्यु। इनके जाँ नशीनों का ख़लीफ़ा कहलाना। (९) बग़दाद, दमिश्क में राज्य करना। (१०) फिर स्पेन, फ्रांस, श्याम, एशियाई कोदक और अफ्रीका में इस्लाम धर्म फैलना।

मुहम्मद बिनकासम का सिंध पर हमला:—(१) सन् ७१२ ई० में ख़लीफ़ा के सिपहसालार मुहम्मद बिनकासिम का सिंध पर हमला। (२) सिंध के राजा दाहिर का मारा जाना। (३) सारे देश पर मुहम्मद बिन कासिम का कब्जा। (४) मुसलमानों का आगे बढ़ना लेकिन हिन्दुओं का रोकना। (५) मुसलमानों की नाताकती और खलीफा का मदद न देना।

रियासतों से बर्ताव:—(१) मन्दिरों का न तुड़वाना। (२) जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था उनसे अच्छा बर्ताव,

करना जजिया। (३) ब्राह्मणों की जागीरों में हस्तक्षेप न करना। (४) ब्राह्मणों को जजिये से वंचित करना। (५) मुहम्मद विन-कासिम की वापिसी और खलीफा के हुक्म से इसका कत्ल।

प्रभावः—(१) हिन्दुस्तानी सभ्यता का अरबों पर प्रभाव। (२) अरबों का भारतवासियों से तर्क, न्याय, वेदान्त, गणित, ज्योतिष, वैद्यक सीखना। (३) संस्कृत की कई किताबों का अनुवाद। (४) अरबों के जरिये इन विद्याओं का यूरोप में फैलना।

गजनी-राज्यः—(१) अरबों के हमले के २५० वर्ष बाद तक देश में अमन चैन। (२) राजपूतों का स्वतंत्र राज्य करना। (३) १० वीं सदी ईस्वी के अंत में गजनी में इस्लामी राज्य स्थापित होना। (४) गजनी के सुल्तान सुबुक्तगीन का आगे बढ़कर भटिंडा के राजा जयपाल को हराना।

महमूद गजनवीः—(१) ९९७ ई० में सुबुक्तगीन के मरने के बाद महमूद गजनवी का गजनी का बादशाह होना। (२) अपनी बहादुरी से भारतवर्ष पर कई हमले।

मुसलमानों की विजय के पूर्व राजपूत और उनके राज्य

नाम वंश	राज्य	वृतान्त
(१) तोमर-वंश	दिल्ली	(१) अनंगपाल मशहूर राजा को अजमेर के राजा वीसलदेव का

		हराना (२) दिल्ली राज्य का अजमेर में मिलाया जाना।
(२) गहरवार-वंश	कन्नौज	(१) गहरवार लोगों का प्रतिहारों से कन्नोज लेना। (२) जयचन्द का प्रसिद्ध राजा होना। (३) पृथ्वीराज से झगड़ा।
(३) चोहान-वंस	अजमेर और शाकम्भरी (साँभर)	(१) बारहवीं शताब्दी में चौहान का उन्नति करना (२) विग्रहपाल चतुर्थ का इस वंश में वीर विद्वान् होना। उसका अनेक देश जीतना। (३) पृथ्वीराज का अन्तिम प्रभावशाली राजा होना। मुहम्मद गोरी के समय उसी का दिल्ली में राज करना।
(४) चन्देल-वंश	बुन्देलखंड और हमीरपुर	(१) चन्देल राजा गँड का महमूद गजनवी से मुकावला। (२) आखिरी राजा परिमाल का होना।
(५) परमार-वंश	मालवा	(१) राजा भोज का होना। तेरहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन के हाथ से अन्त।
(६) सोलंकी	गुजरात और अन्हलवाड़ा	(१) भीमसोलंका का सोमनाथ में महमूद से मुकाबला। (२) अला-उद्दीन के समय में अन्त।

(७) सेन-वंश   बंगाल   (१) सेन खानदान वालों का दक्षिण से रोजगार की तलाश में आना और राज्य कायम करना।

राजपूत कौन है:—विद्वानों का मतभेद—

(१) राजपूतों का अपने को सूर्य-वंशी और चन्द्र-वंशी क्षत्रियों की सन्तान बतलाना। (२) शक, हूण, गुर्जर से मिलकर बनना और वाहर आकर (भारतवर्ष) राज्य स्थापित करना। ब्राह्मणों का इन्हें क्षत्रिय राजपुत्र कहना। (३) चौहान और परमारों का यह कहना कि हमारी उत्पत्ति आबू के ब्रह्मा के यज्ञ कुण्ड से हुई। सारांश यह है कि राजपूतों का मिश्रित लोगों में से होना।

राजपूतों का चरित्र

सद्गुणः—(१) लड़ाके किन्तु कमजोरों पर रहम। (२) बात के पक्के। (३) दुश्मन के साथ "अच्छा वर्ताव" यानी उदार हृदय होना। (४) स्वामिभक्त, देशभक्त। (५) औरतों का भी बहादुर होना।

अवगुणः—(१) भंग, अफीम नशेका प्रयोग। (२) आलसी होना। (३) आपस की फूट।

राजपूत-काल में हिन्दू सभ्यता:—(६५० से १२०० ई० तक)

साहित्यः—(१) धारा के राजा भोज और शाकम्भरी के राजा

बीसलदेव का विद्वान् और कवि होना । (२) भवभूति का इस काल का प्रसिद्ध नाटक रचयिता होना । (३) कल्हण की राजतरंगिणी और जयदेव का गीतगोविन्द इसी काल में बनना । (४) ज्योतिष और गणित की उन्नति । (५) पशु-चिकित्सा पर किताबें लिखी जाना । (६) रसायन-पदार्थ मालूम करना और इसकी बहुत बातें जानना ।

कला-कौशलः—(१) खूबसूरत मन्दिर । (२) एलौरा में कैलाश मन्दिर । (३) एलीफेण्टा की गुफायें । (४) आबू का जैन-मन्दिर । (५) पुरी का जगन्नाथजी का मन्दिर । (६) मथुरा में बड़े-बड़े मन्दिरों में दस्तकारी के उत्तम नमूने ।

धर्मः—(१) हिन्दू धर्म के पक्षपाती । (२) बोद्ध धर्म को नुकसान । (३) कमारिलभट्ट और शंकराचार्य की वैदिक-धर्म में कोशिश । (४) बारहवीं सदी में कई आचार्यों का होना । (५) उत्तरी भारत में हिन्दू धर्म की पताका फहराना ।

मुहम्मदगोरीः—(१) महमूद गजनवी के बाद मुहम्मदगोरी के खानदान वालों का गजनी पर अधिकार । (२) इस खानदान में मुहम्मदगोरी का होना । (३) उसके भारत पर धर्म फैलाने और राज्य लेने को हमले ।

मुल्तान पर हमलाः—११७५ ई० में मुल्तान को आसानी से जीतना ।

गुजरात परः—११७८ में भीम-सोलंकी का मुहम्मद गोरी को हराना ।

पंजाब पर:—११८७ ई० में लाहौर और सरहिन्द पर कब्जा। (२) खुसरो को कैद करना। (३) मुहम्मदगोरी का भटिंडा होते हुए आगे बढ़ना। (४) ११६१ ई० में तराइन या तलावंड़ी के मैदान में पृथ्वीराज के हाथ से हारकर वापिस जाना।

तराइन की दूसरी लड़ाई:—समय सन् ११६२ ई०।

(१) मुहम्मदगोरी का वापिस जाकर तैयारी करना और एक लाख से ज्यादा फौज लेकर पृथ्वीराज को हराना। (२) जयचन्द और पृथ्वीराज की फूट से दिल्ली-अजमेर पर अधिकार।

कन्नौज:—समय ११६३ ई०।

वृत्तान्त:—(१) जयचन्द परमाल। चन्दवार की लड़ाई में जयचन्द का मारा जाना। (३) गहरवार राजपूतों का १२०२ ई० तक मुसलमानों से लड़ते रहना।

गोरी सिपहसालारों की विजय—बिहार ११६७ ई०

(१) सिपहसालार बख्तियार के बेटे मुहम्मद का बिहार पर हमला। (२) बौद्ध मठ-मन्दिरों की बरबादी।

बंगाल—समय:—११६६ ई०

(१) मुहम्मद का बिहार पर हमला। (२) बंगाल को जीत कर मुहम्मद का सुल्तान गोरी के अधीन होना।

कालिंजर:—(१) सिपहसालार कुतुबुद्दीन का कालिंजर के किले को परमाल राजा के वजीरों से लेना।

नोट—गोरी के समय में मुलतान, पंजाब, देहली, अजमेर, कन्नौज को खुद मुहम्मद गोरी का जीतना और बिहार, बंगाल, कालिंजर, महोबा, ग्वालियर को सिपहसालारों का जीतना।

महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी के हमलों का फर्क—

महमूदः—(१) दौलत लेना। (२) इस्लाम फैलाने की इच्छा।

गोरी—(१) लूटमार करके दौलत लेना। (२) इस्लामी राज्य कायम करना।

मुसलमानों की विजय के कारणः—(१) लड़ाका सवारों का होना। (२) युद्ध विद्या में निपुण होना। (३) मुसलमानों की एकता। (४) नया धार्मिक जोश, जीतने पर देश मरने पर स्वर्ग। (५) दूसरे मुल्कों से जानकारी (अनुभव)। (६) हारने पर सुस्त न रह कर अपनी ताक़त बढ़ा कर फिर से लड़ना। (७) तोपखाने से काम लेना।

राजपूतों की हार के कारणः—(१) लड़ाका घुड़सवार और तीरन्दाजों का न होना। (२) युद्ध कुशल न होना। (३) राजपूतों की आपस की फूट और छोटे बड़े के भेद से एक होकर न लड़ना। (४) धार्मिक जोश न होना और देशभक्ति का अभाव। (५) राजपूत राजाओं का हिन्दुस्तान के बाहर का कुछ भी हाल न जानना। (६) अव्वल तो वैसे ही सुस्त होना परन्तु हारने पर भी अपनी ताकत न बढ़ाकर अपने दुश्मन का मुकाबला न

करना। (७) तोपखाने से काम न लेकर युद्ध में हाथियों को आगे रखकर लड़ना।

महमूद गजनवी के भारत पर हमले

पेशावर पर हमला:—(१) जयपाल का मुकावला करके हारना। (२) लज्जित होकर आग में गिरना। (३) महमूद का लौटना। (४) जयपाल की मृत्यु के वाद उसके वेटे अनङ्गपाल का लड़ाई जारी रखना। (५) देहली, कन्नौज, अजमेर, गवालियर, मालवा के राजाओं का अनंगपाल की मदद करना। (६) आखिर में अनंगपाल की हार। (७) महमूद का लाहौर पर कब्जा। (८) मुलतान, नगरकोट और थानेश्वर को लूटना।

कन्नौज पर हमला:—(१) १०१८ में महमूद का कन्नौज पर हमला करना। (२) राज्यपाल प्रतिहार का अधीन होना। (३) महमूद का मथुरा के मन्दिर लूटना।

राजपूतों से वदला लेने को चढ़ाई:—(१) राजपूतों का राज्यपाल को नाराज होकर कत्ल करना। (२) महमूद का यह सुन कर फिर आना। (३) राजपूतों की हार।

सोमनाथ पर हमला:—(१) १०२५ ई० में सोमनाथ पर हमला करना। (२) राजाओं का मुकाविला करना आखिर में हार। (३) महमूद का सोमनाथ के मन्दिर को लूटना।

जाटों पर हमला:—(१) सोमनाथ से जाते हुए फौज का जाटों से सताया जाना। (२) इसका वदला लेने को महमूद का फिर

आना। (२) नमक के पहाड़ के पास जाटों को सजा देकर चला जाना।

महमूद के हमलों का असर:—(१) हिन्दुस्तान से माल ले जाना। (२) कारीगरों को गज़नी ले जाना। (३) गज़नी राज्य लाहौर तक कायम होना लेकिन जल्दी ही मिटना। (४) राजपूतों की आजादी छीनना। (५) मुसलमानों का भारत का मार्ग देखना।

महमूद का चरित्र:—(१) विद्वान् और कवि। (२) विद्या की उन्नति में कोशिश। (३) पुस्तकालय, अजायबघर बनवाना। (४) फिरदौसी का किस्सा (लालची होना)।

दो मतलबों से भारत पर आक्रमण:—(१) माल, दौलत लेना। (२) इस्लाम फैलाना।

गज़नी का पतन:—(१) महमूद के बेटे पोतों का तख्त पर झगड़ा। (२) उत्तराधिकारियों की कमजोरी। (३) गोरी खानदान का अपनी ताक़त बढ़ाना और अलाउद्दीन हुसैन का गजनी को लूटकर कब्जा करना। (४) अन्तिम बादशाह खुसरो का लाहौर भाग आना।

द्वितीय-खण्ड

मुसलिम-काल

१—गुलाम—वंश

(१२०६ से १२९० तक)

स्थापना:—(१) मुहम्मद गोरी के कोई लड़का न होना। लड़का न होने पर कुतुबुद्दीन सिपहसालार को जो पहले गुलाम था हिन्दुस्तान का हाकिम बनाना। (२) १२०६ से १२९० तक दिल्ली में ऐसे बादशाहों का होना जो पहले गुलाम थे इसलिए इस वंश का गुलाम वंश कहलाना।

कुतुबुद्दीन—(१) कुतुबुद्दीन ऐबक का मुहम्मद गोरी के मरने पर बादशाह होना।

विजय:—मेरठ, दिल्ली, रणथम्भवर, बनारस, ग्वालियर, कालिंजर, महोबा पर कब्जा।

चरित्र:—(१) सुशील, धर्म पर अटल, उदार हृदय, लाखबख्श कहलाना, उशी नामक फकीर की यादगारी में कुतुब मीनार की नींव डालना जिसको १२३१ ई० में अल्तमश का पूरा करना।

मृत्यु:—१२१० ई० में चौगान खेलते हुए घोड़े से गिरकर मरना।

अल्तमश (१२११—१२३६)

(१) सरदारों का आरामशाह को गद्दी से उतार कर अल्तमश को बादशाह बनाना जो ऐबक का दामाद और गुलाम था और उसके जमाने में बदायूँ का हाकिम था।

विजय—(१) गजनी, सिंध, बंगाल को जीतना। (२) चँगेजी तूफान के बाद राजपूताना रणथम्भौर और ग्वालियर जीतना।

राज्य प्रबन्ध—बहुत मशहूर बादशाह होना। (२) बगावतों को रोकना। (३) अपने गुलामों को बड़े-बड़े ओहदे देना। (४) ४० गुलामों की सभा की मदद से राज्य का काम करना। (५) राज्य का अच्छा प्रबन्ध।

मृत्यु—१२३६ में मृत्यु होना। सुल्ताना रजिया को सुल्तान बनाने के लिए कहना।

नोट—अल्तमश के समय में मुगलों के सरदार चँगेजखाँ ने भारतवर्ष पर हमला किया परन्तु उत्तरी-पश्चिमी सरहद्दी सूबे में लूटमार करके वापिस चला गया।

फीरोज (१२३६)

(१) सरदारों का रजिया के खिलाफ अल्तमश के बेटे फीरोज को बादशाह बनाना। (२) फीरोजका नाकाबिल होना और सरदारों के हाथ से मारा जाना।

सुल्ताना-रजिया (१२३६—४० ई०)

(१) सरदारों का फीरोज को कत्ल करके रजिया को गद्दी पर बिठलाना।

चरित्र—(१) इन्तजाम काबिल। (२) बहादुर,, मर्दानी पोशाक पहनकर दर्बार में आना। (३) घोड़े पर चढ़ कर शिकार और लड़ाई में जाना। (४) मुसलमानी राज्य में इसी का मलिका होना

मुसलमान इतिहासकार का लिखना कि ये मलिका मरदों का सा दिमाग़, हिम्मत और बादशाहों की सी खूबी रखती थी।

रजिया का अन्त—(१) याकूब हबशी को घोड़ों का अफसर बनाना और उससे प्रेम का बर्ताव। (२) इस पर तुर्क सरदारों का बिगड़ना और बुरा कहना। (३) सूबों में बगावत। (४) सरदारों का रजिया को कैद करना। (५) स्वतंत्र होकर रजिया का राज्य पाने की कोशिश करना। (६) आखिर में हारकर जंगलों में भागना जहाँ हिन्दुओं के हाथ से मारा जाना।

(१२४०—४६)

(१) अल्तमश के एक बेटे और एक पोते का १२४० ई० से ४६ तक राज्य करना। (२) सरदारों का उनको गद्दी से उतारना।

नासिरुद्दीन (१२४६—६६ ई०)

(१) सरदारों का १२४६ में नासिरुद्दीन को बादशाह बनाना।

शासन-प्रबन्ध—(१) नाम का बादशाह होना। (२) सादा जीवन व्यतीत करना। (३) उसके जमाने में बलबन का राज्य कार्य करना। (४) राजपूताना और दोआबा की बग़ावत को रोक कर शान्ति स्थापित करना। (५) मेवाड़ और बुन्देलखंड में लड़ाई।

चरित्र:—(१) सादा मिजाज। (२) कुरान शरीफ़ की नक़ल करके रोजी कमाना। (३) किसी का चित्त न दुखाना।

मृत्यु:—१२४६ ई० में मृत्यु।

गयासुद्दीन बलबन (१२६६-८७ ई० तक)

(१) नासिरुद्दीन की वसीयत के मुवाफिक बलवन का बादशाह होना। (२) वीर-प्रतिभाशाली होना। (३) कई बड़े काम करना।

मुगलों से रक्षा:—(१) सिन्ध के पश्चिम का भाग मुगलों के कब्जे में होना। (२) उनका भारत पर हमला। (३) बलवन का उसकी हिफाजत के लिए सरहद पर किले बनवाना और मुगलों से राज्य को महफूज रखना।

बंगाल की बगावत:—(१) बंगाल के सूबेदार तुगरिल का बलवन को बुड्ढा समझ कर कर न देना। (२) अपने सिपहसालार की हार के बाद बलवन का खुद बंगाल जाकर तुगरिल को हराना। (३) इसके साथियों को कत्ल और फाँसी। (४) अपने बेटे बुगरा खाँ को बंगाल का सूबेदार बनाना।

राज्य-प्रबन्ध:—(१) ४० गुलामों को कत्ल करके निर्भय होना। (२) जासूस नियत करना। (३) डाकुओं और लुटेरों को कत्ल करा कर उम्दा प्रबन्ध। (४) रास्ते साफ। (५) व्यापार में आसानी। (६) बागी फौजी सरदारों को सजा। (७) न्याय में कठोरता, अपने रिश्तेदारों को अत्याचार करने पर कड़ी सजा।

बलवन का दर्बार:—(१) दर्बार का एशिया में प्रसिद्ध होना। (२) बहुत से विद्वान, अमीर और सर्दारों का मुगलों के यहाँ से भाग कर बलबन के दर्बार में रहना। (३) दर्बार के नियम कड़े। (४) हँसने हँसाने की मनाह। (५) दर्बार में अधूरी पोशाक न

पहनना। (६) दर्बार की शान शौकत। (७) लोगों का काँपना। (८) इतने पर भी वलवन का विद्वानों और कवियों का आदर। (९) अमीर खुसरो का प्रसिद्ध कवि होना।

मृत्युः—(१) ८० साल की उम्र में मुगलों के हाथ से अपने बेटे मुहम्मद के कत्ल का रंज। और इसी से बेचैनी में १२८६ ई० में मृत्यु।

कैकुबाद (१२८६—९०)

(१) वलवन के पोते कैकुवाद का वलवन के बाद बादशाह होना। (२) कैकुबाद का सुस्त शरावी, अय्याश होना जिससे राज्य में अशान्ति फैलना और १२९० ई० में जलालुद्दीन खिलजी के हाथ से इसका कत्ल। गुलाम खानदान के अन्त का यही कारण था।

खिलजी-वंश (१२९०—१३२०)

जलालुद्दीनः—कैकुबाद को कत्ल करा कर ७० साल की उम्र में बादशाह होना। (२) नर्म और सीधे वर्तावसे देश में अशान्ति (३) डाकू लुटेरों को सजा न देकर बंगाल भेजना। (४) वलवन के भतीजे मलिक छज्जू की वगावत और हार।

देवगिरि की जीतः—(१) अलाउद्दीन जलालुद्दीन के भतीजे और दामाद का देवगिरि के राजा रामचन्द्र यादव पर १२९४ ई० में हमला। (२) रामचन्द्र का धन और एलिचपुर देना (३) अलाउद्दीन का वापिसी पर जलालुद्दीन को नाव में मिलते हुए कत्ल करना और खुद बादशाह होना।

अलाउद्दीन-खिलजी (१२९६-१३१०)

(१) जलालुद्दीन को मरवाकर बादशाह बनाना। (२) देहली आकर जल्से अमीरों सरदारों को धन देना।

विजयः—उत्तरी भारतः—गुजरात पर हमलाः—(१) राजा कर्ण-बघेल की हार। (२) १२९७ ई० में गुजरात पर कब्जा।

रणथम्भवँरः—हम्मीर का मुहम्मदशाह को शरण में लेना। (२) अलाउद्दीन का नाराज होकर हम्मीर पर हमला। (३) हम्मीर की वजीरों के धोखे से हार और मारा जाना (४) १३०१ ई० में रणथम्भवंर पर अपना अधिकार।

३:—चित्तौड़:—(१) चित्तौड़ पर चढ़ाई। (२) राना रतनसिंह की हार। (३) पद्मिनी का अन्य औरतों सहित आग में जलाना। (४) अलाउद्दीन और पद्मिनी के विषय में गलत कहानी।

४:—जेसलमेरः—(१) राजपूतों की हार। (२) राजपूतों की स्त्रियों का जलकर भस्म होना।

दक्षिणी भारतः—१—देवगिरि—(१) राजा का पहले भी अधीन होना। (२) राज्य कर न देने पर मलिक काफूर का १३०८ में देवगिरी पर हमला। (३) रामचन्द्र की हार परन्तु उसके साथ अच्छा बर्ताव। (४) रामचन्द्र को राज्य वापस करना।

२:—वारँगलः—(१) देवगिरि के बाद वारंगल पर हमला। (२) प्रताप रुद्र का हार कर हाथी-घोड़े दौलत देना।

३:—मदूरा-द्वारा समुद्र और होयसल पर हमलाः—(१) १३११ में इन तीनों को लूटना और बरबाद करना।

चोल, चेर-पाण्ड्यः—चोल-चेर और पाण्ड्य को हराना।

नोटः—(इस तरह १३११ तक मलिक काफूर के जरिये कुमारी अन्तरीफ तक अलाउद्दीन का कब्जा। मलिक काफूर का धन-दौलत सहित वापिस आना। अलाउद्दीन का प्रसन्न होकर इसे अपना वजीर बनाना।

अलाउद्दीन और मुगलः—(१) इस जमाने में भी मुगलों का १२१८ में कतलग ख्वाजा के साथ हमला। (२) अलाउद्दीन का इनको मार भगाना। (३) सरहद्द पर किले बनवाना।

सुधार—१—शासन-सम्बंधीः—(१) अमीरों की दावत बन्द। (२) जासूस मुकर्रिर करना। (३) रिश्वत न लेना। (४) बेईमान अफसरों को बरखास्त करना।

२—माल-सम्बन्धीः—(१) लगान ५० फीसदी करना। (२) मवेशी और मकानों पर टैक्स लगाना। (३) जमीन की पैमाइश कराना।

३—फौज और व्यापारः—(१) मुल्क जीतने के लिए एक जबर्दस्त फौज रखना। (२) लेकिन इसके खर्चे के लिए चीजों का निरख (भाव) मुकर्रिर करना। (३) बाजार में हाकिम रखना। (४) कम तोल की अपने गुलामों द्वारा जाँच। (५) कम तोलने वालों का उतना ही माँस अपने शरीर से देना और कड़ी सजाएँ जिससे निरख (भाव) सस्ता होना और प्रजा का आराम से रहना।

मृत्युः—(१) १३१६ ई० में सख्त महनत करने से तन्दुरुस्ती खराब होकर मृत्यु होना।

अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी:—(१) अलाउद्दीन के बाद मलिक काफूर का इसके छोटे बेटे को बादशाह बनाना। लेकिन उसका जल्दी ही मरना और थोड़े दिनों बाद मलिक काफूर का भी मारा जाना।

कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह:—(१) इसके बाद कुतुबुद्दीन मुबारकशाह का बादशाह बनना। (२) उसको बदचलन अय्याश और आराम तलब देखकर एक सर्दार खुसरो का उसे मारना।

नासिरुद्दीन खुसरो:—(१) कुतुबुद्दीन मुबारकशाह को मारकर बादशाह होना। (२) नीच कौम होने की वजह से मुसलमानों का उसे पसंद न करना और १३२० ई० में दिलापपुर के हाकिम का खुसरो पर चढ़ाई करके कत्ल करना।

खिलजी साम्राज्य का पतन:—(१) अलाउद्दीन के अन्तिम समय में खिलजी साम्राज्य का पतन आरम्भ होना। क्योंकि—

(१) हिन्दुओं का अलाउद्दीन से नाराज होना। (२) अमीरों, सर्दारों का जिनको अलाउद्दीन ने दबा दिया था खिलाफ होना। (३) बुढ़ापे में अलाउद्दीन का प्रबन्ध बिगड़ना और बगावतें होना (४) सूबेदारों का स्वतन्त्र होने की कोशिश करना। (५) अलाउद्दीन की आज्ञाओं को बेअसर देखकर राजपूत राजाओं का खुदमुख्तार होना। (६) सबसे जबर्दस्त कारण उत्तराधिकारियों की कमजोरी।

तुगलक-वंश (१३२०—१४१४ तक)

गयासुद्दीनः—(१३२० ई० से २५ ई० तक)।

(१) गाजी तुगलक का गयासुद्दीन के नाम से दिल्ली का बादशाह होना। (२) बादशाह का नेक, उदार हृदय और वीर योद्धा होना। (३) अच्छा वर्ताव। (४) लगान और व्यापार के अच्छे कायदे। (५) इसके समय में इसके बेटे मुहम्मद का वारंगल और तेलंगाना जीतना। (६) बादशाह का बंगाल में जाकर बगावत दबाना। (७) वापिसी पर लकड़ी के महल से दब कर जो मुहम्मद ने बनवाया था १३२५ ई० में मरना।

मुहम्मद तुगलक (१३२५ से ५१ ई०)

गयासुद्दीन के मरने के बाद बादशाह होना।

चरित्र योग्यताः—(१) योग्य। (२) कई भाषाओं में निपुण। (३) खुशवक्ता। (४) वक्तृता देने में प्रवीण। (५) फारसी का जानने वाला। (६) उदार हृदय। (७) धर्म का पाबन्द। (८) बे समझे और बग़ैर दलील के बात को न मानने वाला।

बुराइयाँ.—(१) जिद्दी और उतावला। (२) सख्त और कठोर आज्ञाओं का पालन कराने वाला।

विजयः—गद्दी पर बैठते ही कुमायूँ, गढ़वाल, मुल्तान, लाहौर, देहली से दक्षिण में मदूरा तक। (२) सिंध से पूर्व में बंगाल तक तमाम देशों को जीतकर अपने अधिकार में करना।

खुरासान और चीन की चढ़ाई:—(१) बादशाह का विदेशियों की इज्जत करना। (२) खुरासान के सर्दारों का उसे खुरासान पर चढ़ाई करने को उत्तेजित करना। लेकिन महमूद का ऐसा न करना। (३) चीन पर हमला करने की गलत बात। (४) लेकिन कुमायूँ गढ़वाल के पास एक शक्तिशाली राजा पर हमला और उसको हराना। (५) जिसमें मुहम्मद तुगलक की फौज का पहाड़ी जमीन और सर्दी की वजह से बरबाद होना।

दोआब का कर—(१) जमींदारों का लगान देते हुए झगड़ना। (२) मुहम्मद का मालगुजारी बढ़ाना। (३) अकाल में लोगों का भागना। (४) अफसरों का उन पर जुल्म।

देहली से दौलताबाद:—(१) साम्राज्य बढ़ जाने से अच्छे प्रबन्ध के लिए देवगिरि को दौलताबाद के नाम से बजाय दिल्ली के राजधानी बनाना। (२) लोगों को दौलताबाद की रवानगी और खर्चा देना। (३) रास्ते में परेशानी। (४) नापसंद होने पर वापिसी। (५) फिजूल दिक्कत। (६) देहली की रोनक बिगड़ना।

गलतियाँ:—(१) उत्तरी भारत का प्रबन्ध मुश्किल होना। (२) मुगलों के हमले। (३) हिन्दुओं की स्वतन्त्रता की कोशिश।

ताँबे का सिक्का:—आवश्यकता:—(१) खजाना बढ़ाने की इच्छा (२) दानशील (फय्याज) होना। (३) जबर्दस्त फौज का खर्च।

इन बातों से चाँदी, सोने के सिक्कों के बजाय ताँबे का सिक्का चलाना।

(१) टकसाल का प्रबन्ध न होने से इन्तजाम में गड़बड़ी

जिससे लोगों को चाँदी सोने के सिक्कों के बजाय ताँबे के सिक्के बदलना। (२) खजाने को नुकसान।

अशान्तिः—(१) जिद्दी होने से लोगों का अप्रसन्न होना। (२) अकाल से देश में तकावी और कुवों का प्रबन्ध करते हुए भी प्रजा का परेशान होना। (३) राज्य विस्तार ज्यादा होने से शासन प्रबन्ध में गड़बड़ी और सूबों में बगावत। (४) एक बगावत दबाना दूसरी फिर पैदा होना। (५) बंगाल का स्वतंत्र होना। (५) मालवा, गुजरात, सिंध और दक्षिण में लड़ाई झगड़े। (६) बादशाह को दम लेने की फ़ुरसत न मिलना। (७) १३३६ ई० में विजयनगर राज्य का बहुत सा दक्षिण का भाग लेकर नींव पड़ना। (८) देवगिरी के हाथ में निकल जाने से १३४७ ई० में बहमनी राज्य की हसन काँगू द्वारा नींव पड़ना।

मृत्युः—परेशानी से एक बागी का पीछा करते हुए सन् १३५१ ई० में हट्ठ के पास बीमार होकर १३५१ ई० मरना।

इब्नबतूताः—अफ्रीका के राजदूत इब्नबतूता का ८ साल मुहम्मद के दर्बार में रहना। (२) राज्य प्रबन्ध का हाल लिखना। (३) बादशाह का इसे अपना काजी बनाना और अपना राजदूत बनाकर चीन को भेजना।

मुहम्मद की असफलता के कारणः—(१) मुसलमान विद्वानों के विपरीत रहना। (२) गैर मुल्कियों को बड़े ओहदे देना। (३) मिजाज में उतावला और हठी होना। (४) सख्त और कठोर आज्ञा देकर उनका शीघ्र पालन कराना। (५) राज्य का

बहुत बढ़ना। (६) राजधानी बदलना। (७) ताँबे का सिक्का चलाना। (८) मुगलों को घूँस देना।

फीरोजतुगलक (१३५१—८८ ई०)

(१) मुहम्मदतुगलक की वसीयत के मुवाफिक फीरोज का उसके बाद बादशाह होना।

चरित्रः—(१) नेक मिजाज। (२) गरीबों का मददगार। (३) धर्म और कुरानशरीफ का पूरा पाबन्द। (४) मुसलमान विद्वानों की राय से काम करना। (५) सादा जिन्दगी बसर करना। (६) फतूहात फीरोजशाही नामी किताब में जो कि इसी की बनाई थी अपना जीवन-चरित्र लिखना। (७) अमन पसन्द होना।

फीरोज की लड़ाइयांः—१—दकन—(१) अमनपसन्द होने और बहादुर होने से लड़ाई से बच कर दकन खो बैठना।

२ः—उत्तरी भारत—(१) यहाँ भी कई सूबों को खोना। (२) बंगाल—दो बार बंगाल पर चढ़ाई करना लेकिन दब कर सुलह करना। अन्त में बंगाल का खुद स्वतंत्र होना। (३) नगरकोट—नगरकोट पर चढ़ाई और जीत। (२) मुसलमानों का बहुत सा माल छीनना। (४) ठट्ठा—(१) आखिरी हमला सिंध में ठट्ठा पर करना। (२) ठट्ठा के हाकिम का हार कर खुद आधीनता मानना।

शासन-प्रबन्ध—१—प्रजा की भलाई—(१) मदर्से अस्पताल और सड़कें बनवाना। (२) अनुचित कर बन्द करना।

२ः—दीनों को सहायता—(१) लंगरखाने जारी करना। (२)

गरीब मुसलमानों की बेटियों के बिवाह करना। (३) गरीबों की शिक्षा और वे रोजगारों के रोजगार का इन्तजाम करना। (४) मुहम्मद तुगलक के जमाने के सताये हुए मनुष्यों को धन-दौलत देना और अच्छा बर्ताव करना।

३:-कृषि—(१) नहरें खुदवाना और कुंए बनवाना। (१) बाग लगवाना। (३) देहली के आस-पास १२०० बाग।

४:—इमारत—(१) नई-नई इमारतें बनवाना। (२) पुरानी इमारतों की मरम्मत।

५:—कानून:—(१) सख्त सजा और अङ्ग-भङ्ग का दण्ड बन्द करना। (२) कानून को नरम बनवाना।

६:-गुलामों की निगाह—(१) गुलामों की खबर के लिए महकमा खोलना। (२) उनको वजीफा और शिक्षा देना।

फीरोज के बाद तुगलक साम्राज्य (१३८८ १४१४ ई०

(१) फीरोज के मरने पर देहली राज्य की बुरी दशा। (२) राज्य के टुकड़े-टुकड़े (२) सूबेदारों का स्वतंत्र होकर स्वतंत्र राज्य बनाना। (४) बादशाहों का शानशौकत से रहना। (५) जगह जगह और दोआब में बगावत। (६) एक समय में ही कभी-कभी दो बादशाह होना। (७) महमूद तुगलक फीरोज के पोते का आखिरी बादशाह होना।

तुगलक खानदान का पतन:—(१) जागीरें देने से नुकसान। (२) गुलामों की तादाद से बगावत। (३) मुसलमानों में अला-उद्दीन खिलजी के समय का सा जोश न रहना। (४) फीरोज का

लड़ाका न होकर लड़ाई से अरुचि जिससे इस्लामी राज्य का कमजोर होना। (५) तैमूरलंग के हमले से तुगलक-वंश की बची-खुची शान का मिट्टी में मिलना।

तैमूर-लंगः—(१) तुर्किस्तान का बादशाह होना।

हमला और रास्ताः—(१) मध्य एशिया में धाक जमाकर इसके बाद एक जबर्दस्त फौज लेकर फारस और अफगानिस्तान को जीतते हुए भारत में आना। उस समय महमूद तुगलक का दिल्ली में बादशाह होना।

लूटमार—(१) लूट खसौट के मतलब से लाखों आदमियों का खून करना। (२) शहरों और गाँवों को उजाड़ना। (३) साथ में लोगों को कैदी बनाते हुए चलना।

देहली—(१) देहली पहुँचकर १५ साल से ज्यादा उम्र वाले कैदियों को (१ लाख) कत्ल। महमूद तुगलक का मुकावला करना, लेकिन फौज की कमजोरी से फौज का भागना। (३) देहली में घुस कर तींन रोज तक लूट मार और कत्ल।

वापसी—(१) देहली से मेरठ और हरिद्वार की तरफ वढ़कर वहाँ से काँगड़ा और जम्मू होते हुए अपने देश को लौटना।

प्रभावः—(१) देहली साम्राज्य की बरबादी। (२) देश का धन बाहर जाना। (३) अशान्ति फैलना। (४) सूबों में खुद मुख्तियारी।

४—१५ वीं सदी में भारत के स्वाधीन राज्य

उत्तरी भारत-बंगालः—(१) फीरोज तुगलक के समय में बंगाल की आजादी। (२) १४६३ ई० से १५१३ ई० तक हुसैन-शाह और १५१६ ई० से १५३२ ई० तक नसरतशाह का प्रसिद्ध बादशाह होना। (३) हुसैनशाह का देहली से लड़ना और आपस में सुलह। (४) हिन्दू धर्म और भारत की उन्नति।

२ः—जोनपुरः—(१) फीरोज तुगलक का अपने भाई मुहम्मद तुगलक की यादगार में बसाना। (२) फीरोज के गुलाम का इसके बाद यहाँ स्वतंत्र राज्य कायम करना। (३) इब्राहीम और हुसैनशाह का प्रसिद्ध बादशाह होना। (४) खूबसूरत सुन्दर इमारतें बनवाना। (५) इस्लामी शिक्षा का केन्द्र। (६) अन्तिम लोदी बादशाह का हुसैनशाह को हरा कर देहली राज्य में जोनपुर को मिलाना।

३ः—मालवाः—(१) १४०१ ई० में यहाँ दिलावरखाँ गोरी का स्वतंत्र राज्य कायम करना। (२) मुहम्मद खिलजी का १४३६ ई० से १४६९ ई० तक प्रसिद्ध बादशाह होना (३) इसका चित्तौड़ के राजा से लड़ना। (४) दिल्ली, जोनपुर, गुजरात, दकन के राजाओं से मुकाबला।

४ः—गुजरातः—(१) १४०१ ई० में जफरखाँ सूबेदार का स्वतंत्र होना। (२) अहमदशाह १४११ से १४४३ ई० तक और महमूद बीगड़ का १४५८ ई० से १५११ ई० तक प्रसिद्ध बादशाह होना। (३) सुल्तान की राजपूतों से लड़ाई लड़ना। (४) बहादुर-

शाह के समय में मालवा, चित्तौड़ का गुजरात में शामिल होना। (५) १५७२ ई० में इसे अकबर का जीतना।

५:—राजपूताना:—(१) राजपूतों का राज्य बनाना। (२) चित्तौड़ का प्रसिद्ध होना। (३) अलाउद्दीन के बाद राजा हम्मीर का फिर ताकत बढ़ाना। (४) राना कुम्भा और राना साँगा का प्रसिद्ध होना।

दकन—खानदेश:—(१) फारूकी खानदान के मुसलमानों के खानदान वालों का स्वतंत्र राज्य बनाना। (२) यहाँ असीरगढ़ का प्रसिद्ध किला होना (३) १६०१ ई० में अकबर का इसे जीतना।

बहमनी-राज्यस्थापना:—(१) फारिस के बादशाह बहमनशाह के वंश से हसन काँगू का १३४७ ई० में स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना। (२) बहमन से बहमनी कहलाना। (३) हसन काँगू के सम्बन्ध में गलत बात (कि वह पहले ज्योतिषी के यहाँ नौकर था)। (४) सही बात—हसन अफगान का मुहम्मद तुगलक की फौज में नौकर होना और उन्नति करके ऊँचे ओहदे पर पहुँचना।

शासन-प्रबन्ध:—(१) देशी और विदेशी सरदारों का गिरोह। (२) बादशाह होकर विजयनगर से लड़ना। (३) हुमायूँ बादशाह के मंत्री ख्वाजा महमूद गामा का अपनी उदारता, सादगी, बुद्धिमानी और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध होना। (४) राज्य की दशा सँभालना। (५) बाद में अस्पताल बनवाना। (६) नये महकमे। (७) बीदर में मदरसा और किताबें जमा कराने का प्रबन्ध। (८) मृत्यु—गामा के दुश्मनों का उसे मुहम्मदशाह

सोयम को बहका कर १४८१ ई० में इल्जाम के साथ कत्ल करवाना। (६) इस खानदान का १८० वर्ष राज्य करना।

पतनः—(१) देशी और विदेशी सर्दारों के झगड़े से कमजोरी। (२) महमूद गामा के बाद बगावत। (३) न तो गामा जैसा कोई वीर न गामा जैसा प्रसिद्ध बादशाह होना। इस तरह बहमनी राज्य का पाँच राज्यों में बदलना।

(१) अहमदनगर में निजामशाही। (२) गोलकुण्डा में कुतुबशाही। (३) बरार में इमादशाही। (४) बीदर में बरीदशाही और (५) बीजापुर में आदिलशाही।

विजयनगर राज्यस्थापनाः—समय १३३६ ई०।

(१) हरीहर और बुक्कार दो भाइयों का राज्य स्थापित करना।

राज्य-विस्तारः—कृष्णा से कुमारी अन्तरीप तक, हौयसल पाण्डय का बहुत सा भाग।

प्रबन्ध व उन्नतिः—(१) अच्छा प्रबन्ध। (२) प्रजा को आराम। (३) टैक्स ज्यादा न होना। (४) धार्मिक स्वतन्त्रता लेकिन वैष्णव धर्म की उन्नति।

अब्दुलरज्जाकः—(१) फ़ारिस के दूत का विजयनगर का हाल लिखना कि—(१) शहर का कई मील के घेरे में होना। (२) खूबसूरत इमारतें। (३) बाजार में रोनक। (४) पक्का परकोटा। (५) व्यापार की उन्नति। (६) धार्मिक स्वतन्त्रता।

प्रसिद्ध राजाः—(१) राजा कृष्णदेव राय (१५०६–२६ तक) होना। (२) इसका राज्य बढ़ाना। (३) फिर सदाशिवराय का

राजा होना। (४) इसके समय में इसके मन्त्री रामराजा का राज्य का काम करना। (५) उसके अनुचित बर्ताव से मुसलमानों का अप्रसन्न होकर अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बरार और बीदर का मिल कर विजयनगर को तालीकोट की लड़ाई में सन् १५६५ ई० में हराना। (६) रामराजा की गिरफ्तारी और कत्ल।

तालीकोट की लड़ाई:—समय सन् १५६५ ई०

पक्षः—एक ओर विजयनगर दूसरी ओर अहमदनगर, गोलकुण्डा, बीदर, बरार और बीजापुर।

कारणः—(१) मुसलमानी रियासतों की विजयनगर से दुश्मनी। (२) रामराजा के अनुचित बर्ताव से मुसलमानों का अप्रसन्न होना।

घटनाः—(१) लड़ाई होना। (२) ऐसा कहना कि १ लाख हिन्दुओं का कत्ल। (३) मुसलमानों का विजयनगर लूटना और मठ-मन्दिर तोड़ना। (४) प्रजा को तकलीफ देना। (५) रामराजा को कत्ल करना।

फलः—(१) विजयनगर की बरबादी। (२) हिन्दुओं की राजनैतिक शक्ति का नाश। (३) विजयनगर के अधीन राज्यों का स्वतंत्र होना। (४) मुसलमानों का इसे जीत कर स्वतंत्र, आराम तलब और काहिल होना। (५) जिससे देहली के बादशाहों का इसे जीतना।

५—सैयद-वंश (१४१४-५१)

स्थापना:—(१) तूमैर का अपनी वापिसी पर मुल्तान के हाकिम खिजरखाँ को अपना नायब बनाना। (२) महमूद तुगलक के बाद खिजरखाँ का देहली पर अधिकार और सैयद वंश की नींव डालना।

वृतान्त:—(१) किसी बादशाह का प्रसिद्ध न होना। (२) दोआबा में घरेलू लड़ाइयाँ। (३) राजपूतों का बगावत करना। (४) आखिरी बादशाह आलमगीर का नालायकी से बदायूँ रहना। जिससे एक सर्दार बहलोल का देहली पर अधिकार करना।

६—लोदीवंश-(१४५१-१४२६ तक)

राज्य-स्थापना:—(१) सैयद वंश के अन्तिम बादशाह आलम-शाह की कमजोरी से बहलोल लोदी का बादशाह होना।

बहलोल-लोदी:—(१४५१ ई० से ८९ ई० तक)। (१) बादशाह होते ही अफगानों को बुलाकर बड़े-बड़े ओहदे देना। (२) सादा आदमी होना बादशाहों की सी शान-शौकत न दिखाना। (३) जौनपुर के सर्दार हुसैनशाह सर्की को हरा कर जौनपुर देहली में मिलना।

सिकन्दर लोदी:—(१४८९-१५१७ ई० तक)। (१) बाप के पर बादशाह होना। (२) रोज़दार और पक्का मुसलमान होना। (३) कभी-कभी हिन्दुओं से बुरा वर्ताव करना।

प्रबन्ध:—(१) अफगान सरदारों को दबाकर रखना। (२)

हुसैनशाह सर्की को हराकर बिहार और तिरहुत को राज्य में मिलाना। (३) राजपूत राजाओं की निगरानी के लिए आगरा राजधानी बनना। (४) सूबेदारों का हिसाब खुद देखना। (५) अनाज सस्ता होना। (६) खेती की उन्नति का प्रबन्ध। (७) हर साल गरीबों की फहरिस्त बनाकर ६ माह का खाना देना। (८) देश में शान्ति और चोर डाकुओं से बेखतर होना।

इब्राहीम लोदी (१५१७—२६ ई०)

(१) बाप के बाद बादशाह होना (२) घमंडी और दिमागदार होना। (३) अफगानों के साथ सख्त बर्ताव उनको हाथ जोड़कर दर्बार में खड़े रहने का हुक्म। (४) अफगानों का बागी होना। (५) दौलतखाँ लोदी का बाबर को बुलाना और १५२६ ई० में बजरिये बाबर लोदी वंश का अन्त।

१५ वीं शताब्दी के पेशवा:—

नाम	जन्म स्थान	वृतान्त
(१) रामानुज	दक्षिण	(१) भक्ति पर जोर। (२) जातिपाँति का भेद-भाव व्यर्थ। (३) विष्णु की पूजा का प्रचार।
(२) रामानन्द		(१) राम-सीता की भक्ति का उपदेश। (२) जाति-पाँति का मोक्ष में बाधक न होना। (३) नीची जाति वालों को शिष्य बनाना।

		(४) खास किताब नाभाजी का भक्तमाल जिसमें वैष्णव महात्माओं के चरित्र का अनुकरण।
कबीर		(१) रामानन्द के चेले। (२) स्वभाव से ही धर्मात्मा और ईश्वर-भक्त। (३) वैदिक पर जोर। (४) मूर्तिपूजा को बुरा कहना। (५) हिन्दू-मुसलमानों को उपदेश। (६) बीजक बनाना।
गुरु नानक	तालबन्दी	(१) कबीर के चेले। (२) सिक्खों के गुरु। (३) जाति-पाँति फिजूल बतलाना। (४) किताब ग्रन्थ साहब में शिक्षा।
बल्लभ स्वामी	तेलंगाना	(१) ब्राह्मण होना। (२) कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानना। (३) गृहस्थ में भी मोक्ष मिलना। (४) जाँति-पाति व्यर्थ।
चैतन्य देव	नदिया	(१) २५ साल की उम्र में संसार त्यागना। (२) कृष्ण-भक्ति का उपदेश। (३) जाति-पाँति व्यर्थ। (४) उपदेशों से वैष्णव-धर्म में नई शक्ति।

पेशवाओं की शिक्षा का असरः—(१) हिन्दू-मुसलमानों में एकता। (२) दोनों का ईश्वर को एक समझना। (३) हिन्दुओं का मुसलमान पीर और मुसलमानों का हिन्दू देवताओं को मानना। (४) सभ्यता पर एक दूसरे का असर।

साहित्य की उन्नतिः—(१) अमीर खुसरो का फारसी शाई होना। (२) संस्कृत की उन्नति रुकने पर भी कई किताबें बनना। (३) बंगाल में जयदेव का गीतगोबिन्द। (४) कबीर-नानक का विद्यापति का हिन्दी-साहित्य का भंडार बढ़ाना।

इमारतः—(१) कुतुबमीनार तुगलकाबाद का मकबरा, गुयासुद्दीन तुगलक का मकबरा, अलाउद्दीन खिलजी का फाटक आदि मजबूत इमारतें होना। (२) बंगाल, जौनपुर के बादशाहों के बनवाये महल, मंदिर जैसे अटाला मस्जिद, लाल दर्वाजा मस्जिद। (३) दकन में बहमनी सुल्तान और विजयनगर के राजाओं का महल, किले, शहर बसाना।

७ मुगल-बंश (बाबर)

बाबर का प्रारम्भिक जीवनः—(१) उमर शेख मिर्जा का लड़का (२) फर्गाना का मालिक। (३) ११ साल में यतीम। (४) चचा का राज्य छीनने की कोशिश। (५) बाबर का समरकन्द जीतने की कोशिश और उसे तीन बार जीतना लेकिन हाथ से जाना और फर्गना का भी दुश्मनों को छीनना। (६) बाबर का दक्षिण

की तरफ बढ़कर १५०४ में काबुल जीतना इसी पर सन्तोष न रखकर दौलतखाँ और साँगा के बुलाने से भारत जीतना।

पानीपत की पहली लड़ाई

समयः—सन् १५२६ ई०

पक्षः—इब्राहीम लोदी और बाबर।

कारणः—इब्राहीम के कठोर शासन से सरदारों और प्रजा में अशान्ति। दौलतखाँ और साँगा का बाबर को बुलाना।

घटनाः—२१ अप्रैल सन् १५२६ ई० में बाबर का पानीपत के स्थान पर १२००० फौज से इब्राहीम की १ लाख फौज को हरा कर दिल्ली और आगरे पर अधिकार।

फलः—(१) बाबर की जीत। (२) इब्राहीम की हार। (३) भारत में मुगल साम्राज्य की नींव।

इब्राहीम की हार के कारणः—(१) अफगानों का परस्पर द्वेष। (२) फौजी सरदारों का इब्राहीम से अप्रसन्न होना। (३) राजपूतों से मदद न मिलना। (४) बाबर, की युद्ध-कुशलता और तोपखाने से काम लेना।

राना सांगाः—(१) मेवाड़ का प्रसिद्ध राजा होना। (२) सैकड़ों लड़ाइयां लड़ा हुआ (३) एक हाथ, एक पाँव और एक आँख से रहित। (४) शरीर पर अस्सी घावों के चिह्न (५) दिल्ली, मालवा-गुजरात का इससे डरना। (६) फौज में ५०० हाथी। (७) ८० हजार सवार और अनगिनतिन प्यादे। (८) बाबर को बुलाकर गल्ती से आगाह होना।

खानवा-युद्ध-समयः—२१ अप्रैल सन् १५२७ ई०।

पक्षः—राना साँगा मय राजपूत राजा और बाबर।

कारणः—राना साँगा को बाबर को यहीं जमा हुआ देखकर लड़ने को तैयार होना।

घटनाः—साँगा का १०००० फौज से बयाने के पास खानवा में मुगलों से मुकाबला। (२) मुगलों का फोज देखकर और ज्योतिषी के बयान से हताश होना। (३) बाबर का लेक्चर (४) १५ मार्च की लड़ाई होना। (५) राजपूतों का मुगलों पर टूटना। (६) बाबर के तोपखाने से राजपूतों की हार। (७) साँगा का जख्मी होना।

परिणामः—(१) राजपूतों की इज्जत जाना। (२) मालवा-गुजरात के सुलतानों को आराम (३) मुगल साम्राज्य का इतिहास मजबूत होना। (४) आगरा अवध, चन्देरी को जीतने में आसानी।

बँगाल और बिहार की जीतः—(१) चन्देरी की विजय के बाद अफगानों को दबाने के लिए सन् १५२६ ई० घाघरा नदी के किनारे पहुँचकर अफगानों को हराना। (२) बिहार का सूबा हाथ आना और बंगाल के बादशाह (सूबेदार) का संधि करना।

बाबर की मृत्युः—(१) कठिन परिश्रम करने और अफयून आदि खाने से स्वास्थ्य बिगड़ना और हुमायूँ की बीमारी के दुख से १६ दिसम्बर सन् १५३० ई० में आगरे में स्वर्गवास पाना। (२) काबुल में दाह-क्रिया होना।

बाबर का चरित्रः—(१) बहादुर, विद्वान, दयावान, शुद्ध हृदय होना। (२) किसी को बिना बात न सताना। (३) भागने वाले को न मारना। (४) लड़ाई में आनन्द लेना इसलिए इसको तुर्की सरदारों का बाबर 'बब्बर' (शेर) कहना। (५) शक्तिवान् तैराक, घुड़सवार, सीधा-साधा मुसलमान, पक्षपात रहित, कवि-लेखक, प्राकृतिक दृश्यों का शोकीन। (६) आगरे में आराम बाग लगवाना। (७) अपना हाल तुजक बाबरी में लिखना।

हुमायूं

बादशाह होनाः—(१) बाबर की मृत्यु के बाद देहली में हुमायूं का बादशाह होना। (२) अपने बाप बाबर की आज्ञानुसार कामरों हिन्दाल और अस्करी (भाइयों) को राज्य का कुछ भाग देकर सूबेदार बनाना।

हुमायूँ की कठिनाइयाँः—(१) राजपूतों का फिर अपनी जड़ जमाने की कोशिश करना। (२) गुजरात के बादशाह बहादुर-शाह का दिल्ली पर अधिकार करने की कोशिश और लड़ाई का सामान इकट्ठा करना। (३) बहादुरशाह का चित्तौड़ पर चढ़ाई करना और हुमायूँ को धोखा देकर अपने ऊपर हमला करने से रोकना। (४) हुमायूँ का मालवा की ओर बढ़ना। बाद में बहादुरशाह का चित्तौड़ की वापिसी पर पीछा किया जाना। (५) बहादुरशाह का ड्यू भागना और हुमायूँ का मालवा, गुजरात पर अधिकार करना। (६) शेरखाँ की सुनकर हुमायूँ

का बंगाल की ओर बढ़ना पीछे से बहादुरशाह का मालवा, गुजरात फिर वापिस लेना। (७) शेरखाँ से लड़ाई।

चौंसा की लड़ाई:—(१) शेरखाँ का हुमायूँ से मुकाबला करके रोहितास के किले में आना। (२) हुमायूँ का आकर चिनार के किले और गौंड पर अधिकार करना। (३) इसी समय वर्षा से फौज में परेशानी। (४) हुमायूँ का हिन्दाल को नई फौज लेने आगरे भेजना। (५) वहाँ इसका स्वयं बादशाह होना। (६) शेरखाँ का वह सब बातें देखकर रोहतास के किले से निकल कर चिनार के किले को जीतकर जोनपुर को घेरना। (७) हुमायूँ का इस खबर से घबराकर बंगाल से लौटना लेकिन शेरशाह का मार्ग में बक्सर के लगभग चौंसा के मैदान में (१५३९ ई०) हुमायूँ को हराना। (८) हुमायूँ का मय घोड़े नदी में पड़कर निजाम भिश्ती से बचाया जाना। इसके बाद तीनों भाइयों में मेल और उनका शेरशाह को दबाने की तरकीब सोचना।

कन्नौज में बिलग्राम की लड़ाई:—(१) सन् १५४६ ई० में हुमायूँ का फौज लेकर बंगाल की तरफ जाना। (२) इस बार कामराँ का धोखा देकर लाहौर जाना और एक अफसर सुल्तान मिर्जा का भी मिलना। (३) हुमायूँ का कन्नौज के पास बिलग्राम नामक स्थान पर शेरखाँ से हारकर और आगरे से सामन लेकर लाहौर जाना। (५) शेरखाँ का देहली और आगरे पर अधिकार।

हुमायूँ का फारस जाना:—(१) हुमायूँ का सिन्ध के रेगिस्तान में बहुत सी कठिनाइयाँ उठाकर मारवाड़ के राजा मालदेव से

निराश होकर अमरकोट पहुँचना। (२) वहाँ २३ नवम्बर सन् १५४२ ई० में अकबर का पैदा होना। (३) हुमायूँ का अमरकोट के राजा की मदद से सिन्ध में उसने व्यर्थ कोशिश करना और बाद को कन्दहार में कामराँन से हताश होकर फारस जाना। बादशाह के यहाँ ११ साल तक रहना।

सूर-बंश (१५४० ई० से १५५५ ई० तक)

शेरशाह-सूरी:—सन् १५४० ई० से १५४५ ई० तक शेरशाह शेरखाँ का शेरशाह के नाम से हुमायूँ के बाद देहली का बादशाह होना।

बचपन:—इसका बचपन और उन्नति:—(१) सहसराम के जागीरदार हसन का लड़का। (२) बचपन का नाम फरीद। (३) सौतेली माता की कठोरता से जौनपुर जाकर अरबी, फारसी सीखना। (४) हसन का बाद में मेल करके फरीद को जागीर का प्रबन्ध देना। (५) इसका अच्छा प्रबन्ध करना। (६) फिर अनबन होने से जौनपुर जाकर नौकरी करके शेरखाँ की उपाधि लेना। (७) सन् १५२८ ई० में बाबर से मिलकर उसकी नजरों से खटकना। इस पर शेरखाँ का बिहार आकर नौकरी करना। और धीरे धीरे बिहार, बंगाल पर अधिकार करके देहली का बादशाह होना।

विजय:—(१) पंजाब:—खोखरों को जेर करना और रोहतास का किला बनवाना। (२) बंगाल:—बंगाल के सूबेदारों की बगावत परन्तु शेरखाँ का उसको दबाना। (३) मालवा जीतना।

(४) राजपूताना—मारवाड़ के राजा मालदेव और रामसीन का किला जीतना। जोधपुर को घेरना। अन्त में चित्तौड़ पर चढ़ाई। कालिञ्जर का किला जीतते हुए बारूद में आग लग जाने से मारा जाना।

नोटः—राजपूतों के जबर्दस्त हमले से शेरशाह का कहना कि मैंने मुट्ठी भर बाजरे के लिए अपना राज्य खोदिया होता।

राज्य-प्रबन्ध—१—स्वयं की देख भालः—(१) प्रत्येक काम स्वयं देखना। (२) अफसरों से कार्य लेना। (३) प्रजा की भलाई का ध्यान रखना।

२:—कारीगरी की उन्नतिः—(१) राज्य की ओर से मदद। (२) फौज से खेती को नुकसान पहुँचने पर खजाने से सब घाटा पूरा करना।

३:—किसान और कृषिः—(१) किसानों पर जुल्म न करने की ताकीद। (२) उनसे पैदावार का $\frac{1}{3}$ भाग लेना। (३) जमीन की नाप करना।

४:—न्यायः—(१) अमीर और गरीब सब बराबर। (२) चोरी, लूट, कत्ल को रोकने के लिए गाँव में मुखिया नियत करना। (३) और सब जिम्मेवारी व नुकसानों का मुखिया के जुम्मे होना।

शहरः—शहरों में कोतवालों की भी ऐसी ही जुम्मेवारी होना।

व्यापार व सड़कें:—(१) व्यापार की उन्नति के लिए सड़कें बनवाना। (२) उनके किनारे वृक्ष लगवाना। (३) सरायें बनवाना।

(४) मुसाफिरों को खाने पीने का प्रबन्ध। (५) मरे हुए मुसाफ़िरों का माल उसके रिश्तेदारों को तलाश करके देना।

फ़ौजः—(१) सिपाहियों के साथ सहानुभूति उनको घोड़े और फौज देना। (२) समय पर वेतन देना। (३) घोड़ों को दागने और सिपाहियों के हु लिये दर्ज कराने की प्रथा।

चरित्रः—(१) एक योग्य शासक धर्म और नियमों का पालक। (२) तीन बजे उठकर नमाज से निवृत्त होकर राज्य कार्य करना। (३) दोपहर को भोजन। (४) फिर थोड़ी देर आराम करके बाद नमाज़ काम में लग्न हो जाना। (५) अपने धर्म का पावन्द होते हुए भी दूसरे धर्मों का पावन्द होना। (६) हिन्दू स्कूलों की मदद। (७) गरीब और भूखों की मदद करना। (८) प्रत्येक वर्ष एक लाख ८० हजार अशर्फियाँ दान देना। (९) विद्यार्थियों को वज़ीफे देना। (१०) सब मदर्से और मस्जिदों को मदद। (११) विद्वानों का आदर।

सलीमशाह सूरः—सन् १५४५ से १५५४ ई० तक। (१) शेरशाह के बाद सलीमशाहसूर का बादशाह होना। इसका रोबदार होना। (३) अमीरों को दबाकर स्वयं प्रबन्ध करना। (४) पंजाब में फौज की गड़बड़ी मिटा कर शान्ति स्थापित करना।

फीरोजः—(१) सलीमशाह के १२ वर्ष के बेटे फीरोज का अपने बाप के बाद बादशाह होकर तीन दिन के बाद ही अपने मामा आदिलशाह के हाथ से कत्ल होना।

आदिलशाहः—(१) मूर्ख, दुराचारी मनुष्य होना। (२) राज्य

का काम हेमू को देना। (३) तीन अफगान शाहजादों का तख्त के लिए झगड़ना। (४) यह देखकर हुमायूं का फारिस के बादशाह की मदद से १५ हजार सवार लेकर लाहौर जाते हुए सन् १५५५ ई० में बैरमखाँ की मदद से सर हिन्द तक के मैदान में सिकन्दर सूर को हिमालय की तरफ भगाकर स्वयं देहली का बादशाह होना।

सूरवंश का पतन:—(१) अन्तिम उत्तराधिकारियों का कमजोर होना। (२) आदिलशाह का राज्य प्रबन्ध हेमू को देना। (३) तीन शाहजादों को आपस के झगड़े से हुमायूं का इस वंश का अन्त करना।

हुमायूं का चरित्र:—(१) उदार हृदय, दयावान, सुशिक्षित होना। (२) किन्तु बाबर को भांति वीर और दृढ़ विचार वाला न होना। (३) एक कार्य में दूसरा कार्य छेड़कर अपनी पूरी शक्ति को काम में न लाना। (४) बुढ़ापे में अफयून खाना इससे दिमाग की कमजोरी। (५) ऐश पसन्दी और सुस्ती आना। (६) सन् १५५६ ई० में कुतुबखाने की सीढ़ियों से फिसल कर मरना।

अकबर (१५५६ ई० से १६०५ ई० तक)

बादशाह होना:—(१) हुमायूँ के मरने पर १३ वर्ष की उम्र में अकबर का बादशाह होना।

सन् १५५६ ई० भारत की दशा:—

१—उत्तरी देश:—(१) काबुल, कश्मीर, सिन्ध, मुल्तान सब का देहली से स्वतन्त्र होना।

२-पूर्वी देशः—बंगाल और विहार के सूर अफगानों का देहली में राज्य करने की कोशिश करना।

३-राजपूतानाः—(१) राजपूतों का अपनी शक्ति बढ़ाना। (२) मेवाड़, जेसलमेर, बूँदी, जोधपुर स्वतन्त्र रियासतें होना।

४-दकनः—मालवा, गुजरात, खानदेश, बरार, वीदर, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा का देहली से अलग होना।

५-विजयनगरः—(१) तुंगभद्रा से राजकुमारी तक विजयनगर का अधिकार होना।

अकबर के बागी—सन् १५५६ ई०।

पानीपत की दूसरी लड़ाई समय—सन् १५५६ ई०।

पक्षः—हेमू और अकबर।

कारणः—(१) आदिलशाह के समय में हेमू का अपनी शक्ति बढ़ाना। (२) हुमायूँ की मृत्यु के बाद अकबर को बच्चा समझ कर हेमू का फौज जमा करके विक्रमादित्य की उपाधि धारण करके और अकबर से मुकाबला के लिए तैयार होना।

वृत्तान्तः—(१) वैरामखाँ और हेमू का अकबर से लड़ना। (२) मुगल तोपखाने से हेमू की हार और घायल होने से गिरफ्तार करके अकबर के समक्ष लाना। (३) बाद में वैरमखाँ का इसको कत्ल करना।

२-आदिलशाहः—(१) आदिलशाह का बंगाल के सुल्तान से लड़ते हुए मारा जाना।

१–सिकन्दरशाहः—(१) मुगल फौज का सिकन्दरशाह को घेर कर हरा देना। इस प्रकार अपने प्रारम्भिक जीवन के बागियों से अकबर का छुटकारा पाना।

बैरमखाँ:—(१) अकबर का वफादार और शिक्षक। (२) १७ साल की उम्र में अकबर का बैरमखाँ के रंग को देखकर स्वयं शासन करने की इच्छा। (३) दोनों में लड़ाई। (४) बैरमखाँ की हार। (५) अकबर का उसे क्षमा करना। (६) अन्त में १५६१ ई० में मक्का जाते समय अफगान के हाथ से गुजरात में मारा जाना। (७) अकबर का उसके वीर बच्चे को पालना और उसके लड़के अब्दुर्रहीम खानखाना को शिक्षा दिलवाना।

अकबर की पालिसी:—(१) अकबर का सारे भारत का बादशाह होने के लिए हिन्दुओं को अपनी ओर मिलाने की सोचना। (२) राजपूत जैसी लड़ाका कौम से उम्मेद करके बागी मुसलमानों को दबाये जाने का विचार। (३) हिन्दुओं जैसा रहन सहन और उन जैसे विचारों को धारण करके कुल भारत को अपने आधीन कर लेना।

अकबर विजयः—

१–राजपूतानाः—(१) आमेर के राजा भारमल की लड़की से शादी करना। (२) बीकानेर, जेसलमेर का भी जयपुर की देखा देखी सुलह करना। (३) चित्तौड़ पर चढ़ाई–उदयसिंह का जयमल को किला सौंप कर पहाड़ों में भाग जाना। (४)

जयमल को अकबर का गोली से मार देना। (५) यह देख राजपूतों का जौहर करना। (६) राजपूतों की हार। (७) सन् १५६१ ई० में उदयसिंह की मृत्यु। (८) राणा प्रताप का राजा होना। (९) सन् १५७६ ई० में हल्दीघाटी की लड़ाई में राना की हार। (१०) राना की प्रतिज्ञाएँ। (११) अन्त में हारे हुए किले वापिस लेना। (१२) रणथम्भर को जीतना। (१३) कालिञ्जर जीतना।

२-गुजरातः—(१५७३ ई०)—(१) वादशाह का स्वयं गुजरात जाकर उसे जीतना।

३-विहार और बंगालः—(सन् १५७५ ई०)-(१) इनका देहली राज्य में मिलाना। (२) अफगानों का उड़ीसा जाकर लड़ाई जारी रखना। (३) मानसिंह का इनको हरा कर देहली राज्यमें मिलाना।

४-उत्तरी-पश्चिमी देशः—(१) १५८५ ई० में अपने भाई मिर्जा हकीम की मृत्यु के बाद अफगानिस्तान को देहली राज्य में मिलाना। (२) सन् १५७६ ई० से १५९५ ई० तक। (३) काश्मीर। (४) कन्धार। (५) सिन्ध और विलोचिस्तान आदि जीतने के लिए १६ वर्ष लाहौर में राजधानी बनाना।

(५) दकनः—

१-अहमदनगरः—(१) सुल्ताना चाँदबीबी से १६०० ई० में अहमदनगर का कुछ भाग लेना। (२) चाँदबी का मारा जाना।

२—खानदेशः—(१) सन् १६०० ई० में असीरगढ़ का प्रसिद्ध किला जीतना। (२) इस समय में सलीम का बगावत करना। (३) अकबर का वापिस होना।

अकबर की मृत्युः—(१) अकबर के मित्र अबुलफजल, टोडरमल और बीरबल के मरने पर बादशाह का उदास रहकर सन् १६०५ ई० में संग्रहिणी-बीमारी से मृत्यु होना।

अकबर का चरित्रः—(१) हृष्टपुष्ट, बहादुर बुद्धिमान। (२) मदारी और जानवरों की लड़ाई का शोकीन। (३) एकसा व्यवहार करने वाला। (४) प्रत्येक धर्म की किताबें सुनने वाला। (५) गाने सुनने का शौकीन और पक्षपात से रहित होना।

धर्मः—(१) प्रत्येक धर्म से परिचित होना। (२) शेर मुबारिक और उसके बेटे अबुलफजल की संगत से सूफी होना। (३) हिन्दू धर्म की किताबों का फारसी में अनुवाद करना ईश्वर को एक मानना। (४) मंदिर मस्जिद और गिर्जा में उसी का होना बतलाना। (५) अकबर का कहना कि साफ दिल का आदमी प्रत्येक जगह ईश्वर को पा सकता है। (६) सीकरी में इबादत खाना बनवाना। (७) प्रत्येक बृहस्पतिवार को प्रत्येक धर्म के विद्वानों की बहस सुना। (८) सन् १५८२ ई० दीन इलाही धर्म जारी करके उसमें प्रत्येक धर्म की अच्छी बातें जमा करना। (९) अकबर का मुख्य सिद्धान्त कि ईश्वर एक है अन्ध विश्वास किसी का न करो।

हिन्दुओं से बर्ताव:—(१) मेल-जोल। (२) जजिया माफ करना (३) हिन्दू भेद न मानना। (४) त्यौहार मानना। (५) हिन्दुओं को बड़े-बड़े ओहदे देकर उन पर विश्वास करना। (६) हिन्दुओं को स्वतंत्रता।

सामाजिक-सुधार:—(१) गुलामी बन्द करना। (२) शराब में कमी। (३) बचपन की शादी का विरोध। (४) लड़का और लड़की की रजामन्दी। (५) पुनर्विवाह। (६) सती प्रथा दूर करना।

१:—राज्य प्रबन्ध:—(१) १८ सूबे। जिसका मालिक सूबेदार जिसके मातहत एक दीवान लगान वसूल करने को। (२) फौजदार और आमिल। (३) अलग-अलग काम करने वाले। (४) वाकअनवीश बादशाह को रिपोर्ट लिखने वाले।

२:—मनसब:—(१) जागीर तोड़कर १० से १० हजार तक के मनसब देना। (२) ७००० से १०००० के मनसबशाही खानदान वालों को। (३) मनसबदारों को नक़द तनख्वाहें।

३:—महकमे:—माली और फौजी महकमों का एक के अधीन होना। (२) टोडरमलका माली और फौजी अदालतों का काम करना। (३) अदालतों में काजी और मीर अदल। (४) पुलिस का अच्छा प्रबन्ध। (६) कोतवालों की बाजार और बदमाशों पर निगरानी।

४:—लगान:—(१) टोडरमल का उम्दा प्रबन्ध। (२) बंगाल काबुल और दकन में जमीदारों को मुकर्रिरा मालगुज़ारी पर

जमीन। (३) उत्तरी भारत में १० साला बन्दोबस्त (४) जिन्स के विचार से किसानों का ⅓ सरकार को देना।

५:—फौज:—१—चार भाग (१) घुड़सवार (२) पैदल (३) तोप (४) हाथी। (२) फौज में मनसबदारों की फौज। (३) घोड़ों को दागना और उन्हें देखना। (४) नये-नये हथियार देना। (५) फ़ौज में आजादी का होना।

६:—प्रजा को आराम—(१) पुलिस के जरिये निगरानी। (२) अकाल में लगान की मुवाफी। (३) रिश्वत न लेने को कहना। (४) प्रजा की आसानी का खयाल। (५) दीवान आम में बैठ कर हफ्ते में १ रोज आम लोगों की फरयाद सुनना।

साहित्य और कला की उन्नतिः—(१) अबुलफजल का आईन अकबरी और अकबरनामा बनाना। (२) फ़ैजी की कविता। (३) रामायण-महाभारत-गीता का अनुवाद। (४) तुलसीदास का रामचरित मानस बनाना। (५) सूरदास का सूरसागर। (६) अकबर का भी हिन्दी कविता करना। (७) इमारतें:—फतहपुर-सीकरी का शानदार महल। (८) आगरे में लाल किला। (९) सिकन्दरे का मकबरा। (१०) चित्रकारी—दीवार में चित्रकारी होना। गवैयों में तानसेन का दरबार में होना।

अकबर को महान् क्यों कहते हैं

(१) चरित्र। (२) पोलिसी। (३) अकबर की बड़ी खूबी कि हिन्दुओं को अपनी ओर मिलाया। (३) राजाओं से मेल और उनको अपने राज्य का स्तम्भ समझकर पक्षपात से रहित होना।

(४) राज्य प्रबन्ध । (५) मुसलमान होने पर हिन्दुओं से आम बर्ताव (६) गुणवान् लोगों का आदर करते हुए अपने दरबार को नवरत्नों से सजाना। (१) टोडरमल (२) बीरबल (३) अबुलफजल (४) फैजी (५) मानसिंह (६) अब्दुर्रहीम। (७) तानसेन (८) हकीम हुम्मा (९) मिर्जा कोकलतास।

जहाँगीर (१६०५-१६२७ ई०)

घटना:—(१) खुसरो की बगावत करने पर उसको कैद करना और सिक्खों के गुरु अर्जुन को इसकी मदद के इल्जाम में फाँसी देना (२) नूरजहाँ से शादी। (३) खुर्रम (शाहजहाँ) का बगावत करना। (३) महावतखाँ का उसको दबाने जाना आखिर में इसका वापिस आना। (४) नूरजहाँ का महावतखाँ के असर को देखकर उस पर इल्जाम लगाना जिस पर महावतखाँ का बगावत करना। (३) सर टामसरो का आना। (४) विजय— उड़ीसा, बंगाल, मेवाड़, भड़ौच और अहमदनगर जीतना।

मृत्यु—सन् १६२७ ई० में मृत्यु होना।

चरित्र—(१) बुद्धिमान, दानशील होना। (२) हिन्दू, मुसलमानों को यकसाँ देखना (३) चित्रकारी और प्राकृतिक दृश्यों का शोकीन (४) न्यायी, चित्रकार, मुन्सिफ होना। (जंजीर-घंटी)। (५) शराब, अफयून, अमन पसंद होकर नूरजहाँ की सलाह से राज्य करना। (नूरजहाँ जहाँगीर के परदे में शासित थी)

मुगलवंश का स्वर्णकाल

शाहजहाँ (१६२८ ई०—१६५८ ई०)

जहाँगीर की मृत्यु के बाद शहरयार का प्रयत्न। राजकुमार खुर्रम की सफलता। राजवंश के अधिकारियों का कत्ल होना।

राज विद्रोह—बुन्देलखण्ड के राजपूतों का विद्रोह। खानजहाँ का विद्रोह। बीजापुर के साथ युद्ध।

पुर्तगालियों का दमनः—सन् १६३१ ई० में पुर्तगालियों का उपद्रव पुर्तगालियों का लड़का लड़कियों को ईसाई बनाना। शाहजहाँ का इन्हें नाश करवाना।

अकालः—१६३०-३२ तक गुजरात और दक्षिण में भयङ्कर अकाल, शाहजहाँ का सहायता करना।

दक्षिण की लड़ाईः—शाहजहाँ का सन् १६३२ में अहमदनगर विजय नगर गोलकुण्डा और बीजापुर का मुगलसम्राट को कर देना स्वीकार।

कन्धार का खोनाः—शाहजहाँ का रिश्वत देकर कन्धार लेना पर फारस वालों का वापिस सन् १६५२ ई० में ले लेना।

गोलकुण्डा बीजापुर युद्धः—सन् १६५२ में औरङ्गजेब का सूबेदार होना। औरङ्गजेब का गोलकुण्डा से युद्ध। दोनों में सन्धि। शाहजहाँ का सन् १६५७ में आगरा चल पड़ना।

शाहजहाँ के पुत्रः—दाराशिकोह—शाहजहाँ से प्रेम, राजधानी में रहना। शुजा-बंगाल का सूबेदार, विलास प्रिय। औरंगजेब–

दक्षिण का सूबेदार, सन्देह युक्त। मुराद-शूरवीर होना। जहाँ-नारा, रोशनारा लड़कियाँ।

शाहजहाँ की बीमारी:—शाहजहाँ का सन् १६५७ में सख्त बीमार होना। शुजा का बंगाल में, मुराद का गुजरात में स्वतंत्रता की घोषणा। दारा के पुत्र का शुजा को हराना। औरङ्गजेब का चालाकी द्वारा बादशाह होना।

शाहजहाँ का शासन प्रबन्ध:—टोडरमल की चलाई प्रथा दक्षिण में चालू, जुर्म कम होना, शाहजहाँ का ठाटबाट, अत्याचारी हाकिमों को सज़ा, नहरें बनाना, सड़कों का बनाया जाना।

शाहजहाँ की इमारतें तथा शानशौकत:—बादशाह का कलाकौशल से प्रेम, इमारतें बनवाना और ताजमहल, मोतीमसजिद, दिल्ली का किला आदि इमारतें।

मुमताज़ महल:—अर्जुमन्द बानूबेगम का शाहजहाँ के साथ विवाह, मुमताज महल की पदवी, १६३१ में मृत्यु, दो प्रतिज्ञाएँ, ताजमहल बनना और शाहजहाँ का शादी न करना।

शाहजहाँ का चरित्र:—वीर सैनिक, न्याय प्रिय, बुद्धिमान् उदार होना सुन्दर इमारतें बनवाना, ठाटबाट वाला बादशाह होना, दीन दुखियों की मदद और प्रजा से प्रेम करना तथा फ़रियाद सुनना।

शाहजहाँ की मृत्यु:—सन १६५८ ई० में शाहजहाँ का नज़रबन्द होना और सन् १६६६ में मृत्यु जहनारा की सेवा करना।

मुग़ल साम्राज्य की घटती

औरङ्गजेब (१६५८—१७०७)

औरङ्गजेब का गद्दी पर बैठना:—गद्दी पर बैठकर 'आलमगीर' पदवी धारण करना, राज्य का काम इस्लामी रीति से होना, मीर जुमला को बंगाल का सूबेदार बनाना, आसाम विजय, मीर जुमला की मृत्यु और शाइस्तखाँ का बंगाल का सूबेदार होना।

औरङ्गजेब का चरित्र:—कट्टर सुन्नी, नमाज़ रोजे का पाबन्द, सच्चा न्यायी, सन्देह युक्त, वीर, साहसी, उत्साही होना। नाच रंग, गाना, बजाना, विलासिता, मद्य पान आदि से घृणा, नौकरों से सख्त काम लेना, समय पर काम करना और हिन्दुओं को अप्रसन्न करना।

हिन्दू धर्म पर आघात:—सन् १६६६ ई० में आघात करना आरम्भ होना, सन् १६६६ ई० में मथुरा आगरा के पास के जाटों का विद्रोह, सन् १६७२ में मेवात और नारनौल के पास रहने वाले सतनामी सम्प्रदाय वालों का विद्रोह। सन् १६७५ ई० से सिक्खों का आग बबूला होना और राजपूतों का सन् १६७६—८१ तक विद्रोह।

औरङ्गजेब और दक्षिण के मुसलमानी राज्य:—१६८६ में औरङ्गजेब का बीजापुर को जीतना, सन् १६८७ में गोलकुण्डा जीतना जो मुग़ल साम्राज्य की अवनति का कारण होना और मरहठों का निःशंक होके लूटना।

मराठे और उनका देशः—महाराष्ट्र देश के निवासी, मराठों का वीर परिश्रमी, साहसी, फुर्तीला, लड़ने भिड़ने वाला होना।

शिवाजीः—शाहजी की अहमदनगर में नौकरी करना, पश्चात् बीजापुर में आकर उन्नति करने से पूना का जागीरदार होना। सन् १६२७ में इनके घर शिवाजी का जन्म। बड़ा होकर बीजापुर में छापा मारना, चौथ वसूल करना, अफ़ज़लखाँ को मारना, सन् १६६२ में शिवाजी को दमनार्थ शाइस्ताखाँ का आना, सन् १६६४ ई० में सूरत को लूटना, औरङ्गजेब का क्रोधित होना, आमेर के राजा जयसिंह का आना, जयसिंहजी का इन्हें वश में करना, शिवाजी का शर्तानुसार दरबार में जाना, इनका अपमानित होकर कैदी होना, छूट निकलना और सन् १६७४ ई० में अभिषेक। सन् १६८० में मृत्यु।

शिवाजी का शासन प्रबन्ध—अष्ट प्रधान कौंसिल का होना। पैदावार का ⅖ भाग लेना, कर्मचारियों को वेतन मिलना, सेना में अधिक घुड़सवार होना और चौथ व लूट का माल राज्य में आना।

शिवाजी का चरित्रः—इन्हें अच्छी शिक्षा मिलना। स्वामी रामदास की शिक्षा शिवाजी का बुद्धिमान, वीर, साहसी, धैर्य-वान होना, गो, ब्राह्मण, हिन्दू धर्म की रक्षा की प्रतिज्ञा, धर्म का पक्का होना और मुसलमान महिला तथा कुरान का आदर तथा होनहार को ओहदे मिलना।

मराठों के साथ औरंगजेब का अन्तिम युद्धः—शिवाजी की मृत्यु

के बाद सम्भाजी का राज्याधिकारी होना, सन् १६८६ में सम्भाजी से युद्ध, इनका शाहू सहित कैद होना और सन् १६९९ में औरंगजेब का सितारा विजय करना तथा मराठों का दबना।

मराठों की विजय के कारण:—नाले व दर्रों का होना, खुल्लम खुल्ला न लड़ना, टट्टुओं द्वारा शीघ्र आवागमन, कम खर्च में काम चलाना व साहसी होना और सैनिक एकयता।

औरङ्गजेब के अन्तिम दिन:—राज्य में चौतरफ उपद्रव होना। सन् १७०७ में दक्षिण में मृत्यु।

औरङ्गजेब का शासन प्रबन्ध:—२१ सूबे होना। औरङ्गजेब का हिन्दुओं को अप्रसन्न करना, सूबेदारों को अपनी मुट्ठी गर्म करना, आर्थिक दशा बिगड़ना, लड़ाइयों में खजाने का बहुत सा भाग खर्च होना, गरीबों पर अन्याय होना और किसानों की दुर्दशा तथा लगान का वसूल न होना।

अकबर और औरङ्गजेब की तुलना

अकबर	औरङ्गजेब
चरित्र:—बहादुर, बुद्धिमान, ताकतवार होना।	बहादुर, बुद्धिमान और ताकतवर होना। राजनैतिक दावपेचों को जानना।
पोलिसी:—हिन्दुस्तान को हिन्दुओं का देश समझकर वहाँ की आवश्यकतानुसार नीति से काम लेना।	हिन्दुओं का ध्यान न करके धर्म की पाबन्दियों से भारत पर शासन करना।

धर्मः—अकबर का सूफी होना, हर धर्म में जानकारी रखते हुए सब धर्मों की अच्छी बातों को मानना। और धर्म के आदमियों को धार्मिक स्वतंत्रता देना।

कट्टर सुन्नी होना। इस्लाम धर्म का पूरे प्रकार से पाबन्द होकर दूसरे धर्मों में दखल देना।

धर्म-न्यायः—धर्म की रू से इन्साफ न करके भारतवर्ष के रस्म-रिवाज और उनके धर्म को देखते हुए न्याय करना।

सिर्फ इस्लाम धर्म के कायदों को इन्साफ में चलाना, चाहे किसी धर्म का मामला क्यों न हो। इसलिए कह सकते हैं कि औरङ्गजेब इस्लामी राज्य का अच्छा बादशाह हो सकता था।

विश्वासः—अपने मातहतों का ऐतबार करना चाहे वो कोई भी हो जैसा कि ये अपने नव रत्नों का पूरा विश्वास रखता था। जिससे राज्य में अमन और उन्नति रही।

किसी का भी विश्वास न करना। यहाँ तक कि हिन्दुओं को छोड़ते हुए अपने बेटों-पोतों का भी एतबार न करना। जिससे मुगल राज्य में घुन लगना।

मनोविनोदः—अकबर का बड़े बड़े चित्रकार और गवैयों

औरङ्गजेब का ऐश आराम और मनोविनोद की कुल

को दरबार में रखना ।	सामग्रियों को मिटाने की कोशिश करना ।
हिन्दुओं से बर्ताव:—अकबर का अपनी हिन्दू प्रजा से वैसा ही प्रेम रखना जैसा मुस्लिम प्रजा से । उनको हर प्रकार की मदद देना उनसे जजिया कर उठा देना ।	(१) मुसलमानों के साथ रिआयत । (२) मन्दिर व हिन्दू मठ तुड़वाना । (३) हिन्दुओं पर जजिया लगाना ।

मुग़ल साम्राज्य का पतन

बहादुरशाह—(१७०७-१२) औरंगजेब की मृत्यु के बाद बहादुरशाह का गद्दी पर बैठना । शाहू को क़ैद से छोड़ना । वीर बन्दा बैरागी की मृत्यु । सन् १७१२ में मृत्यु ।

जहाँदरशाह—(१७१२-१३) तीनों भाइयों को मार कर गद्दी पर बैठना । सैयदअली और सैयद हुसैन का इसे मदद देना । सन् १७१३ में मृत्यु ।

फ़र्रुख़सियर—(१७१३-१९) इसके समय में सैयद अली का दक्षिण का सूबेदार तथा सैयद अब्दुल्ला का वजीर बनना । १७१५ में सिक्खों का दमन । सैयदहुसैन अली और अब्दुल्ला का इसे मराठों से मिल कर सन् १७१९ में मारना इसके समय में भरतपुर में जाट सरदार सूरजमल का स्वतन्त्र राज्य कायम करना ।

मुहम्मदशाह—(१७१९-४८) मुहम्मद का गद्दी पर बैठना, मुहम्मदशाह का सैयद हुसैन अली और अब्दुल्ला को मरवाना; जिससे निजामुल मुल्क का निज़ाम सल्तन की नींव डालना और अवध के सूबेदार सआदत अलीखाँ ने बंगाल में अलीवर्दी खाँ ने और रुहेलखण्ड में रुहेलों का स्वतंत्रता की घोषणा करना।

नादिरशाह का आक्रमण—(१७३९ ई०) नादिरशाह का दिल्ली पर हमला करना, लोगों में इस अफवाह का फैलना कि नादिरशाह मर गया इस पर नादिरशाह का आग बबूला होना, शहर में क़त्ले आम प्रारम्भ, मुहम्मदशाह की प्रार्थना से बन्द होना और नादिरशाह का २०-३० करोड़ और मयूरासन ले जाना।

पेशवा वंश का उदय—बालाजी विश्वनाथ—(१७१३-२०) शाहू का बालाजी विश्वनाथ को सन् १७१३ में पेशवा बनाना, इसका दूर दूर तक आतंक फैलना और सन् १७२० में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु।

बाजीराव—(१७२०-४०) इसका योग्य शाशक होना। सन् १७४० में मृत्यु।

मराठों के राज्य—रानोजी सिंधिया और मल्हारराव होल्कर का मालवा में, पिलाजी गायकवाड़ का गुजरात में, राघोजी भोंसला का बरार में चौथ वसूल करना, पर इनका शीघ्र स्वतन्त्र होना और सिंधिया का ग्वालियर में होल्कर का इन्दोर में गायकवाड़ का बड़ौदा में और भोंसला का नागपुर में राज्य स्थापित करना।

बालाजी बाजीराव—(१७४०-६१ ई०) इसके समय मराठों का उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचना, पूना का राजधानी होना, पेशवा का मध्य भारत व पूर्वी भारत के कई देश लूटना और राघोबा का १६५८ में पंजाब जीतना।
१७६० में चम्बल से गोदावरी तक, अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक तूती बोलना।

पानीपत की तीसरी लड़ाई—समय—सन् १७६१ ई०

पक्ष—अहमदशाह अब्दाली तथा मराठे।

कारण—सन् १७५८ ई० में मराठों का पंजाब जीतना। अहमदशाह दुर्रानी (अब्दाली) का १७५९ ई० में वापिस पंजाब जीत लेना सन् १७६० में मराठों का पंजाब पर फिर धावा मारना और लाहौर को लूटना। मरहठों के उत्कर्ष से अहमदशाह तथा अन्य शासकों का जलना जिससे युद्ध छिड़ना।

घटना—अहमदशाह की बड़ी भारी सेना का मराठों को हराना, सदाशिवराव भाऊ तथा अनेक मराठे वीरों का यमलोक पहुँचना, इसे सुनकर बालाजी बाजीराव के भी प्राण निकलना और मरहठे सरदारों में द्वेष।

फल—मराठों की एकता और पेशवा की शक्ति का नष्ट होना, यूरोपीय जातियों का उकसना और भारत में अंग्रेजों का अधिकार जमना।

मुगल राज्य का अन्त—मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद

अहमदशाह (१७४८-५४ ई०) तक वादशाह रहा। इसकी मृत्यु के बाद आलमगीर (१७५४-५६ ई०) और इसके वाद में शाह आलम (१७५६-१८०६ ई०) तक वादशाह रहा। शाह आलम की मृत्यु के वाद अकवर द्वितीय (१८०६-२७) और इसके वाद वहादुर शाह द्वितीय (१८२७-५७ ई०) दिल्ली का वादशाह हुआ। इसके वाद दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार होगया।

मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण—१—औरंगजेव की कट्टर-धार्मिक नीति से राजपूतों का अप्रसन्न होना २—इस नीति के कारण सिक्ख, जाट, सतनामियों और मराठों का प्रवल विद्रोह खड़े करना। ३—शाशकों की अयोग्यता। ४—मुगल शाशकों की राज्यशक्ति का कमज़ोर होना। ५—नादिरशाह और अहमदशाह के हमले होना। ६—राज्याधिकारी होने का प्रश्न। ७—विस्तृत मुग़ल राज्य होना। ८—शाहजहाँ औरंगजेव की अपव्ययता। ९—जहाजी वेड़े की कमी। १०—औरंगजेव का दक्षिण की रियासतों को जीतना। ११—मुग़ल शाशकों का स्वच्छन्द होना। १२—उष्ण जलवायु से विलासी होना।

मुग़ल काल पर एक दृष्टि

शासन—अकवर का हिन्दुओं के साथ सद् व्यवहार करना। राजपूतों का मुग़लों की सहायता करना। टोडरमल का माल-गुजारी का उत्तम प्रवन्ध करना। जहाँगीर व शाहजहाँ का भी इस नीति का अनुसरण करना। औरंगजेव का इस नीति को ठुकराना। हिन्दुओं से शत्रुता करना। मुग़ल शासन के दो

भाग होना। (१) केन्द्रीय। (२) प्रान्तीय। केन्द्रीय प्रबन्ध बादशाह और उसके अफ़सरों का करना। प्रान्त में सूबेदार का होना। सूबेदार का राज्य को नियत कर देना। सूबेदार की सहायता के लिए दीवान और फौजदार होना। गुप्तचरों का भी होना।

सामाजिक दशा:—व्यापार का उन्नति पर होना। भारतीय वस्तुओं का मूल्य ऊँचा होना। अकबर के प्रयत्न से कृषि उन्नति होना। इस समय औरंगजेब के शासन काल के अतिरिक्त मुग़ल काल में धार्मिक स्वतन्त्रता। कभी-कभी सूबेदार के कष्ट से प्रजा का दुख पाना। दोनों जातियों का एक दूसरे का अनुकरण करना। सती प्रथा को रोकने की चेष्टा करना। सरदारों का ठाटबाट से रहना। अकबर की सुधारक प्रणाली से कई सुधार होना।

कला कौशल:—मुग़ल काल में कला कौशल की उन्नति होना। कई मसजिदें, महल, मकबरे आदि बनना। अकबर का आगरा और इलाहाबाद के क़िले बनवाना। फतहपुर सीकरी के महल आदि बनाया जाना। जहाँगीर का सिकन्दरे में अकबर का मकबरा और आगरे में एतमादुद्दौला का मकबरा बनाना। शाहजहाँ का, कई शहर, ताजमहल, लाल किला आदि बनवाना। संगीत विद्या की भी तरक्की होना। ढाके की प्रसिद्ध मलमल, तथा अन्य स्थानों में दरी, कालीन, गलीचे आदि चीजें बनाया जाना।

साहित्य और विज्ञानः—हिन्दी कवियों में तुलसीदासजी ने रामायण, सूरदासजी ने सूरसागर, विहारी ने विहारी सतसई, केशवदास ने रामचन्द्रिका, तथा भूषण, देव, विद्यापति आदि और कई मुसलमान कवियों का ग्रन्थ रचना। इस समय में उर्दू भाषा का जन्म होना। कई शास्त्रों तथा वाक्यों का फारसी आदि भाषाओं में अनुवाद होना। कई बादशाहों का अपनी जीवन घटनाएँ लिखना।

धर्मः—इस समय में दोनों धर्मों का जोर रहना। औरंगज़ेब का कट्टर होना। ईसाइयों का नाश। लोगों का भक्तिमार्ग पर चलना। कई महात्माओं का अपने-अपने मत चलाना। दोनों धर्मों में विशेष परिवर्त्तन न होना।

तृतीय खण्ड

अंग्रेजी-काल

१—यूरोप की जाति और हिन्दुस्तान तथा पारस्परिक युद्ध

पुर्तगाली

समय	पुर्तगाल निवासी	पुर्तगालियों की हार के कारण
१४९८ ई०	वास्कोडिगामा कालीकट आ पहुँचा	१:—माली कमजोरी।
		२:—पुर्तगाल सरकार का कुछ मदद न देना।
१५१० ई०	एलबुकर्क ने गोआ पर अधिकार किया	३:—धार्मिक विरोध करना।
		४:—कट्टर पादरियों का राज्य के कामों में दखल देना।
		५:—यूरोप की अन्य कौमों का हिन्दुस्तान में आकर व्यापार की इच्छा करना।

१६०० ई०	अंग्रेज भारत में आये। ईस्टइण्डिया कंपनी बनाई।
१६०२ ,,	डच लोगों का आना।
१६४२ ,,	फ्रांस की पहली कम्पनी का स्थापित होना।
१६६४ ,,	फ्रांस की दूसरी कम्पनी का स्थापित होना।
१६७४ ,,	फ्रांसिस मार्टिन का पांडुचेरी की नींव डालना और चन्द्रनगर में अपनी कोठी बनवाना।
१६०८ ,,	कप्तान हाकिन्स का सूरत में आना और जहाँगीर बादशाह से मिलना। सूरत में कोठी बनवाने की आज्ञा लेना।

१६१५ ,,	सर टामसरो का हिन्दुस्तान में आना।
१६३२ ,,	१:—शाहजहाँ बादशाह का पुर्तगालियों को निकाल देना।
	२:—अंग्रेजों को अच्छा मौका मिलना।
	३:—शाहजहाँ बादशाह से अंग्रेजों को बिना चुङ्गी दिये हुए बंगाल में व्यापार करने की आज्ञा मिलना।
१६४० ई०	मद्रास की नींव पड़ना सेंटडिबड का वहाँ पर किला बनना।
१६६० ई०	चार्ल्स द्वितीय का इङ्गलैंड का बादशाह होना तथा कम्पनी के अधिकार बढ़ाना।
१६६१ ई०	बम्बई का शहर पुर्त्तगाल बादशाह ने चार्ल्स द्वितीय की शादी के समय दहेज में का देना।
१६८६ ई०	अंग्रेजों का शासन करने की ओर ध्यान आना।
१६९० ई०	ओरंगजेब और अंग्रेजों की सुलह होना। जौब-चारनक का कलकत्ते की नींव डालना।

फ्रांसिसी और डचों की कोशिश:—

१६९३ ई०	डचों का फ्रांसिसी को जीतना। ६ साल बाद सन् १६९९ ई० में आपस में सुलह होना। डचों का कमजोर होकर मसाले के टापुओं का अधिकारी होना।

१७३५-४१ फ्रांसीसियों का जोर बढ़ना। ड्यूमा को नवाब का खिताब मिलना।

१७४१:— डुप्ले का हिन्दुस्तान में आना।

अँगरेज और फ्राँसीसियों की पहली लड़ाई

समयः—सन् १७४४ से ४८ तक।

पक्षः—अँगरेज और फ्राँसीसी।

कारणः—यूरोप में लड़ाई छिड़ना।

घटनाः—फ्राँसीसियों का मद्रास लेकर सेन्ट डिवड़ किले पर चढ़ाई करना अँगरेजों का पांडुचेरी को जीतना।

फलः—सन् १७४८ ई० में एलाश पल की सन्धि होना। आपस में जीते हुए शहर वापिस देना।

अँगरेज और फ्राँसीसियों की दूसरी लड़ाई

समयः—सन् १७५० ई० से ५४ ई० तक।

पक्षः—अँगरेज, नादिर जङ्ग और अनवरुद्दीन
फ्राँसिसी (मुजफ्फर जङ्ग और चंदा साहब)।

कारणः—(१) हैदराबाद की गद्दी का झगड़ा। चन्दा साहब का कर्नाटक को अपने कब्जे में करना। मुजफ्फर जङ्ग की और चन्दा साहब को फ्राँसिसियों से मदद मिलना। अँगरेजों का नाजिर जङ्ग और मुहम्मद अली को मदद देना।

घटनाः—(१) अम्बर की लड़ाई में चन्दा साहब की जीत,

होना। (२) निजामे मुल्क में नाजिरजङ्ग की जीत होना। (३) नाजिरजङ्ग की फौज में फूट पड़ना। (४) मुजफ्फरजङ्ग का नवाब होना। (५) रास्ते में हैदराबाद जाते समय मुजफ्फरजङ्ग का मारा जाना और सलावतजङ्ग का गद्दी पर बैठना। (६) अर्काट का घेरा।

फलः—जीती हुई जमीन को आपस में वापिस कर देना।

अँगरेज और फ्राँसीसियों की तीसरी लड़ाई

समयः—सन् १७५६ ई० से ६३ ई० तक।

पक्षः—एक ओर अँगरेज दूसरी ओर फ्राँसीसी।

कारणः—यूरोप में लड़ाई हुई तो उन्होंने भी यहाँ लड़ाई की।

घटनाएँः—(१) काउन्ट लैली का सेन्ट डिवड का किला लेना। (२) सर आयरकूट का फ्राँसीसियो को हराना।

फलः—(१) पांडुचेरी और चन्द्र नगर वापिस मिलना। (२) उत्तरी सरकार अँगरेजों के अधिकार में आना। (३) फ्रांसीसियों की अवनति होना।

डुप्ले की असफलता के कारण

१ः—डुप्ले की असफलता के कारणः—

(१) फ्राँस की माली कमजोरी। (२) देश के किसी भाग पर अधिकार न होना। (३) फ्राँसीसियों का व्यापारी कोशिश करना।

(४) डुप्ले का आज़ादी से काम न करना। (५) अन्य अफ़सरों का स्वार्थी होना। (६) सामुद्रिक कमजोरी। (७) फौजी अफसरों में अनबन।

सिराजुद्दौला का अङ्गरेजों से बिगाड़:—(१) अंगरेजों का किलों की मरम्मत बन्द न करना। (२) अंगरेजों का विना महसूल दिये हुए बंगाल में व्यापार करना। (३) सिराजुद्दौला के दुश्मन को अंगरेजों का न देना।

प्रभाव:—काल कोठरी (ब्लैक होल) की घटना।

बदला:—ब्लैक होल की खबर का मद्रास पहुँचना। क्लाइव और वाटसन का फौज लेकर बंगाल में पहुँचना। बंगाल पहुँच कर सन् १७५७ ई० में कलकत्ता जीतना। सिराजुद्दौला का मजबूर होकर सन्धि करना।

क्लाइव की सन्धि करने में अच्छी तदबीर:—(१) कलकत्ते कौंसिल का खिलाफ होना। (२) फ्रांसिसी और सिराजुद्दौला का मिलना। (३) शान्ति। (४) अहमदशाह अब्दाली का हिन्दुस्तान में आना।

प्लासी की लड़ाई

समय:—सन् १७५७ ई०।

पक्ष:—अंगरेज और सिराजुद्दौला।

कारण:—(१) काल कोठरी की घटना। (२) प्रजा का सिराजुद्दौला से नाराज होना। (३) मीरजाफर का षड़यन्त्र।

वृत्तान्तः—क्लाइव का सिराजुद्दौला को लिखना कि तुमने सन्धि शर्तों के खिलाफ काम किया और फ्रांसीसियों से मेल जोल किया है। कुछ उत्तर न देने पर लड़ाई की तैयारी होना।

फलः—मीरजाफर का नवाब होना। २४ परगनों का जिला अंगरेजों को मिलना। अंगरेजों का मालामाल और रौब दौब होना ?

मीरजाफरः—(१) अ—मीरजाफर की अयोग्यता। (२) ब—मीरजाफर का सुस्त और अफ़ीम खाना। अंगरेजों को बार-बार रुपया देने से खजाने में कमी आना। खजाना खाली होने से शासन-प्रबन्ध में गड़बड़ी होना। सेना को तनख्वाह न मिलना। आखिर में अंगरेजों का मीरजाफर को गद्दी से उतार कर उसके दामाद मीरकासिम को गद्दी पर बिठाना।

शाहजादे का हमलाः—(१) मीरजाफर की नवाबी में शाहज़ादे का शुजाउद्दौला की मदद से बंगाल पर चढ़ाई करना। (२) क्लाइव के आने की खबर सुन कर शुजाउद्दौला का भाग जाना। (३) शाहज़ादे का ५०० अशर्फियाँ लेकर वापिस लौटना।

डचों का अन्तः—(१) डचों का फ्रांसीसियों से ईर्षा करना और आखिर में लड़ कर अङ्गरेजों को जहाज और रुपया देना।

अङ्गरेजों से मीरकासिम का झगड़ाः—(१) मीरकासिम का योग्य और स्वतन्त्र शासक होना। (२) कम्पनी को मीरकासिम का रुपया न देना। (३) अङ्गरेजों के महसूल को न

देने से खफा होकर मीरकासिम का सब को विना महसूल व्यापार करने की इजाजत देना। (४) मीरकासिम का कौंसिल में अर्जी पेश करना। (५) सुनाई न होने पर लड़ाई के लिए तैयार न होना।

एलिस और मीरकासिम का झगड़ा पटना का हत्याकांड होना वक्सर की लड़ाई

समयः—सन् १७६४ ई०।

पक्षः—अंग्रेज और शाहआलम, शुजाउद्दौला और मीर कासिम।

कारणः—(१) मीरकासिम का अंग्रेजों से चिढ़ना। (२) पटना का हत्याकांड होना। (३) मीरकासिम का भाग कर शाह आलम और शुजाउद्दौला से मिलना। (४) मीरकासिम का अवध जाना।

घटनाः—नवाब का अवध, शाहआलम को साथ लेकर अंग्रेजों से वक्सर की लड़ाई लड़ना।

फलः—अंग्रेजों की नीति से इलाहबाद की सन्धि होना।

क्लाइव के शासन-सुधार

आवश्यकताः—(१) कम्पनी की दशा खराब होना तथा नौकरों का वेईमानी से रुपया कमाना। (२) व्यापार को हानि पहुँचना। (३) बंगाल में नवावों का शासन-प्रबन्ध बिगड़ना। (४) वक्सर की लड़ाई तथा पटना का हत्याकांड होना।

सुधारः—(१) कम्पनी के नौकरों से इकरारनामा लिखवाना और नमक का ठेका देना। (२) सिपाहियों का भत्ता आधा करना। (३) फौजी सुधार करना।

इलाहाबाद की सन्धि

समयः—सन् १७६५ ई०।

पक्षः—अंग्रेज और शाहआलम, शुजाउद्दौला और बंगाल का नवाब।

शर्तें:—१—शाहआलम सेः—(१) शाहआलम का बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को देना। (१) शाहआलम का कड़ा और इलाहाबाद के जिले अंग्रेजों को देना। (३) अंग्रेजों का २६ लाख रुपया सालाना शाहआलम को देना।

शुजाउद्दौलाः—(१) अंगरेजों का अवध देश शुजाउद्दौला को वापिस देना। (२) नवाब का कम्पनी को उसका नुकसान पूरा करने के लिये ५० लाख रुपया देना स्वीकार करना। (३) अँग्रेजी कम्पनी की भेजी हुई फौज को अपने यहाँ रखने का वादा करना। और उसका खर्च नवाब की तरफ से मिलना।

मीर कासिमः—(१) बंगाल के नवाब को निजामत यानी फौजदारी का काम सौंपना। (२) कम्पनी का नवाब को ५३ लाख रुपया सालाना देना।

प्रभावः—(१) बंगाल में दोहरा राज्य स्थापित होना। (२) शासन-प्रबन्ध नवाब के हाथ आने से थोड़े ही दिन बाद नवाब और कम्पनी के नोकरों में झगड़ा होना।

सन् १७६७ ई० से ७२ ई० तक भारत की दशा

उत्तरी भारत:—(१) पंजाब (२) दिल्ली (३) अवध और (४) बंगाल ।

दक्षिणी भारत:—(१) महाराष्ट्र (२) हैदराबाद (३) मैसूर।

मैसूर की पहली लड़ाई

समय:—सन् १७६७ ई० से ६६ ई० तक ।

पक्ष:—हैदरअली और अँगरेज ।

कारण:—हैदरअली का मलाबार तट को लूटना । निजाम से मिलकर अँगरेजों को लड़ाई का चेलैंज देना ।

वृत्तान्त:—कर्नल स्मिथ का हैदरअली को हराना । इसके दो साल पश्चात् तक लड़ाई जारी रहना ।

फल:—(१) आपस में सुलह करना कि जीते हुए देश वापिस लौटाना (२) आवश्यकता के समय एक दूसरे की मदद करना ।

२—गवर्नर

वारेन हेस्टिंग्ज गवर्नर के शासन-सुधार

(१७७२—७४)

(१) प्रान्तीय और राजनीतिक सुधार (२) अदालती सुधार (३) माली-सुधार ।

रेग्यूलेटिंग एक्ट

समय:—सन् १७७३ ई० ।

आवश्यकता:—हेस्टिंग्ज़ के समय में पार्लियामेंट का कम्पनी की जाँच करते हुए यह मालूम करना कि:—(१) कम्पनी की माली कमज़ोरी। (२) राज्य बढ़ने से जिम्मेदारी बढ़ना। (३) कम्पनी के नौकरों का मालामाल होकर इँगलैंड लौटना। (४) कम्पनी का सरकार से कर्ज माँगना। इन बातों से भारत के सुप्रबन्ध के लिए रेग्यूलेटिंग ऐक्ट पास होना।

भारती शासन में परिवर्तन:—(१) बंगाल के गवर्नर जनरल का कुल ब्रिटिश भारत का गवर्नर जनरल होना। (२) गवर्नर जनरल की सहायता को चार मेम्बरों की कौंसिल बनना। (३) कलकत्ते में सुप्रीम कोर्ट, जिसमें एक बड़े जज (अँगरेज) और तीन छोटे अँगरेज जजों के अधीन स्थापित होना।

लाभ:—(१) बंगाल, मद्रास और बम्बई का एक होना और गवर्नर जनरल का कुल ब्रिटिश भारत का जिम्मेदार होना। (२) कम्पनी का पार्लियामेंट की आधीनता में होने से ब्रिटिश भारत की अच्छी निगरानी होना।

दोष:—(१) गवर्नर जनरल का बम्बई और मद्रास पर कंटरोल करने में मुश्किल होना। यहाँ के गवर्नरों का गवर्नर जनरल से लापरवाह होना। (२) गवर्नर जनरल की सहायता को चार मेम्बरों की कौंसिल बना कर बहुमती राय पर फैसला करना, यह अनुचित होना। (३) सुप्रीमकोर्ट गवर्नर जनरल के मातहत न रह कर इँगलैंड के मातहत होने से कोर्ट और कौंसिल में अनबन होना।

रुहेला युद्ध

समयः—सन् १७७४ ई० ।

पक्षः—पहला पक्षः—अँगरेज और शुजाउद्दौला । दूसरा हाफिज रहमत खाँ रुहेला ।

कारणः—रहमत खाँ का शर्त के अनुसार शुजाउद्दौला को रुपया न देना । शुजाउद्दौला का अँगरेजों की मदद से चढ़ाई करना ।

वृतान्त और परिणामः—(१) लड़ाई होना । (२) रहमत खाँ का मारा जाना और रुहेलखण्ड की बरबादी होना । (३) वोरेन हेस्टिंग का बेजा दखल देना—अनुचित हस्ताक्षेप करना ।

मराहठों की पहली लड़ाई

समयः—सन् १७७५ ई० से ८२ ईस्वी तक ।

पक्षः—पहला पक्ष-अङ्गरेज और राघोबा । दूसरा पक्ष-मरहठा सर और नाना फड़नवीस ।

कारणः—(१) माधोराव पेशवा की मृत्यु के बाद नारायण-राव का पेशवा होना । (२) छह महीने बाद मारा जाना । (३) मरहठा सरदारों का नारायणराव के बेटे को पेशवा बनाने की कोशिश । (४) नारायणराव के चचा राघोबा की पेशवा बनने की कोशिश । राघोबा की सूरत की सन्धि, नाना फड़न-वीस की पुरन्दर की सन्धि । अन्त में राघोबा की सन्धि का मंजूर होना ।

माधोराव

नारायणराव

राघोबा	नाबालिक लड़का छोड़ा
अङ्गरेज	मरहठा सरदार नाना फड़नवीस बच्चे की तरफ रहे
१७७५ ई०	सन् १७७६ ई०
सूरत की सन्धि सालसट-वेसीन और एक फौज	पुरन्दर की सन्धि—सालसट
बम्बई गवर्नर की मंजूरी	गवर्नर जरनल की मंजूरी
डाईरेक्टरों की मंजूरी	डाईरेक्टरों की नामंजूरी
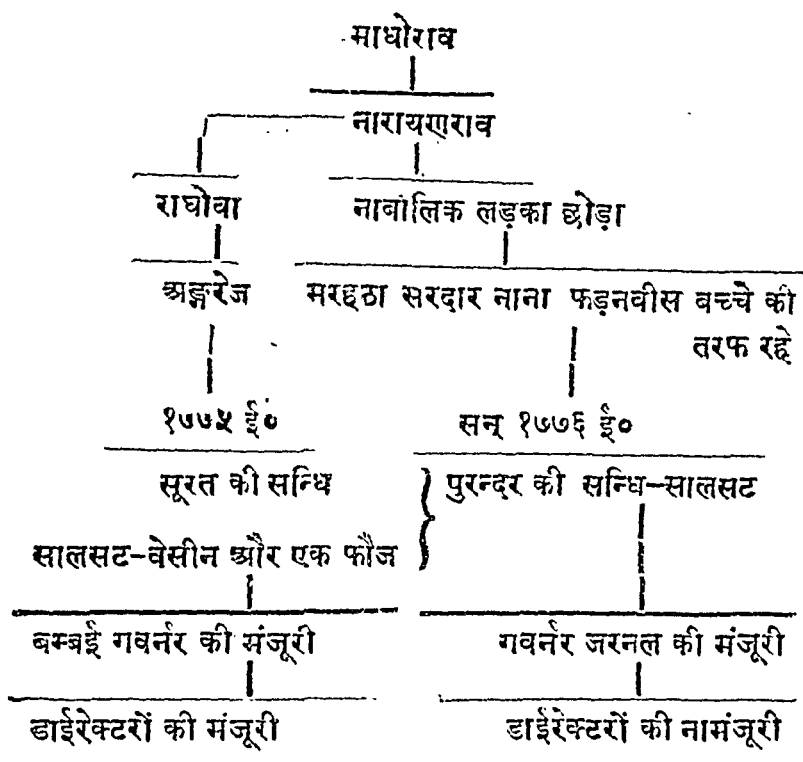
अङ्गरेजों का राघोवा का साथ होना

घटना:—(१) फड़नवीस का सिन्धिया, निजाम, भोंसला और हैदरअली से मेल। (२) अङ्गरेजों का इन्हें तोड़ना। (३) लड़ाई में अङ्गरेजों की हार। (४) कर्नल कामक का बड़गाँव पर सुलह करना। लेकिन वेसीन और ग्वालियर के किले अङ्गरेजों के हाथ में रहना।

फल:—अन्त में तंग आकर सन् १७८२ ई० में सालवाई पर दोनों का सन्धि करना। अङ्गरेजों का राघोवा से अलग होना।

(१) अलग होकर तीन लाख रुपया सालाना पेंसिन देना। (२) यह अहद होना कि मराठे और अङ्गरेजों का एक दूसरे के दुश्मनों की मदद न करना। (३) सालसट और वेसीन अङ्गरेजों के पास रहना।

मैसूर की दूसरी लड़ाई

समयः—सन् १७८० ई० से ८४ ई० तक।

पक्षः—हैदरअली और अँग्रेज।

कारणः—(१) सन् १७७१ ई० में हैदरअली को मरहठों के खिलाफ अँग्रेजों का मदद न देना। (२) अँग्रेजों का माही छीन लेना।

वृत्तान्तः—(१) हैदरअली का मद्रास पर हमला। (२) कर्नल वेली का मय चार हजार सिपाहियों के कत्ल होना। (३) वारेनहेस्टिंग्ज का सर आयर कूट को भेजना। (४) हैदरअली की हार। (५) सन् १७८२ ई० में हैदरअली का मारा जाना। ६—हैदर के वेटे टीपू का अँग्रेजों को हरा कर वेदनूर और मंगलोर का जीतना।

परिणामः—(१) इस बात से मद्रास के गवर्नर का घबराकर टीपू से मंगलोर की संधि करना। (२) आपस में जीते हुए देश लौटाना स्वीकार करना। (३) नन्दकुमार को फाँसी।

हेस्टिंग्ज का रुपये की कमी को पूरा करना

चेतसिंह से रुपया लेना | अवध की वेगम से रुपया लेना

वारेनहेस्टिंग्ज का स्तीफा:—(१) सन् १७८५ ई० में हेस्टिंग्ज़ का इस्तीफा देना। (२) मुकदमा चलाया जाना परन्तु निर्दोष साबित होना और उसे कम्पनी का पेंशिन देना।

हैस्टिंग्ज का चरित्र:—(१) गम्भीर, बुद्धिमान तथा धैर्यवान होना। (२) लालची होना। (३) चेतसिंह से रुपया वसूल करना ऐसे कामों को करके अपने जीवन पर धब्बा लगाना।

पिट इण्डिया बिल ऐक्ट

समय:—१७८४ ई०।

आवश्यकता:—(१) रेग्यूलेटिंग ऐक्ट के दोष नं० १, २ और ३ के अनुसार होना। (२) इससे शासन में गड़बड़ी देखकर इँगलैंड के प्रधान मंत्री पिटका माकूल प्रबन्ध के लिए एक ऐक्ट पास करना। जिसकी निम्नाङ्कित शर्तें होना जिससे कम्पनी के प्रबन्ध में बहुत तब्दीली होना ?

वृतान्त:—(१) हिन्दुस्तान का शासन बोर्ड आफ कंटरोल नाम की कम्पनी के सुपुर्द होना जिसके ६ मेम्बर थे। (२) गवर्नर जनरल की कौंसिल में एक मेम्बर की कमी। (३) इस समय गवर्नर जनरल के अधिकार बढ़ना। (४) बिला मंजूरी पार्लियामेंट हिन्दुस्तानी रईसों से लड़ाई या सन्धि न करना।

प्रभाव:—(१) इस ऐक्ट का यहाँ तक सफल होना कि १८५८ तक इसी के अनुसार प्रबन्ध होना। (२) इस बात से कि गवर्नर जनरल बिला पार्लियामेंट की मंजूरी के लड़ाई या संधि नहीं कर सकता, खराबी होना।

मैसूर की तीसरी लड़ाई

समयः—सन् १७९० से ९२ ईस्वी तक ।

पक्षः—पहलाः—टीपू-दूसराः—अंग्रेज, मराठे और निज़ाम ।

कारणः—(१) टीपू का अंग्रेजों से दुश्मनी रखना । (२) टीपू का मैसूर के आस-पास के देश जीतना और फौज की ताकत बढ़ाना । (३) सन् १७८९ ई० में त्रावनकोर के राजा पर टीपू का हमला करना । (४) अंग्रेजो का राजा की मदद करना ।

वृतान्तः—(१) दो वर्ष तक लड़ाई जारी रहना । (२) कार्नवालिस का बंगलोर जीतकर श्री रंगपट्टन की तरफ बढ़ना । (३) टीपू का हताश होकर सुलह करना ।

फलः—सन् १७९२ ई० में श्रीरंगपट्टन की संधि होना । (२) जिसके अनुसार टीपू का आधा राज्य और ३ करोड़ रुपया नकद लड़ाई का खर्चा देना । (३) १½ करोड़ रुपया नकद अदा करना और शेष को अपने बेटों को देना । (४) इस लड़ाई में मैसूर का उत्तर-पूर्वी हिस्सा निजाम को और पश्चिमी हिस्सा मराठों को मिलना । (५) टीपू की ताकत कम होना ।

इस्तमरारी प्रबन्ध

समयः—सन् १७९३ ई० ।

आवश्यकताः—मुगल साम्राज्य के बाद भी वारेन हेस्टिंग्ज के पंचशाला प्रबन्ध से ठेकेदारों का किसानों पर जुल्म ।

बन्दोवस्तः—कार्नवालिस का यह हाल देखकर जमींदारों और ठेकेदारों ही को जमीन दे देना और मालगुजारी और लगान सदा के लिए मुकर्रिर कर देना।

लाभः—(१) गवर्नमेंट बार बार के इन्तजाम से बच गई। (२) मालगुजारी के घटने बढ़ने का खटका न रहा। (३) जमींदार प्रसन्नचित्त और ब्रिटिश साम्राज्य के शुभचिंतक हो गये।

दोषः—(१) मालगुजारी का बढ़ना हमेशा के लिए रुकना। (२) इससे सरकार का नुकसान होना। (३) मर्जी के अनुसार किसानों से लगान वसूल करना और उन पर जुल्म करना।

लार्ड कार्नवालिस (१७८६—९३):—शासन सुधार, अदालती सुधार।

सरजानशोर (१७९३—९८):—(१) कार्नवालिस की नीति का अनुकरण (२) हस्तक्षेप न करना। (३) शान्त स्वभाव होना। (४) खरदा की लड़ाई।

सन् १७९८ ई० में भारत की दशाः—(१) नेपोलियन का भय। (२) अफगानिस्तान के बादशाह जमानशाह और टर्की के सुल्तान का और टीपू का बातचीत करना। (३) टीपू की ताकत। (४) मरहठा सरदारों का राज्य बढ़ना।

मैसूर की चौथी लड़ाई

समयः—सन् १७९९ ई०

पक्षः—पहला पक्षः—अँगरेज और निजाम, दूसरा पक्ष टीपू।

कारणः—टीपू की ताकत को बढ़ते हुए और उसका

फ़्राँसीसियों से मदद के लिए पत्र व्यवहार करते हुए देखकर वेलेजली का नाराज होना और निज़ाम की मदद से लड़ाई की तैयारी करना।

वृत्तान्तः—(१) जनरल होर्लस और स्टुअर्ड का सेनाएँ लेकर टीपू पर चढ़ना। (२) मलावली स्थान पर टीपू की हार। (३) अँगरेजी सेना का श्रीरङ्गपट्टन की तरफ बढ़कर और किले को घेर कर युद्ध करना। (४) हजारों मनुष्यों और टीपू का भी लड़ते हुए मारा जाना।

परिणामः—अँगरेजों का श्रीरङ्गपट्टन को जीतना। (२) मैसूर राज्य का बटवारा।

बटवाराः—उत्तर का कुछ भाग निजाम को, कुछ भाग अँगरेजों ने अपने राज्य में तथा कुछ इलाका पेशवा को। बाकी राज्य मैसूर के राजवंश के आदमी को (हैदरअली जिस वंश के राजा को मैसूर की गद्दी से उतारकर सुल्तान हुआ था)। मैसूर के मुसलमानी राज्य का अन्त। दक्षिण में अँगरेजों की धाक। (पेशवा की मृत्यु)।

टीपू का चरित्रः—(१) टीपू का विद्वान् होना। (२) कई भाषाओं का जानना। (३) एक सा व्यवहार करना।

टीपू की हार के दो कारण—(१) अङ्गरेजों की शक्ति का ठीक अनुमान न करना। (२) उसके मित्रों का साथ न देना।

अङ्गरेजी कम्पनी के राज्य का विकास—(१) सन् १७९९ ई० में तंजौर और सूरत का अङ्गरेजी राज्य में मिलाना। (२) वेले-

ज़ली का कर्नाटक छीन लेना। (३) इन सब राज्यों को मिला कर मद्रास अहाता बनाना। (सूरत मद्रास अहाते से अलग था)

सहायक सन्धि

वेलेज़ली की नीतिः—वेलेजली और इससे पहले क्लाइव।

शर्तें—(१) देशी राज्यों को अङ्गरेजों का आधिपत्य स्वीकार करना। (२) अपने खर्च से अङ्गरेजी सेना रखना (३) अङ्गरेजी सरकार की बिना आज्ञा किसी यूरोपीय अथवा विदेशी राज्य से सम्बन्ध न रखना ?

प्रभावः—(१) अङ्गरेजी राज्य की मजबूती होना। (२) देशी राजाओं का खोखला होना ?

सहायक सन्धि का प्रचारः—

१—निजाम का सन्धि मानना।

२—अवध नवाब का मानना और खर्चे में दोआबा के जिले देना।

३—पेशवाः—मरहठा सरदारों का आपस में झगड़ना, पेशवा का वेसीन के किले में शरण लेकर सहायक सन्धि मानना।

४— भौंसलाः—मरहठों की दूसरी लड़ाई में देवगाँव के स्थान पर सहायक सन्धि मानकर कटक और बरार देना।

५—सिन्धियाः—मरहठों की दूसरी लड़ाई में सुर्जी अर्जुन गाँव पर सन्धि करना।

गंगा यमुना के बीच का देश, राजपूताने का कुछ भाग अहमदनगर और भड़ौंच देना।

६—होल्करः—मरहठों की तीसरी लड़ाई में सुलह करना।

मराठों की दूसरी लड़ाई

समयः—सन् १८०३ ई० ।

पक्षः—पहला पक्षः-अङ्गरेज और दूसराः—मरहठा सरदार सिन्धिया, भौंसला, होल्कर ।

कारणः—पेशवा का सहायक सन्धि मानना ।

लड़ाई के स्थानः—(१) असी । (२) अरगाँव । (३) लासवाड़ी (अलवर रियासत में है)।

घटनाः—

दकनः—कर्नल वेलेजली और स्टीवेंसन का दक्षिण की ओर बढ़ना । (२) असी के स्थान पर मुठभेड़ । (३) मरहठों की हार (४) अरगाँव में भौंसला का हारना और देवगाँव के मुकाम पर सहायक सन्धि करके कटक और बरार के जिले देना ।

उत्तरी भारतः—(१) लार्ड लेक का उत्तर की तरफ बढ़ कर अलीगढ़ का किला जीतना । (२) तत्पश्चात् दिल्ली और आगरे पर अधिकार करना । (३) दिल्ली में शाह आलम के साथ अच्छा व्यवहार करना । (४) लेक का सिन्धया को लासवाडी (अलवर) के मुकाम पर हरा देना । (५) सिन्धिया का सुर्जी अर्जुन गाँव के स्थान पर सन्धि करना और गंगा यमुना का बीच का देश, राजपूताने का कुछ भाग, अहमदनगर और भड़ौंच के जिले अंङ्गरेजों को मिलना ।

फलः—(१) मरहठों का हारना । (२) भौंसला और सिन्धिया का सहायक सन्धि मानते हुए देश का बहुत सा भाग

देना। (३) भारत में अङ्गरेजों का रौब। (४) बहुत से राजपूत राजाओं का भी सन्धि करना। (५) ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार बढ़ना।

मरहठों की तीसरी लड़ाई

समयः—सन् १८०४ से ५ तक।

पक्षः—अङ्गरेज और मरहठों में से अकेला होल्कर।

कारणः—(१) इस समय तक होल्कर का आधिपत्य स्वीकार न करना। (२) होल्कर का उत्तरी हिन्दुस्तान में राजपूताने पर छापा मारना।

वृत्तान्तः—(१) लार्ड लेक के दिल्ली आने पर होल्कर का भरतपुर जाना। (२) सन् १८०४ ई० में लार्ड लेक का डीग की लड़ाई में होल्कर को हराना। (३) भरतपुर के किले का अङ्गरेजों के कब्जे में न आना। (४) भरतपुर के राजा का अंगरेजों से सन्धि करना। (५) होल्कर का पंजाब पहुँच कर सिक्खों को भड़काना। (६) अन्त में १८०५ में सन्धि करना।

परिणामः—(१) होल्कर का हार कर सन्धि करना। भरतपुर के राजा का भी संधि करना।

वेलेजली की नीति का परित्याग

(१८०५–१३ तक)

लार्ड कार्नवालिसः—लार्ड वेलेजली के बाद लार्ड कार्नवालिस का गवर्नर जनरल होकर आना। भारत में शान्ति स्थापित करने

की कोशिश करना। परन्तु कुछ ही महीनों के बाद ५ अक्टूबर सन् १८०५ को गाजीपुर में मरना।

सर जार्ज बार्लो:—(१८०५—७)

घटना:—(१) होल्कर से सन्धि और सिन्धिया को गोहद और ग्वालियर के किले लौटा देना। (२) सन् १८०६ में वेलोर का गदर होना।

लार्ड मिण्टो:—(१८०७—१३)

(१) लार्ड मिण्टो का भारत में आकर शान्ति स्थापित करने की कोशिश करना। (२) शान्ति स्थापित करने की कोशिश से मराठों का छोटे-छोटे राज्यों पर छापा मारना और जुल्म करना। (३) रणजीतसिंह के साथ सन्धि करना और सर चार्ल्स मेटकाफ को उसके पास भेजना। (४) सरहद की रक्षा:—काबुल और ईरान देशों में अपने दूत भेजना और सन्धि करना।

शान्ति प्रिय नीति का फल:—(१) शान्ति प्रिय नीति से अशान्ति का फैलना। (२) पिण्डारियों का जोर बढ़ना और देश में उनका लूट मार करना। (३) अन्त में लार्ड हेस्टिंग्ज का सन् १८१३ में अपनी नीति बदलना।

लार्ड हेस्टिंग्ज (१८१३—२३)

इसके समय की घटनाएँ:—

कम्पनी को आज्ञा पत्र:—(१) राजप्रबन्ध की ताकीद। (२)

तिजारत का ठेका टूटना। (३) शिक्षा उन्नति के लिए एक लाख रुपया मंजूर करना। (४) कम्पनी को बीस साल और शासन की इजाजत देना।

नीतिः—लार्ड वेलेजली की नीति का अनुकरण (शान्ति के खिलाफ)।

गोरखों की लड़ाई

समयः—सन् १८१४ ई० से १६ ई० तक।

पक्षः—गोरखे और अँगरेज।

कारणः—(१) गोरखों का हिन्दुस्तान की ओर बढ़कर बुतवल और श्योराज नामक गाँवों पर अपना अधिकार करना। (२) दो अँगरेज अफसरों को कत्ल करना।

घटनाः—(१) गोरखों से लड़ने के लिए चार अँगरेजी फौजों का रवाना होना। (२) तीन फौजों की हार। (३) चौथी का आक्टर लोनी के अधिकार में जीत।

परिणामः—गोरखों की हार। सिगौली की सन्धि।

सिगौली की सन्धिः—(१) कुमायूँ और गढ़वाल के जिले अँगरेजों को मिलना। (२) नैपाल राजा का एक अँगरेजी दूत रखना स्वीकार करना। छीने हुए गाँव वापिस लौटाना।

मराठों की चौथी लड़ाई

समयः—सन् १८१७ ई० से १८१८ ई० तक।

पक्षः—एक ओर अँगरेज, दूसरी ओर बाजीराव पेशवा, भौंसला, हुल्कर और सिन्धिया।

कारणः—(१) मरहठा सरदारों को वेलेजली की सन्धि से नाराज़ी। (२) पिण्डारियों के दमन से मरहठा सरदारों को नुकसान। (३) इसी समय में पेशवा को कठिन सन्धि मानने पर मजबूर करना।

वृत्तान्तः—पेशवाः—(१) पेशवा की फौज का पूना रेजीडेन्सी पर हमला। रेजीडेन्सी का मरहठों को पीछे हटाना। सन् १८१८ ई० में अष्टी और पौरी गाँव में पेशवा की हार।

परिणामः—(१) अन्त में अँगरेजों की शरण में आना। (२) आठ लाख रुपये सालाना पेन्शन पाकर बिठोल में रहना। (३) पेशवा के राज्य का अँगरेजी राज्य में मिलाना।

भौंसलाः—भौंसला का नागपुर रेजीडेन्सी पर हमला। लेकिन सीताबल्दी के मैदान में मरहठों की हार।

परिणामः—भौंसला को गद्दी से उतारना। उसके पोते को राजा बनाना और सन्धि करना।

होल्करः—जसवन्त राव होल्कर के मरने के बाद उसके बेटे मल्हार राव नाबालिग का गद्दी पर बैठना। राज्य का काम हुल्कर की रानी तुलसी बाई का करना। रानी का अँगरेजों से मिला होना। हुल्कर की फौज का मैदान में आना और लड़ाई होना। मरहठों का रानी को मारना और अँगरेजों से लड़ाई करना।

परिणामः—सन् १८१७ ई० में महीदपुर के पास हुल्कर की फौज की हार। मल्हारराव और अँगरेजों में सन्धि।

सिन्धियाः—सिन्धिया का मराठों से अलग रह कर राजपूताने पर रोब जमाना। लार्ड हेस्टिंग्ज का १८१७ ई० में उसे सन्धि करने पर मजबूर करना। और राजपूतों से अलग अलग रहने का वादा करना।

लड़ाई का परिणामः—(१) इस समय भारत में कोई अँगरेजों के मुकाबले का न होना। (२) कुल भारत पर अँगरेजों का रोब। (३) मरहठों का कतई पतन।

मरहठों के पतन के कारणः—(१) फौजी प्रबन्ध शिवाजी की तरह अच्छा न करना। (२) अङ्गरेजी तोपखाने से हिम्मत हारना। (३) प्रजा को आराम न पहुँचाना और लूट मार करना। (४) अन्य राज्यों के साथ बुरा बर्ताव करने से किसी का इनकी मदद न करना।

लार्ड हेस्टिंग्ज के शासन-सुधार

हेस्टिंग्ज ने अपनी बुद्धिमानी और होशियारी से सुप्रबन्ध के लिए कई शासन-सुधार किये।

१—मालगुजारीः—(१) आगरे के सूबे में मालगुजारी का उचित प्रबन्ध। (२) मालगुजारी के लिए नये नये कानून। (३) मद्रास में रय्यतवाड़ी बन्दोबस्त। (४) हिन्दुस्तानी हाकिमों के अधिकार बढ़ाना। (५) शिक्षा की उन्नति और अखबार निकाला जाना।

लार्ड एम्हर्स्ट (१८२३–२८)

१—ब्रह्मा की लड़ाई

समयः—सन् १८२३ ई० से १८२६ ई० तक।

पक्षः—अङ्गरेज और ब्रह्मा का राजा।

कारणः–(१) सन् १७६० ई० में जिस अलोम्प्रा नामी सरदार ने ब्रह्मा में स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया था उसके वंशजों का राज्य बढ़ाना। (२) सन् १८२३ ई० में ब्रह्मा वालों का शाहपुरी नामी अङ्गरेजी टापू पर आक्रमण। (३) पूछने पर ब्रह्मा के घमण्डी राजा का लड़ने को तैयार होना।

वृत्तान्तः—सर आर्चीबोल्ड केम्पविल का मय फौज के रंगून पहुँचना। रंगून पहुँच कर शहर को फतह करना। ब्रह्मा की फौज के सरदार महाबुन्देला का मारा जाना। केम्पविल का आवा की तरफ बढ़ना। यह देख कर राजा का यॉडबू पर सन्धि करना।

परिणामः—यॉडबू की सन्धि जिससे अराकान और तना-सरिम और कुछ दक्षिण के सूबों पर अङ्गरेजों का अधिकार होना। (२) १ करोड़ रुपया लड़ाई का खर्चा अङ्गरेजों को मिलना। (३) राजा का आसाम छोड़ देना। (४) अङ्गरेजो की पूर्वी सीमा सुरक्षित होना।

२—घटनाः—

भरतपुर का घेराः—१८२६ ई० में राजा का मरना। गद्दी के दो दावेदारों में झगड़ा होना। लार्ड केम्बरमियर का भरतपुर के किले

को सुरंग लगाकर उड़ा देना। भरतपुर का अँगरेजों के हाथ आना। लेकिन असली हकदार को गद्दी पर बैठाना,

लार्ड विलियम वेंटिङ्क के शासन सुधार

(१८२८—३५)

माली सुधारः—अफ्यून का ठेका देना। (२) सयुक्त प्रान्त और आगरा में मालगुजारी का ऐसा कायदा बनाना जिससे आमदनी बढ़े। (३) मद्रास में किसानों से लगान सीधा लेना। (४) संयुक्त प्रान्त में तीन साला वन्दोवस्त जारी करना।

फौजी सुधारः—(१) फौजी अफसरों का आधा भत्ता बन्द करना। (२) सेना में सिपाहियों की तनख्वाह बढ़ाना।

अदालती सुधारः—(१) कार्नवालिस की अदालतों के दोषों को दूर करना। (२) संयुक्त प्रान्त में हाईकोर्ट। (३) इलाहाबाद में बोर्ड आफ रेवेन्यू। (४) अदालतों में फारसी के बजाय उर्दू जबान। (५) हिन्दुस्तानियों के लिए सरकारी ओहदे मिलना।

मुल्की सुधारः—(१) सती प्रथा बन्द करना। (२) ठगों का नाश। (३) शिक्षा की उन्नति करना ?

देशी राज्यों में सुधारः—(१) मैसूर, अवध, तराई, कुचार, कुर्ग, ग्वालियर का इन्तजाम ठीक करना। (२) रणजीतसिंह के साथ सन्धि करना।

सर चार्ल्स मेटकाफ (१८३५—३६)

घटनाः—(१) अखबार छापना जारी करना। (२) अखबार

में स्वतन्त्रता लेकिन अपमान करने वाले और बुरे मजमून से मनाही करना।

नोटः—(सर चार्ल्स मेटकाफ के पहले सन् १८३३ का कम्पनी का चार्टर आया था। वह भूल से वहाँ नहीं लिखा गया यहाँ लिखा है।)

सन् १८३३ का कम्पनी का चार्टरः—(१) कम्पनी से व्यापार का अधिकार लेना और अन्य अँगरेजों को देना। (२) कम्पनी के राज्य में बीस वर्ष राज्य करना और बढ़ाना। (३) कम्पनी का केवल राज्य करना। (४) प्रजा के लाभ के लिए अच्छे अच्छे कानून बनाना। (५) शिक्षा की उन्नति। (६) भारतवासियों के लिए भवन मार्के के बड़े ओहदे मिलना। (७) गवर्नर जनरल की कौंसिल में एक कानूनी मेम्बर लार्ड मेकाले का बढ़ाना।

लार्ड आकलैंड (१८३६–४२)

अफगानिस्तान की दशाः—(१) रणजीतसिंह का अफगान-शाह से पेशावर लेकर कर लेना। (२) रूस और फारिस के प्रभाव की वजह से अफगानिस्तान से खतरा। (३) दोस्त मुहम्मद का शाहशुजा को गद्दी से उतारकर खुद का अमीर बनना (४) शाह-शुजा का अँगरेजों से पेन्शन पाना ?

अफगानिस्तान की पहली लड़ाई

समयः—१८३६–४० ई०।

पक्षः—एक ओर दोस्त मुहम्मद और पठान दूसरी ओर शाहशुजा, रणजीतसिंह और अँगरेज।

कारणः—(१) दोस्त मुहम्मद का अँगरेजों से मदद न पाकर रूस और फारिस से दोस्ती करना।

(२) आकलैंड का इससे खतरा पाकर शाहशुजा, रणजीतसिंह के बीच में शाहशुजा को फिर बादशाह बनाने का अहद करना।

आकलैंड की गलतीः—(१). स्वतन्त्र राज्य में दखल देना। (२) अफगानों का दोस्त मुहम्मद को चाहना।
(३) सिक्खों और अंग्रेजों की मदद से बादशाह बनाने में अफगानों की नाराजी होना। (४) रूसी दूत का वापिस आना। यह बातें होते हुए भी लार्ड आकलैंड का लड़ाई को तैयार होना।

घटनाः—अँगरेजी फौज का शाहशुजा के साथ बोलन से कन्दहार पहुँचना। कन्दहार और गजनी पर अँगरेजों की विजय। सन् १८३९ में दोस्त मुहम्मद का भागना। शाहशुजा का तख्त पर बैठना। मेकनाटन और अलेक्जेंडर का शाहशुजा की मदद के लिए रहना। (६) सन्१८४० में दोस्त मुहम्मद का अंग्रेजों की शरण में आना। (७) अफगानों का शाहशुजा से क्रुद्ध कर अलेक्जेंडर ब्रिन्स को मारना। (८) अकबरखाँ का मेकनाटन को मुलाकात करते समय मेकनाटन को मारना और अंग्रेजी फौज का कत्ल करना। (९) लार्ड एलिनबरा के समय में अंग्रेजी सेना का काबुल और गजनी पर दुबारा कब्जा करना। (१०) जनरल पोलक का बाला-हिसार के किले पर जीत का झंडा गाड़ना। (११) दोस्तमुहम्मद का काबुल जाने को आज्ञा लेकर उसे जीतना।

परिणामः—(१) शाहशुजा के कत्ल के बाद दोस्त मुहम्मद का

अमीर बनना। (२) लार्ड आकलैंड की गल्ती से रुपये और आदमियों का नुकसान होना।

सिन्ध के अमीरों के साथ लड़ाई

समयः—सन् १८४३ ई०।

पक्षः—एक ओर अंगरेज दूसरी ओर सिन्ध के अमीर।

कारणः—लार्डएलिनबरा का सिन्ध के अमीरों का अफगानों के साथ शरीक होने का इल्जाम लगाना।

वृतान्तः—(१) सरचार्ल्स नेपियर का फौज लेकर सिन्ध पहुँचना। (२) सिन्धियों का रेजीडेन्सी पर हमला और अंगरेजों को वहाँ से निकालना। (३) म्यानी के स्थान में सिन्ध के अमीरों की हार होना।

परिणामः—(१) सिन्ध का अंग्रेजी राज्य में मिलाना। (२) अमीरों को देश निकाला देना। (३) नेपियर को लूट के माल से सात लाख रुपया मिलना। लार्ड एलिनबरा का १८४२ से ४४ तक रह कर सन् १८४४ में लौटना।

लार्ड हार्डिङ्गज (१८४४-४८ तक)

सिक्खों की उन्नतिः—(१) गुरू नानक को सिक्ख धर्म का प्रचार करना। (२) जहाँगीर के राज्याभिषेक पर खुसरो की बगावत में अर्जुन का मदद देना जिससे जहाँगीर की आज्ञा से फाँसी होना। (३) सिक्खों और मुसलमानों में अब से कट्टर शत्रुता होना। (४) बदला लेने को सिक्खों का ताकत बढ़ाना। (५) औरंगजेब का

तेगबहादुर को कत्ल करवाना। (६) सिक्खों का और भी आग-बबूला होना। (७) तेगबहादुर के लड़के गोविन्दसिंह का सिक्खों को एक लड़ाका कौम बनाना और अपनी ताकत बढ़ाना। (८) गुरुगोबिन्दसिंह का खालसे की नींव डालना। (६) मुगल-साम्राज्य के कमजोर होने से इनका खुदमुख्तार होना। (१०) गुरु बन्दा के कत्ल के बाद इस कौम का कई हिस्सों में बँटना और मिसल कायम होना। (११) रणजीतसिंह का बारह मिसलों को मिलाकर स्वयम् लाहौर का राजा होना और अंगरेजों से दोस्ती करना। (१२) इस जमाने में सिक्खों का उन्नति के शिखर पर होना।

रणजीतसिंह का शासन प्रबन्धः—लगान, जिलों का प्रबन्ध, हिसाब की जांच, कानून फौजदारी, फौज का इन्तजाम करना।

सिक्खों की पहली लड़ाई

समयः—सन् १८४५ से ४६ तक।

पक्षः—एक ओर अंग्रेज थे दूसरी ओर खालसा, गुलाबसिंह और रानी झिंडन का दल।

कारणः—(१) रणजीतसिंह की मृत्यु होने पर अंगरेजों की हद बढ़ते देख कर सिक्खों का उखड़ना। (२) खालसा गिरोह का लड़ने के शोक में सतलज पार उतरना। (३) हार्डिञ्ज का लड़ाई के लिए तैयार होना।

वृतान्तः—मुदकी, फीरोजहर, अलीवाल और सुवराँव की

लड़ाईयों में बड़ी कठिनाइयों से सिक्ख सरदारों की कायरता से हार होना।

परिणामः—(१) सिक्खों का लाहौर में सुलह करना। (२) सतलज और व्यास के बीच का देश और १½ करोड़ रुपया अंगरेजों को नकद मिलना। (३) गुलाबसिंह डोंगरे को महाराजा का पद मिलना। (४) पंजाब नाबालिग दिलीपसिंह को मिलना। (५) लाहौर दरबार में एक अंग्रेजी रेजीडेन्ट रहना। (६) सिक्ख फौज में कमी होना।

हार्डिङ्ग्ज के सुधार

(१) रेलवे जारी करना। (२) गंगा से नहर निकालना। (३) शिक्षा में उन्नति करना। (४) लड़कियों को मारने की और सती की कुप्रथा को रोकना।

लार्ड डलहौजी (१८४८—५६ ई०)

नीति बदलना और अंग्रेजी राज्य बढ़ाने की इच्छा।

सिक्खों की दूसरी लड़ाई

समयः—सन् १८४८-४९ ई० तक।

पक्षः—एक ओर अंग्रेज और दूसरी ओर सिक्ख थे।

कारण—(१) सिक्ख और अंग्रेजों का आपस में ताकत अजमाना। (२) लाहौर दर्बार और मूलराज से हिसाब चुकता करने को कहना। (३) मूलराज का दो अंग्रेज अफसरों को कत्ल करना। लड़ाई के लिए तैयार होना और सारे सिक्खों को धर्म का न्यौता देना।

वृतान्तः—(१) तमाम सिक्खों का आपस में मिलना। (२) शेरसिंह अंग्रेजी अफसर का भी मय फौज सिक्खों में मिलना। मूलराज का दोस्त मुम्हम्मद और अफगानों को पेशावर का लालच देकर मिलाना। (४) रामनगर में अंग्रेजों की हार होना। (५) सादुल्लापुर में दोनों का बराबर रहना। (६) चिलियानवाला में सिक्खों की बड़ी जीत और चार तोपें और तीन झंडे अंग्रेजों के छीनना। (७) २३५७ सिपाही और ८६ अफसर अंग्रेजों के काम आना। (८) आखिर में गुजरात में सरह्यूगफ के तोपखाने से अँगरेजों की विजय होना। अफगान फौज का पंजाब से निकालना।

परिणामः—(१) पंजाब का अंग्रेजी राज्य में मिलाना। (२) दिलीपसिंह को ५० लाख रुपया सालाना पेन्शन देना। (३) सिक्ख सरदारों की जागीर जब्त करके उनको पेन्शन देना। (४) मूलराज को फाँसी होना।

पंजाब में नया शासनः—(१) शासन के लिए बोर्ड सर हेनरी-लारेंस का अध्यक्ष होना। (२) ज़िलों में अदालतें रखना। (३) पैदावार का ⅙ भाग लेना। (४) नहर जारी करना। (५) बहुत से महसूल और बुरी प्रथा बन्द करना। (६) नई अदालतें और मदर्से कायम होना।

ब्रह्मा की दूसरी लड़ाई

समयः—१८५२ ई०।

पक्षः—अंग्रेज और ब्रह्मा का राजा।

स्थानः—मर्तवान और रंगून।

कारणः—(१) ब्रह्मा के राजा का पहली लड़ाई की शर्तों को न मानकर अंग्रेज व्यापारियों के साथ बुरा वर्ताव करना। (२) अंग्रेज कप्तान की गिरफ्तारी सुनकर लार्ड डलहौजी का लड़ाई के लिए तैयार होना। (३) लड़ाई के रोकने में राजा का भी कोई उद्योग न करना।

वृतान्तः—(१) मर्तबान और रंगून पर अंग्रेजों का अधिकार होना। (२) आवा पर चढ़ाई में सोच विचार करना।

परिणामः—(१) लड़ाई से घबराकर राजा का सुलह करना। (२) पीगू का सूबा अंग्रेजों को मिलना। (३) पूर्वी सीमा का सुरक्षित होना।

डलहौजी की पौलिसीः—(१) अंग्रेजी राज्य के बढ़ाने की इच्छा। (२) डलहौजी का चाहना कि मुल्क में सुप्रबन्ध कायम हो ? और यह खयाल करना कि यह प्रबन्ध ब्रिटिश सरकार ही कर सकेगी, देशी रियासतें नहीं ?

पोलिसी का असरः—प्रजा परः—(१) प्रजा की तरक्की और आराम पाना। (२) लेकिन स्वतंत्रता छिन जाने से प्रजा की वीरता, उत्साह, स्वाभिमान का नष्ट होना।

रईसों परः—(१) तमाम रईसों का इस कानून का विरोध करना (२) अलग किये हुए रईसों का आगे चलकर बगावत करना।

देशी राज्यों का अंग्रेजी राज्य में मिलानाः—पंजाब (१८४६), पीगू (१८५२) अंग्रेजी राज्य में मिलाना। जैतपुर-सम्भल-

पुर (१८४६), उदयपुर (१८५२), झांसी (१८५३) नागपुर (१८५४) गोद लिये हुए को वारिस न मानकर इनके राज्य मिलाना। बद-इन्तज़ाम से (१८५६ में) अवध का राज्य अंग्रेजी राज्य में मिलाना।

शासन-सुधारः—(१) शिक्षा की उन्नति और शिक्षा विभाग कायम होना। (२) महकमा इमारत कायम करना (जिसमें सड़कों व नहरों का काम होता था)। (३) व्यापार और कृषि की उन्नति से आमदनी बढ़ना। (४) रेल, तार, डाक आदि का प्रबन्ध करना। (५) हर भारतवासी के लिये योग्य होकर ओहदे पाना।

सन् १८५३ ई० का चार्टर

(१) इङ्गलिस्तान की परीक्षा पास करके प्रत्येक भारत-वासी को नौकरी मिलना। (२) बंगाल, बिहार, उड़ीसा के लिए नया गवर्नर नियत होना। (३) कम्पनी के शासन की मियाद बढ़ाना। (४) कौंसिल के कानूनी मेम्बर का हर विषय में राय देना। (५) कानून की कमेटी बनाये जाने का निश्चय करना सन् १८५६ में डलहौजी का इङ्गलैंड लौट जाना।

३—वायसराय लार्डकेनिङ्ग (१८५६—६२)

गदर का समयः—सन् १८५७ ई०।

कारणः—(१) डलहौजी के शासन का ढंग (२) गोद न लेने की इज़ाजत न देकर हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप। (३) रेल, तार, डाक इत्यादि से खतरा। (४) नाना की पेंशन बन्द करना। (५) झाँसी,

नागपुर, अवध के राजाओं व नवाबों का नाराज होना। (६) बंगाल के फौजी सिपाही जो कि अवध के रहने वाले थे उनका नाराज होना। (७) नये मदर्से और अस्पतालों से ईसाई होने का ख्याल। (८) कारतूसों का इस्तेमाल।

गदर का आरम्भः—(१) मेरठ, देहली, कानपुर, लखनऊ में भयानक स्थिति (२) शेप और जगहों में मारकाट।

गदर का दबाया जानाः—जनरल हेवलाक का नाना फड़नवीस को हराना। (२) सिक्खों की मदद से देहली का घेर लेना। (३) बहादुरशाह को रंगून में नजरबन्द करना। (४) उसके दो बेटों का मारा जाना। (५) लखनऊ रेजीडेन्सी में मदद पहुँचाना। (६) झाँसी की रानी का हारना। (७) ताँत्याटोपी और रानी का ग्वालियर पर हमला करना। (८) सिन्धिया को वहाँ से निकालना। (६) आखिर में रानी का मारा जाना। (११) ताँत्याटोपी को फाँसी होना। (११) सिक्ख और गोरखों की मदद से गदर का दबाया जाना।

लार्डकेनिङ्ग—वाइसराय प्रथम

ऐक्ट फार दी बेटर गवर्नमेण्ट आफ इंडियाः—

समयः—सन् १८५८ ई०।

आवश्यकताः—(१) गदर। (२) गदर के कारण जो कम्पनी से सम्बन्ध रखते हैं।

शर्तेंः—(१) कम्पनी का शासन जो प्रारम्भ के ६० वर्ष तक बोर्ड आफ डाईरेक्टर और १७८६ से बोर्ड आफ कन्टरोल के अधीन था छीन लेना। (२) हिन्दुस्तान की निगरानी के लिए

इंडिया कौंसिल का बनना। (३) इंडिया कौंसिल का सभापति एक सेक्रेटरी आफ स्टेट यानी भारतमन्त्री होना। (४) विक्टोरिया की घोषणा—

समयः—१८५८ ई०।

घोषणाः—(१) एकसा व्यवहार करना। (२) हर योग्य पुरुष को ओहदे मिलना। (३) धर्म में स्वतंत्रता होना। (४) गोद लेने की इजाज़त होना। (५) रियासतों से दोस्ताना सम्बन्ध स्थापित करना।

शासन-सुधारः—क़ानूनी सुधारः—(१) १८५६ में जाब्ता दीवानी। (२) १८६० में ताजीरात हिन्द, १८६१ ई० में जाब्ता फौजदारी कायम होना। (३) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में हाईकोर्ट स्थापित होना। (४) शिक्षा की उन्नति होना। (५) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में १८५८ में यूनीवर्सिटियाँ कायम होना। (६) कम्पनी और मलिका की फौज का मिलाना। (७) काश्तकारों के अधिकारों को सुरक्षित रखना।

माली सुधारः—(१) गदर के खर्चे की वजह में नये महसूल लगाना। (२) फौज का खर्च कम करना। (३) इनकमटैक्स लगाना।

इंडिया कौंसिल ऐक्ट

समयः—१८६१ ई०।

शर्तेंः—(१) वाइसराय की मदद के लिए एक्जीक्यूटिव या प्रबन्धकारिणी कौंसिल का बनना। (२) लेजिस्लेटिव कौंसिल या कानून बनाने वाली सभा का बनना। (३) हिन्दुस्तानियों का देशी रीति-रिवाज के अनुसार कानून बनाने में शरीक होना। (४) हिन्दुस्तानियों को शासन में भाग मिलना।

नोटः—कानून बनाने के लिये मेम्बरों की संख्या अवश्य बढ़ना परन्तु गवर्नमेन्ट के अधिकार ज्यूँ के त्यूँ रहना।

कैनिङ्ग का लौटना और उसकी मृत्यु-(१८६२ ई०)

लार्ड एलिगनः—लार्ड एलिगन का दूसरा वाइसराय हो कर आना। पंजाब में धर्मशाला नामक स्थान पर मृत्यु होना।

लार्ड लारेंस (१८६४—६६ तक)

अफगानिस्तान का झगड़ाः—(१) सन् १८६३ में दोस्त मुहम्मद का मरना। (२) इसके छोटे बेटे शेरअली का अपने भाइयों से जीत कर अमीर बनना। (३) लार्ड लारेंस का अमीर मानना और मित्रता का व्यवहार करना। सन् १८६४ ई० में भूटान की लड़ाई होना।

१८६६ में उड़ीसा का अकालः—अकाल को रोकने के लिए फेमिन इंश्योरेन्स फन्ड कमीशन का बैठना। और अकाल से बचने की तरकीबें सोचना।

लार्ड मेयो—(१८६६—७२)

अफगानिस्तानः—(१) मेयो का अम्बाला दरबार में शेरअली से मुलाकात कर के उसे प्रसन्न करना लेकिन सुलह न होने पर अमीर का नाराज ही रहना। (२) अलवर और काठियावाड़ के बुरे प्रबन्ध को दूर करना। (३) ड्यूक आफ एडिनबरा का आगमन और रियासतों से सम्बन्ध स्थापित करना।

शासन सुधारः—(१) सूबे की गवर्नमेण्टों को अपने आय और व्यय का अधिकार मिलना जिससे सूबों में अच्छा प्रबन्ध होना।

अफगानों ने खैवर दर्रे से आगे न बढ़ने दिया। लार्ड लिटन ने इस पर लड़ाई छेड़ दी।

घटना व परिणामः—अँगरेजी सेना अफगानिस्तान में जा पहुँची। शेरअली भाग गया और उसका बेटा याकूबखाँ अमीर हो गया। उसने गण्डक नामक स्थान पर १८७९ ई० में सन्धि कर ली, और एक अँगरेजो राजदूत रख लिया।

अफगानिस्तानों की तीसरी लड़ाई

समयः—सन् १८७९ से ८१ तक।

पक्षः—एक ओर अँगरेज दूसरी ओर याकूबखाँ और अफगान।

कारणः—(१) अफगानों का रेजीडेन्ट को मार डालना। लार्ड लिटन का फौज भेजना।

वृतान्तः—(१) जनरल स्टुअर्ट और रावर्टसन का कन्दहार व कावुल पर अधिकार करना। (२) याकूबखाँ को गद्दी से उतारना और हिन्दुस्तान भेजना। (३) उसके छोटे भाई अय्यूबखाँ का राज सँभाल कर लड़ाई की फिर तैयारी करना। (४) लेकिन रावर्टसन का फिर हराना।

परिणामः—(१) शेरअली के भतीजे अब्दुर्रहमान को अमीर बनाना (मानना)। (२) उससे वादा करना कि वगैर इजाज़त गवर्नमेंट के विदेशों से सम्बन्ध न रखेंगे (रखना) (३) सब पर अँगरेजों का प्रभाव छाना। (४) विलोचिस्तान में खानक़ात से

सन्धि करना। (५) क्वेटा, कुरम में अँगरेजी फौज रहना। (६) अफगानिस्तान की बाहिरी पोलिसी पर अँगरेजों का अधिकार होना।

लार्ड डफरिन (१८८४—८८)

ब्रह्मा की तीसरी लड़ाई

समयः—१८८५ ई० ।

पक्षः—अँग्रेज और ब्रह्मा का राजा।

कारणः—(१) ब्रह्मा के राजा थीबो का फ्रांस से सन्धि करना और उन्हें व्यापार में मदद देना। (२) अंग्रेज व्यापारिक कम्पनी पर २३ लाख रुपया जुर्माना करना। (३) अंग्रेज अफसरों का कैद करना।

घटनाः—लार्ड डफरिन का लड़ाई करना।

परिणामः—(१) थीबो का भागना। (२) सन् १८८६ में उत्तरी ब्रह्मा को अंग्रेजी राज्य में मिलाना। (३) चीन और श्याम आदि देशों से सम्बन्ध होना।

इंडियन नेशनल काँग्रेस

स्थापनाः—(१) अंग्रेजी शिक्षा से नये विचार पैदा होना। (२) हिन्दुस्तानियों का पश्चिमी साइंस और इतिहास को पढ़कर स्वतंत्रता का विचार करना। (३) लार्ड रिपन का म्युनिसपिल्टियों और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड खोल कर भारतवासियों को स्वराज्य का खयाल दिलाना। (४) छूत-अछूत और जात-पांत का विचार दूर होना। (५) ब्रह्म समाज-आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसा-

इटी का लोगों के विचार बदलना। इन बातों से दिसम्बर सन्-१८८५ ई० में ब मुकाम बम्बई में इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना करना।

कार्य-कर्ता:—(१) दादा भाई नौरोजी, काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग फीरोज शाह महता, उमेशचन्द्र बनर्जी, ऐ० ओ० ह्यूम और सर विलियम वेडरवर्न का मुख्य होना। इनके अतिरिक्त ७० मेम्बर और होना। जिनकी संख्या बाद में बढ़ना।

मांग:—(१) सिविलसर्विस की परीक्षा इङ्गलैंड और भारतवर्ष दोनों जगहों में होना। (२) फौज का खर्च कम किया जाना। (३) शराब पीना और नमक का महसूल बन्द करवाना। (४) हिन्दुस्तानियों को हथियार रखने की इजाजत देना। (५) कानूनी कौंसिलों में भारतवासियों मेम्बरों की संख्या बढ़ना। (६) बड़े-बड़े ओहदे भारतवासियों को मिलना।

फल:—काँग्रेस के जल्से हर साल बड़े दिन की छुट्टियों में होना। (२) तमाम देश पर इसका प्रभाव फैलना, और धीरे-धीरे स्वराज्य की मांग जोरों से होना (जैसा कि आगे आयगा।)

३:—पब्लिक सर्विस कमीशन:—सन् १८८६ ई० में सरकारी नौकरियों की तरतीब के लिए एक कमीशन पास होना।

इसके अनुसार (१) बड़े-बड़े ओहदे अँग्रेजों के पास रहना इस पर कांग्रेस का ऐतराज करना।

४:—सन् १८८५ ई० में किले ग्वालियर की वापिसी होना।

५:—लेडी डफरिन फण्ड:—लार्ड डफरिन की लेडी का इस

फण्ड को कायम करना, हिन्दुस्तानी औरतों के इलाज के लिए एक विलायत से लेडी आना।

लार्ड लेन्सडोन (१८८८—९४)

१:—खानक्लात से संधि और उत्तरी-पश्चिमी सरहद्दी सूबे का इन्तजाम करना।

२:—शासन-सुधार:—(१) कॉंग्रेस के आन्दोलन से सन् १८९२ में कानूनी कौंसिलों में सुधार होना इससे पहले गवर्नमेन्ट का मेम्बरों का चुनना। लेकिन अब म्युनिसपिल्टियों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के जरिये से चुना जाना।

२:—मेम्बरों को सवाल करने और सालाना बजट पर बहस करने का अधिकार मिलना।

लार्ड-एल्गिन (१८९४-९९ तक)

बम्बई में लेग का फैलना, जिसमें हजारों आदमियों का मारा जाना।

लार्ड कर्ज़न (१८९९-१९०५)

पोलिसी:—(१) डलहौजी की तरह से लार्ड कर्जन का भी अँग्रेजों का शुभचिन्तक होना। (२) अपनी योग्यता पर घमंड होना। (३) हिन्दुस्तानियों की राय पर कुछ ख्याल न करना। पोलिटिकिल खयालात नापसंद होना। इन बातों से भारतवासियों और कर्जन में अनबन होना।

१:—अकाल:—(१८९९-१९००) देश में कठोर दुर्भिक्ष पड़ना।

गुजरात की बरबादी होना (३) सर ऐएटी मेकडानल की अध्यक्षता में एक कमीशन का मुकर्रिर होना।

२:—सरहदी-रक्षाः—(१) अब्दुर्रहमान का सन् १६०१ में मरना। (२) हबीबुल्ला का अमीर होना। (३) उत्तरी-पश्चिमी सरहदी सूबा अलग बनना और वहाँ चीफ कमिश्नर नियत होना। (३) तिब्बत के लामा और रूसियों में बातचीत होती देख कर अंग्रेजी फौज का लासा जाना। लामा का डर कर आधीनता मानना।

३:—दिल्ली-दर्बारः—२२ जनवरी सन् १६०१ को विक्टोरिया की मृत्यु होने पर सप्तम एडवर्ड का गद्दी पर बैठना।

२:—१६०३ में इसकी ताजपोशी के लिए दिल्ली में दर्बार होना।

३:—कांग्रेस का इसका विरोध करना।

शासन-सुधारः—(१) पंजाब में भूमि-रक्षा कानून बनाया जाना (कर्जे में किसानों से जमीन नहीं ली जा सकती)।

२ कृषि-उन्नतिः—सहकारी समितियाँ जो जमींदारों को कर्ज देती थीं, स्थापित होना। (२) कृषि-विभाग खुलना।

३ शिक्षा-उन्नतिः—सन् १६०४ के कानून से यूनीवर्सिटियों में सुधार होना। (२) शिमले में कान्फ्रेंस की ओर से डाइरेक्टर 'जनरल' का मुकर्रिर होना।

४ फौज-पुलिस का सुधारः—सिपाहियों की तनख्वाह बढ़ाना। (२) फौज की शिक्षा का प्रबन्ध करना।

५ देशी राज्यः—(१) राजकुमारों की शिक्षा के लिए प्रबन्ध करना। (२) खास-खास जगहों में राजकुमारों को फौजी शिक्षा दिलाना।

६ व्यापार-उन्नतिः—नया महकमा विभाग खोलना। (२) नमक का टैक्स बन्द करना।

७ बंगाल के दो भागः—(१) पूर्वी हिस्सा आसाम के साथ मिलाना। (२) पश्चिम में बङ्गाल का सूबा रह जाना।

८ इमारतों की हिफाजतः—पुरानी इमारतों की हिफाजत के लिए महकमा इमारत (आर्क्यालोजीकल डिपार्टमेंन्ट) स्थापित होना।

कर्जन का इस्तीफाः—फौजी प्रवन्ध के बारे में लार्ड किचनर और कर्जन में मतभेद होना। (२) अँग्रेजी गवर्नमेंट का कर्जन की राय न मानना, इस पर इस्तीफा देकर १९०५ ई० में लौटना।

लार्ड मिण्टो (१९०५—१०)

१ इण्डियन-नेशनल कांग्रेस का आन्दोलनः—

कारणः—(१) लार्ड कर्जन की पौलिसी। (२) बङ्गाल पब्लिक का आन्दोलन करना। (३) जापान का रूस पर विजय प्राप्त करना जिससे भारत-वासियों का उभरना। इन बातों से काँग्रेस का फिर से आन्दोलन मचाना।

कांग्रेस की दो पार्टियाँः—दो पार्टियों का मुकर्रिर होना। (१) गरम दल। (२) नरम दल।

गरम दलः—(१) गरम दल वालों का श्री तिलक और लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में स्वराज्य माँगना। (२) १९०६ ई० में विदेशी चीजों तथा सरकारी पदों का बाईकाट होना। (३) इससे भारत में सनसनी फैलना।

नरम दलः—नरम दल वालों का आजिजी से स्वराज्य

माँगना। आखिर में नरम दल वालों का काँग्रेस से अलग होना। गरम पार्टी वालों का फिर नरम दल वालों से मिलना।

मिण्टो-मार्ले सुधार

समयः—१९०९ ई०

आवश्यकताः—(१) सन् १९०५ ई० में लार्ड मिन्टो का वाइसराय होकर आना और लार्ड मार्ले का भारत-मन्त्री होना। (२) भारत के आन्दोलन का मार्ले पर असर और मार्ले का हिन्दुस्तानियों को कुछ स्वराज्य दिलाने के लिए पार्लिया-मेंट में रहना। इस पर गवनर्मेन्ट का सुधार करना और इस सुधार का नाम "मिंटोमार्ले सुधार" होना।

सुधारः—(१) एक्जीक्यूटिव कौंसिल में भारतीय मेम्बरों का होना जिसमें पहला भारतीय मेम्बर लार्ड सिनहा था। (२) लेजिस्लेटिव कौंसिल में मेम्बरों की संख्या ६० होना जिनमें २५ भारतीय शेष गैर सरकारी होना। (३) गैर सरकारी मेम्बरों के अधिकार बढ़ाना और उन्हें सालाना बजट पर बहस करने का अधिकार देना। (४) मुसलमानों को अलग चुनाव का अधिकार मिलना। (५) सूबों की कौंसिलों में भी सुधार होना।

प्रेस ऐक्टः—इसी सिलसिले में प्रेस ऐक्ट का पास होना। जिसकी मन्शा अखबारों को राजनीतिक आन्दोलन फैलाने से रोकना था।

लार्ड हार्डिञ्जः—(१९१०—१६)

देहली-दरबारः—(१) १९१० ई० में सप्तम एडवर्ड की मृत्यु के बाद जार्ज पञ्चम का बादशाह होना। (२) १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० को देहली में इनकी ताजपोशी के लिए दरबार होना। (३) सम्राट और सम्राज्ञी दोनों का दरबार में शरीक होना।

सम्राट की घोषणाः—(१) कलकत्ते से देहली राजधानी बनाया जाना। (२) बंगाल और बिहार का अलग-अलग सूबा बनाना। (३) ५० लाख रुपया शिक्षा के लिए मंजूर करना।

हार्डिञ्ज के सुधारः—(१) पब्लिक सर्विस कमीशन कायम होना (सरकारी नौकरियों की तरतीब के लिए) (२) इण्डस्ट्रीयल कमीशन कायम होना (हिन्दुस्तानियों की दस्तकारी, व्यापार की उन्नति के लिए) (३) बंगाल, बिहार और आसाम के सूबे अलग-अलग होना। (४) शिक्षा की उन्नति होना।

यूरोपीय महायुद्ध

समयः—१९१४ ई० से १९१९ ई० तक।

पक्षः—एक ओर सर्विया, रूस, फ्राँस, वेल्जियम, इंगलैंड, भारत, अमेरिका, इटली और यूनान। दूसरी ओर आस्ट्रिया, जर्मनी, बलगेरिया और टर्की।

कारणः—(१) आस्ट्रिया के राजकुमार को सर्विया वालों का कत्ल करना। (२) सर्विया वालों का कुछ शर्तानुसार आस्ट्रिया से माँफी चाहना परन्तु आस्ट्रिया का खामोश न रहना। (३) जर्मनी और इटली को आस्ट्रिया का मदद को लिखना। (४) जर्मनी का तैयार होना लेकिन इटली का खामोश होना।

वृतान्तः—(१) लड़ाई का छिड़ना। (२) हिन्दुस्तान का भी मदद देना। (३) राजाओं, नवाबों और रईसों का खुद इस लड़ाई में शामिल होना। (४) हिन्दुस्तान का भी ८ लाख सिपाही, ४ लाख रंगरूट और १० लाख पोंड रुपया देना। (५) प्रथम जर्मनी आदि का जीतना। बाद में विपक्षियों का जीतना।

परिणामः—(१) पश्चिमी एशिया को जीतता हुआ देख कर टर्की और बलगेरिया का अपने देश के भय से सुलह की बात-चीत करना और आखिर में इन दोनों का लड़ाई से अलग होना। (२) अब आस्ट्रिया और जर्मनी का अपने को कम ताकतवर देख कर आस्ट्रिया का ३० अक्टूबर को और जर्मनी का ११ नवम्बर को ११ बजे सुलह करना। (३) जर्मनी, टर्की और रूस का विस्तार कम किया जाना। (४) जर्मनी और आस्ट्रिया से लड़ाई का हर्जाना वसूल किया जाना।

स्वराज्य की माँग

(१) यूरोपीय महायुद्ध के समय कांग्रेस और मुस्लिम-लीग दोनों का स्वराज्य माँगना और काँग्रेस की सब पार्टियों का एक होना। (२) श्रीमती ऐनीबेसेंट और श्रीतिलक, काग्रेंस और मुस्लिमलीग सब का स्वराज्य माँगना लेकिन सहायता करने से हाथ न खींचना।

लार्ड चेम्सफोर्ड (१९१६—२१ ई०)

माँटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार

समयः—१९१९ ई०।

आवश्यकताः—(१) कांग्रेस, मुस्लिमलीग इत्यादि के स्वराज्य

माँगने पर इनका ध्यान रखना। (२) १६१६ में मिस्टर मांटेग्यू का भारत मंत्री होना और धीरे धीरे पार्लियामेंट में हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने को कहना। (३) इसके बाद लार्ड चेम्सफोर्ड की सलाह से एक सुधार की स्कीम बनना। (४) हिन्दुस्तानियों के लड़ाई में मदद देने से इस स्कीम का मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड के नाम से पार्लियामेंट में बहुमत से पास होना।

सुधार—(१) एक्जीक्यूटिव कौंसिलः—इस में हिन्दुस्तानियों की संख्या बढ़ना और तीन हिन्दुस्तानी मेम्बर होना।

(२) लेजिस्लेटिव कौंसिलः—इस कौंसिल के दो हिस्से होना। (१) लेजिस्लेटिव असेम्बली। (२) कौंसिल आफ स्टेट।

(१) लेजिस्लेटिव एसेम्बली में १४२ मेम्बर होना जिसमें १०२ रिआया के चुने हुए होना। (२) कौंसिल आफ स्टेट में ६० मेम्बर होना जिसमें ३१ गैरसरकारी होना। (३) दोनों कौंसिलों को ३ साल बाद अपना प्रधान चुनने का अधिकार मिलना।

(३) सूबे की कौंसिलः—सूबों में प्रत्येक दो कौंसिल होना। (१) एक्जीक्यूटिव कौंसिल जिसमें आधे हिन्दुस्तानी मेम्बरों का अनिवार्य रूप से होना (२) लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बरों की तादाद में बढ़ोतरी होना।

(४) सूबे का प्रबन्धः—सूबे का प्रबन्ध दो हिस्सों में होना। (१) गवर्नर और उसकी एक्जीक्यूटिव कौंसिल के अधिकार में जिसमें मालगुजारी, रुपये-पैसे, इन्साफ और जेल का प्रबन्ध होना। (२) वजीरों के अधिकार में—जिसमें शफा-

खाने, व्यापार, दस्तकारी, म्युनिसपिल्टियाँ और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का प्रबन्ध। (३) मेम्बरों को सालाना बजट पर बहस करने का अधिकार मिलना।

५ भारत-सेक्रेटरी की कौंसिलः—जिसमें हिन्दुस्तानियों की संख्या बढ़ाना।

६ चेम्बर-ओफ-प्रिन्सः—रियासतों की देख रेख के लिए देशी रईसों की एक सभा बनाना।

प्रभावः—हिन्दुस्तानियों को राज्य-शासन में भाग मिलना किन्तु कांग्रेस के लीडरों को इतमीनान न होने से उनकी दो पार्टियाँ होना। (२) एक पार्टी का सुधार को अच्छा कहना, दूसरी का बुरा कहना। (३) लिबरल पार्टी वालों का अलग होकर 'लिबरल फेडरेशन' नामक अपनी अलग संस्था बनाकर आन्दोलन जारी रखना।

अफगानों की चौथी लड़ाई

समयः—१९१९ से १९२१ ई० तक।

पक्षः—अँगरेज और अफगान।

कारणः—(१) हबीबुल्ला को उसके दुश्मनों का कत्ल करना। झगड़े के बाद हबीबुल्ला का अमीर होना। अमीर होकर बाप के दुश्मनों को सजा देना। (२) भारतवर्ष में रोलटबिल से अशान्ति फैलते हुए देखकर अफगानों का अमीर के साथ हमला करने के इरादे से सरहद पर फौज रवाना करना।

घटनाः—अँगरेजों का जलालाबाद और काबुल पर अधिकार करना। अफगानों की हार होना।

फलः—१९२१ ई० में सन्धि होना।

राजनैतिक आन्दोलनः—कारणः—(१) सन् १९१९ ई० में रोलट एक्ट पास होने से देश में अशान्ति फैलना। (२) महात्मा गान्धी का सत्याग्रह करना और इनका हिन्दू-मुसलमानों की अलग-अलग पार्टियों का एक करना (३) सरकार की सख्ती सहते हुए जेल जाना।

वाइंकाटः—(१) सरकारी स्कूलों और कालिजों को छोड़ना। (२) अदालतों का वाइकाट करना। (३) विलायती कपड़ों का वाइ-काट करना। (४) देशी कपड़े और चरखे का प्रचार करना। (५) देश में खद्दड़ और स्वदेशी की धूम मचना। (६) सन् १९२० ई० में काँग्रेस और मुस्लिमलीगके संयुक्त जल्सा से सरकार में असह-योग करना।

लार्ड रीडिङ्ग (१९२१-२६)

देश में शान्तिः—(१) रीडिङ्ग का बुद्धिमान और राजनीतिज्ञ होना। (२) महात्मा गांधी और पं० मदनमोहन मालवीय को गोल-मेज कान्फ्रेंस करने की सलाह देना। (३) इसमें महात्मा गांधी की शर्तों को गवर्नमेण्ट का न मानना। (४) इस समय सरकार का दमन नीति का प्रयोग करना और महात्मा गांधी को १९२२ ई० में ६ साल की सजा होना लेकिन दो साल बाद छुटकारा मिलना।

कॉंग्रेस के दो दलः—(१) दोनों दलों में झगड़ा होना। (२) हिन्दू-मुसलमानों में भी झगड़ा होने से असहयोग की चाल ठंडी पड़ना।

रीडिङ्ग का शासन सुधारः—(१) महायुद्ध के खर्चे की कमी पूरी करने के लिए १६२२ ई० में इंचकेप कमैटी कायम होना (२) सन् १६२३ ई० में नमक का महसूल बढ़ाया जाना। (३) सिविल सर्विस वालों की तनख्वाहें और भत्ते बढ़ाना। (४) फौजी शिक्षा के लिए देहरादून में कालिज खोलना। (५) नाभा और पटियाले में झगड़ा होना। (६) महाराजा नाभा को गद्दी से उतारना और गवर्नमेण्ट का खुद इन्तजाम करना। (७) १६१६ ई० के सुधारों पर ध्यान देने के लिए "मुडीमेन" कमेटी बनाना।

लार्ड अरविन (१६२६-३१ई० तक)

(१) सर चार्ल्सवुड का पोता (२) सच्चा, नेक और भारत का शुभ-चिन्तक। (३) राजनीतिक आन्दोलन को दबाना। (४) हिन्दू-मुसलिम झगड़ा मिटाने को दोनों से प्रार्थना करना।

कृषि-उन्नतिः—(१) अरविन को खेती से दिलचस्पी होना (२) कमीशन नियुक्त करना जिसकी रिपोर्ट के अनुसार कृषि-उन्नति के लिए एक कौंसिल खोलना और रुपया देना भी मंजूर करना।

साइमन कमीशनः—हिन्दुस्तानी शासन व्यवस्था ठीक करने केलिए इङ्गलैण्ड के वैरिस्टर सर जान साइमन की अध्यक्षता में कमीशन नियुक्त होना जिसमें हिन्दुस्तानी मेम्बर न होने से भारत वालों का विरोध करना। (२) सर तेज बहादुर का इसके विरुद्ध आन्दोलन करना। (३) कांग्रेस का इसका वाईकाट करना। (४) पब्लिक के विरोध पर बाद में गवर्नमेण्ट का इसको अलग रख देना।

शारदा ऐक्टः—मिस्टर हरिविलास शारदा का लेजिस्लेटिव एसेम्बली में यह बिल पेश करना कि १२ साल से कम लड़की और १४ साल से कम उम्र वाले लड़के का विवाह न हो। (२) कई मेम्बरों का विरोध करना और कहना कि इससे भारतवासियों पर अन्याय होगा। (३) फिर १४ साल की लकड़ी और १८ साल का लड़का तय किया जाना। (४) इस पर भी विरोध होने से आखिर में ऐसी शर्तें लगाना कि जिसे विरोध का फिक्र न होना।

राजनैतिक आन्दोलनः—(१) भारत वालों का गोलमेज कान्फ्रेंस में उपनिवेशीय स्वराज्य माँगना (२) पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में पूरी स्वतंत्रता का रेज्यूलेशन पास होना। (३) महात्माजी का पत्र निम्नाङ्कित शर्तों पर वाइसराय के नाम।

(१) शराबखोरी का बन्द करना। (२) नमक का महसूल उठाना। (३) फ़ौज के खर्चे में आधी कमी करना (४) बड़े अफसरों की तनख्वाहें में कमी। (५) विदेशी माल का भारत में न आना। सरकार का ये शर्तें न मानना। (६) गाँधी जी का क़ानून तोड़ते हुए साबरमती आश्रम से ८१ आदमियों के साथ समुद्र जाकर नमक बनाना। (७) अन्त में पूना में यरवदा जेल में नजरबन्द होना। (८) इस पर आन्दोलन का बढ़ना। (९) कांग्रेस वालों का किसानों से लगान न देने को कहना। (१०) औरतों और बच्चों का दूकानों पर पिकेटिंग करना। (११) जनता और पुलिस में मुठभेड़ होना। (११) जनता और पुलिस का जख्मी होना (१२) इंगलैंड में गोलमेज कान्फ्रेंस की तैयारी होना। (१३) गांधी जी का

जेल से छुटकारा पाना लेकिन इनका गोलमेज कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने की मनाही करना। (१४) कुछ दिनों बाद गांधीजी का वाइसराय से मिलना। आपस में मेल करना और गवर्नमेन्ट का आर्डिनेंस दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस में वापिस लेना तथा स्वराज्य की माँग पर विचार करने का वादा करना।

लार्ड विलिङ्गडिन (१६३१ ई० से ३६ ई० तक)

(१) लार्ड अरविन के बाद लार्ड विलिंगडन का वायसराय होना। (२) इससे पहले बम्बई और कनाडा का, गवर्नर रहना। (३) दूसरी गोलमेज सभा होना और पं० मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी तथा सरोजिनी नायडू का कांग्रेस के प्रतिनिधि होने के रूप में, लंडन जाना। (४) वायसराय का सत्याग्रह आन्दोलन को दमन करना। गाँधी जी आदि का जेल में जाना। नवम्बर सन् ३२ में तीसरी गोलमेज सभा होना। (६) सन् १६३३ में श्वेतपत्र प्रकाशित होना।

गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट

(१६३५) ब्रिटिश पार्लियामेंट का भारत के लिए एक्ट पास करना उसके अनुसार भारत में निम्नपरिवर्त्तन होना:—(१) एक्ट के अनुसार संघ शासन और प्रान्तों में पूर्ण स्वतः शासन की व्यवस्था की जाना। (२) गवर्नर जनरल और गवर्नरों को बड़े बड़े अधिकार मिलना। (३) सेक्रेटरी आफ स्टेट के अधिकार कम कर देना और उसकी कौंसिल बरखास्त कर देना। (४) इसके बदले में ६ सलाह-

कार रक्खे जाना, (आधे भारतीय जो १० वर्ष तक नौकरी कर चुके होंगे)। (५) सेक्रेटरी आफ़ स्टेट के आफ़िस का खर्चा बृटिश सरकार के आधीन होना। (६) ब्रह्म देश भारत से अलग कर देना। (७) बिहार, उड़ीसा के सूबे अलग-अलग कर देना। (८) सिन्ध का सूबा बम्बई प्रेसीडेन्सी से अलग कर देना।

केन्द्रीय शासनः—अब तक बृटिश सरकार का शासन सन् १९१९ के एक्टानुसार चलना। सन् १९३५ के अनुसार केन्द्रीय संघ शासन स्थापित नहीं किया जाना। केन्द्रीय शासन मुख्यतः—गवर्नर जनरल और उसके मन्त्री और दो सभा १—फ़ेडरल एसेम्बली २—फ़ेडरल कौंसिल द्वारा होना।

फ़ेडरल एसेम्बलीः—(१) इसमें ३७५ सदस्य होना जिनमें २५० बृटिश भारत के प्रतिनिधि और शेष देशी राज्यों के प्रतिनिधि होना। (२) हर पाँचवे साल चुनाव होना। (३) सूबों की सभाओं का स्वयम् प्रतिनिधि चुन कर भेजना और देशी नरेशों का सदस्यों के नाम अङ्कित करके भेजना। इसका काम सालाना बजट पर बहस करना और कानून बनाना परन्तु गवर्नर जनरल और सम्राट की बिना स्वीकृति के प्रचलित न होना।

फ़ेडरल कौंसिलः—इसमें सदस्यों की संख्या २६० होना जिनमें १५६ बृटिश भारत के और शेष देशी नरेशों के चुने हुए होना।

फ़ेडरल कोर्टः—इस एक्ट के अनुसार फ़ेडरल कोर्ट दिल्ली में स्थापित होना इसका काम उन प्रश्नों का निर्णय करना होता था, जो १९३५ के एक्ट के व्यवहारिक रूप में आने से उत्पन्न होते थे।

प्रान्तीय सरकारः—सन् १६३५ के एक्ट के अनुसार बृटिश प्रान्तों में प्रान्तीय सरकार स्थापित होना। प्रान्त का शासन गवर्नर और मन्त्रियों द्वारा होना। मन्त्री जनता के प्रतिनिधियों में से चुने जाना। गवर्नर का इनकी सम्मति से काम करना। यदि किसी काम में बाधा पड़ने की सम्भावना हो तो उसकी सलाह को गवर्नर का रद्द कर देने का अधिकार होना।

व्यवस्थापिकाः—किसी सूबे में दो और किसी में एक का होना। उनके नाम। लेजिस्लेटिव एसेम्बली और लेजिस्लेटिव कौंसिल। एसेम्बली का चुनाव हर पाँचवे साल सम्मति द्वारा होना। एसेम्बली का वजट पास करना और मन्त्रियों का वेतन नियत करना। कौंसिल का इससे छोटी होना। इसके सदस्य भी जनता द्वारा चुने जाना परन्तु कुछ सदस्यों का गवर्नर का नाम अङ्कित करना। कानूनी मसविदे और एसम्वली में पास हुए मसविदों का इसी कौंसिल में पास होना, मतभेद होने पर एक साथ विचार करना तथा बहुमत से तै होना।

सम्राट जार्ज पञ्चम की सिलवर जुबली;

जुबली और भूकम्पः—७ मई सन् १६३५ को सारे देश में धूमधाम से सिलवर जुबली मनाई जाना। बिहार प्रान्त और केटा में भयङ्कर भूकम्प आना। करोड़ों रुपयों की हानि होना।

सम्राट जार्ज पञ्चम की मृत्यु—(१६३६ ई०)

२० जनवरी सन् ३६ ई० को सम्राट जार्ज पञ्चम की मृत्यु

होना। देश भरमें शोक मनाया जाना। लार्ड विलिंगडन का स्तीफा देना।

लार्ड लिनलिथगो

लार्ड लिनलिथगोः—(सन् १९३६ ई०) लार्ड विलिंगडन के स्तीफा दे जाने के बाद लार्ड लिनलिथगो का वर्तमान वायसराय होना। कृषि कार्य में रुचि लेना।

कांग्रेस मन्त्रि-मण्डलः—कांग्रेस को आठ सूबों में सफलता मिलना। कांग्रेस का मन्त्री पद ग्रहण न करना; आश्वासन देने पर स्वीकार करना। कृषकों, मजदूरों तथा अन्य दीनों की दशा सुधारने का उद्योग करना।

सम्राट एडवर्ड अष्टम का पद त्यागः—(१९३७)—सम्राट जार्ज पंचम की मृत्यु के बाद इनके जेष्ठ पुत्र प्रिंस आफ़ वेल्स का एडवर्ड अष्टम की उपाधि लेकर गद्दी पर बैठना महिला मिसेज़-सिम्सन के साथ विवाह की इच्छा करना। पार्लियामेन्ट का इसे अस्वीकार करना। इस पर सम्राट एडवर्ड अष्टम का पद त्यागना।

जार्ज षष्ठ (सन् १९३७)—सम्राट एडवर्ड अष्टम के बाद उनके छोटे भाई का सिंहासनारूढ़ होना।

भारत की शासन-पद्धति का चित्र

पार्लियामेण्ट

|

सम्राट

|

हाउस ओफ लार्डस (रईस) — हाउस ओफ कोमन्स (प्रजा)

|

प्रधान-मंत्री

|

मंत्री मंडल

भारत-मंत्री

(इंडिया कौंसिल)

|

वाइसराय

|

प्रान्तीय कौंसिल — भारतीय कौंसिल

|

लेजिस्लेटिव — एक्जीक्यूटिव

भारतीय-कौंसिल के नो महकमें

१	२	३	४	५	६	७	८	९
फारेन डिपार्ट-मेंट	होम डिपार्ट-मेंट	महकमा माल	महकमा व्यापार	महकमा कानून	महकमा इमारत	मह० शिक्षा	मह० फौज	मह० माल-गुजारी, खेती और कलाकौशल

HIGH SCHOOL EXAMINATION—1939 (R. B.)

HISTORY—First Paper.

Indian History & Allied Geography,

Attempt six questions, two from each section. Question 1 is compulsory.

Section A.

1. Draw a sketch map of India, and show on it either of the following :—

(*a*) Extent of the Mughal Empire under Akbar and its Subahs,

(*b*) Territories acquired by Wellesley.

2. Sketch the reign of Asoka. Why is he regarded as one of the greatest kings of the world ?

3. Give a short account of the culture of the Gupta Age.

4. Who was Hiuen Tsang ? What does he say about India ?

Section B.

5. Give an account of the Arab occupation of Sind. Why was he short-lived ?

6. Describe the character and career of Muhammad bin Tughluq. Why did he fail ?

7. Narrate briefly the struggle among the sons of Shah Jahan for the Mughal throne.

8. Write a short account of the expansion of the Maratha power from 1720 to 1761.

Section C.

9. 'Clive was the real founder of the British power in India.' Explain.

10. What do you know about Maharaja Ranjit Singh ? Briefly describe his relations with the British.

11. Sketch the viceroyalty of Lord Ripon.

12. Give in outline the constitutional development of India from 1861 to 1919.

HISTORY—SECOND PAPER, 1939

English History and Allied Geography.

Answer Question **10** *and* **any five** *others*, **six** *questions in all.*

1. How did Edward I iuclude Wales and Scotland in the Kingdom of England ?

2. What were the causes and consequences of the Wars of the Roses ?

3. Describe briefly the progress of the Reformation Movement in England.

4. Sketch the career of Oliver Cromwell.

5. Explain the causes of the Glorious Revolution.

6. Why is Pitt the Elder famous in English history ?

7. Why did England go to war against Napoleon ? Mention the principal causes of her success.

8. What do you know of the Industrial Revolution ?

9. Give a short account of the Anti-Corn Law movement.

10. Write short notes on *any five* of the following:—
Joan of Arc, Cardinal Wolsey, The Roundheads, The Jacobites, The First Reform Act, The Crimean War, Parnell and Edward VII.

HIGH SCHOOL EXAMINATION—1940 (R. B.)

HISTORY—First Paper

Indian History and Allied Geography

Only six *questions are to be attempted,* two *from each section, Question 1 is compulsory.*

Section A

1. Show how the physical features of India have affected its history. Illustrate your answer by a sketchmap.

2. Compare the life of the Aryans in the Vedic age with that in the Epic period.

3. Give an account of Alexander's invasion of India, and mention its results.

4. State what you know of Chandragupta Maurya and his administration.

Section B

5. Give a short account of the important kings of the Slave dynasty.

6. In what ways was Akbar a great king ?

7. Account for the fall of the Mughal empire.

8. Give an account of the rise of Maratha power under Shivaji.

Section C

9. Give a short account of the struggle between the French and the English for supremacy in India.

10. Explain the reforms introduced by Lord Cornwallis.

11. Why is Lord Dalhousie regarded as a great empire-builder ?

12. Sketch the relations between the Government of India and Afghanistan during the second half of the nineteenth century.

HISTORY—Second Paper—1940 (R. B.)

English History and Allied Geography

Answer six questions, of which Question 11 must be one

1. How did William the Conqueror establish his authority in England ?

2. Indicate the main stages in the growth of Parliament upto 1295.

3. Explain the causes and results of the Hundred Years' War.

4. Summarize the main features of the foreign policy of England during the Tudor period.

5. Give a brief account of the reign of James I of England.

6. Why did England fight the War of the Spanish succession ?

7. Sketch the career of Sir Robert Walpole.

8. What led to the War of American Independence ?

9. Describe the colonial and commercial expansion of England in The Victorian Age.

10. Give your own estimate of Gladstone as a statesman.

11. Write short notes on *any five* of the following :—

(*a*) Sir Thomas More.
(*b*) Philip II of Spain.
(*c*) Exclusion Bill.
(*d*) Act of Union (1707).
(*e*) Anti-Corn Law League.
(*f*) Chartism.
(*g*) Joseph Chamberlain.
(*h*) Parliament Act of 1911.

HIGH SCHOOL EXAMINATION, 1941—R. B.

HISTORY—First Paper—1941

Indian History and Allied Geography.

Answer six *questions only* : one *from Section A and* five *from Section B.*

Section A

1. Sketch the career of Samudra Gupta. Draw a map to illustrate his empire.

2. Describe briefly the annexations of Akbar. Draw a map to illustrate your answer.

3. Describe, with the help of a map, the expansion of the British Empire in India under Lord Dalhousie.

Section B

4. Describe briefly the administrative system of the Mauryas.

5. Who were the Rajputs ? Why did they fail in their efforts to resist the Muslim invaders in the twelfth century ?

6. Give your estimate of the policy and achievements of Sultan Alauddin Khilji.

7. Account for the rise of Sher Shah, and describe briefly his system of administration.

8. Give some account of Court life and patronage of Fine Arts under Jahangir and Shahjahan.

9. Describe briefly the career and achievements of Haider Ali of Mysore.

10. Explain the reforms introduced by Lord William Bentinck.

11. What were the causes of the Mutiny of 1857 ?

12. Describe briefly the Viceroyalty of Lord Curzon.

HISTORY—SECOND PAPER, 1941

English History and Allied Geography

N. B.—*Answer* six *questions, of which Question 11 must be one*

1. Give an account of Henry II's quarrel with the Church.

2. Why is Edward I considered to be a great king?

3. How did Henry VII make the power of the king absolute?

4. Give a brief account of the Reformation in England.

5. What were the causes of the struggle between James I and the Parliament?

6. Sketch the career of Cromwell, and describe the system of government under the Protectorate.

7. Explain the causes and results of the Revolution of 1688.

8. Estimate the services rendered by the Navy to England in her fight against Napoleon.

9. Give an account of the Industrial Revolution, and mention its effects.

10. Sketch the career of Sir Robert Peel, and point out his services to his country.

11. Write short notes on *any five* of the following:—

(*a*) The Armada.
(*b*) The Petition of Right.
(*c*) Pride's Purge.
(*d*) The Pilgrim Fathers.
(*e*) The Continental System.
(*f*) The Boers.
(*g*) Parnell.
(*h*) The Parliament Act of 1911.

HIGH SCHOOL EXAMINATION—1942,

HISTORY—First Paper.

Indian History and Allied Geography.

N. B.—Attempt six *questions,* two *from each section.*

Section A.

1. Give an account of the civilisation of the Vedic period.

2. Examine the title of Asoka to be regarded as one of the greatest kings of the world.

3. Sketch the character and achievement of Chandra Gupta II Vikramaditya.

4. Explain the principles of Buddhism. Discuss the part played by Kanishka as a patron of this religion.

Section B.

5. Write an account of the Arab Conquest of Sind, and give reasons for the failure of the Arabs to establish a permanent kingdom in India.

6. Form an estimate of the character and policy of Firuz Tughlaq.

7. Describe the Civil and Military organisation of the Maratha kingdom under Shivaji.

8. Explain the Deccan policy of Mughals.

Section C.

9. What are your reasons for regarding Robert Clive as the founder of the British Empire in India ?

10. Explain Wellesley's system of subsidiary alliances, and estimate its effects.

11. Trace the important stages in the development of the legislature in India from 1861 to 1919.

12. Write short notes on *ang five* of the following :—

(*a*) Mahenjo Daro,
(*b*) Pulakesin II,
(*c*) The Pallavas,
(*d*) The Bhakti movement,
(*e*) Bairam Khan,
(*f*) The doctrine of Lapse.
(*g*) The policy of Masterly inactivity,
(*h*) Lord Ripon.

HISTORY—SECOND PAPER, 1942

English History and Allied Geography

N. B.—Answer six *questions, of which Question* 4 *must be one.*

1. Indicate the influence of geography on the course of English History.

2. Summarize the main events of the reign of Queen Elizabeth.

3. What circumstance brought about the restoration of the Stuarts in 1660 ?

4. Give a short account of the Civil War of 1642. Draw a map of England showing therein the important battle fields of this war.

5. What were the objects of England in entering into the War of the Spanish Succession ? How far were her aims realised ?

6. Sketch the career and policy of Sir Robert Walpole.

What led to the War of American Independence ? Account for the success of the Americans.

8. Give a brief account of the struggle between England and Napoleon.

9. Give a brief history of Parliamentary reform in the 19th century.

10. Write short notes on *any four* of the following:—

(*a*) The Act of Settlement.
(*b*) The Anti Corn Law League.
(*c*) The Chartist Movement.
d) Lord Durham.
e) The Boer War.
(*f*) Parnell.

१६३६

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल इम्तिहान

भारतवर्ष का इतिहास

समय—३ घण्टे

नोटः—कुल छः सवालों के उत्तर लिखो—किन्तु सवाल आठवें का उत्तर अवश्य लिखो—

१—(क) जैन धर्म और बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धान्त लिख कर बताओ कि उनका भारतवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? ८

(ख) बौद्ध धर्म को फैलाने के लिये किस सम्राट ने क्या-क्या प्रयत्न किये ? ८

२—(क) सिकन्दर के बारे में क्या जानते हो ? ८

(ख) चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य का हाल लिखो। ८

३—गुलाम वंश का सब से बड़ा बादशाह कौन था ? इल्तुतमिश या बलबन—कारण लिखकर उसके समय का हाल लिखो। १६

४—दक्षिण में आक्रमण करने वाला सब से पहला मुसलमान बादशाह कौन था ? उसके राज्यप्रबन्ध का पूरा हाल लिखो। १६

५—मुग़ल वंश का सब से अन्तिम प्रसिद्ध बादशाह कौन था ? उसके समय का पूरा हाल लिखो। १६

६—शिवाजी के बारे में क्या जानते हो ! उनका पूरा हाल लिखो। १६

७—अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों में जो लड़ाइयां हुईं उनका संक्षेप में वर्णन करो और फ्रांसीसियों की हार के कारण लिखो। १६

—लार्ड डलहौजी के समय का हाल लिखो। 'लैप्स' या 'हड़प' की नीति क्या थी? इसके द्वारा कौन-कौन से राज्य अंग्रेजी राज्य में मिलाये गये? उसके समय का भारतवर्ष का नक़शा खींचो। २०

६—निम्नलिखित में से कोई से पाँच पर संक्षिप्त नोट लिखो। सन् १८५७ ई०, वर्ण भेद और जातियाँ, रणजीतसिंह, फ़ाहियान, पानीपत और वेलेज़ली।

ANGLO-VERNACULAR MIDDLE EXAM—1939

History

Time—3 hours

Note—Answer any seven questions including question No. 1 which is compulsory.

१—भारतवर्ष का नक्शा खींचकर हर्षवर्द्धन के राज्य का फैलाव दिखाओ और संक्षेप में बयान करो कि उसके राज्यकाल में भारत की क्या दशा थी? ८

२—अशोक को भारत के प्रसिद्ध सम्राटों में क्यों गिना जाता है? उसके राज्य काल का वर्णन करो। ७

३—मुसलमानों के आक्रमणों से पहिले उत्तरी भारत में कौन-कौन स्वतन्त्र रियासतें थीं? उनका हाल संक्षेप में लिखो।

४—बाबर के जीवन का हाल बयान करो और बताओ कि उसको हिन्दुस्तान में क्यों सफलता प्राप्त हुई?

५—सम्राट अकबर के शासनप्रबन्ध और धार्मिक नीति के विषय में तुम जो कुछ जानते हो सो लिखो। उसको अकबर महान् क्यों कहते हैं?

६—जहाँगीर के राज्यकाल का पूरा वर्णन करो?

७—भारतवर्ष में जो राज्य स्थापित करने के लिए अंग्रेजों और फ्रांसिसियों में युद्ध दक्षिणी भारत में हुए उनका हाल लिखो ?

८—लार्ड हेस्टिंग्ज का राज्यकाल किस लिए प्रसिद्ध है ? उसका पूरा हाल लिखो ?

९—अफ़गानों के प्रथम युद्ध के क्या कारण थे। इस युद्ध के हालात और नतीजे बयान करो ?

१०—रणजीतसिंह के विषय में तुम क्या जानते हो ? उसके मरने के बाद पञ्जाब अंग्रेजी राज्य में किस प्रकार मिला लिया गया ?

११—निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर संक्षिप्त नोट लिखो—फाह्यान, मुहम्मद गोरी, वहरामखाँ, महाराज सवाई जयसिंहजी, टीपू सुलतान, रुहेलों का युद्ध, सहायक सन्धि, वहमनी राज्य।

१९४०

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल इम्तिहान

भारतवर्ष का इतिहास

समय—३ घण्टे

नोटः—कुल छः सवालों के उत्तर लिखो, किन्तु छठे सवाल का उत्तर अवश्य लिखो।

१—वैदिक-काल और रामायण-महाभारत-काल के समय की तुलना करो। तुम्हारी राय में इन दोनो में कौन सा काल अच्छा था और क्यों ? १६

२—गुप्त-काल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण-काल' क्यों

कहते हैं ? इस वंश के सब से प्रसिद्ध सम्राट के समय का संक्षेप में वर्णन करो। १६

३—भारत में मुसलमानों की विजय के क्या कारण थे ? उनकी विजय के समय उत्तरी भारत में कौन कौन से प्रसिद्ध राज्य थे ? उनमें से किसी दो का संक्षेप में वर्णन करो। १६

४—मोहम्मद तुग़लक़ के समय का हाल लिखकर बताओ। उसे पागल क्यों कहते हैं ? तुम्हारी उसके लिये क्या राय है ? १६

५—शेरशाह के बारे में क्या जानते हो, उसने भारत में क्या-क्या सुधार किये और उनका क्या प्रभाव पड़ा ? १६

६—अकबर की देश-विजय का संक्षिप्त हाल लिखो और उसके राज्य का विस्तार नकशा खींचकर दिखाओ। २०

७—रणजीतसिंह का हाल लिखकर बताओ पंजाब अंग्रेजी राज्य में कैसे मिलाया गया ?

८—(क) लार्ड वेलेज़ली के बारे में क्या जानते हो ? उसका देशी राजाओं के साथ कैसा सम्बन्ध रहा ? ८

(ख) लार्ड विलियम बैण्टिङ्क ने हिन्दुस्तान में क्या-क्या काम किये ? ८

९—निम्नलिखित में से कोई से पाँच पर नोट लिखोः—

द्राविड़ और आर्य, ह्यूनसांग, रज़िया, बहमनी राज्य, महाराणा प्रताप, डूप्ले, और लार्ड कार्नवालिस। १६

ANGLO-VERNACULAR MIDDLE EXAM—1940

History

Time—3 hours

Note—Answer any seven questions including question No. 11 which is compulsory.

१—सिकन्दर महान के आक्रमण के समय उत्तरी भारत की

क्या दशा थी। इस आक्रमण का पूरा हाल लिखो और बताओ कि भारत पर इसका क्या प्रभाव पड़ा। ७

२—चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने मौर्य वंश किस प्रकार स्थापित किया उसके राज्यकाल का पूरा हाल लिखो। ७

३—मुहम्मदग़ौरी ने उत्तरी भारत किस प्रकार विजय किया। उसकी मृत्यु के बाद भारत में गुलाम वंश की नींव किसने डाली। इस वंश के सब से प्रसिद्ध राजा के राज्यकाल का हाल संक्षेप में लिखो। ७

४—हुमायूं के हाथ से देहली का राज्य कैसे निकल गया। उसके भारत से चले जाने के बाद पाँच साल तक जो सुधार यहाँ हुए उनका संक्षेप में वर्णन करो। ७

५—शाहजहाँ के राज्य-काल का संक्षेप में हाल लिखो। ७

६—कर्नाटक की तीसरी लड़ाई का हाल लिखो और बताओ कि भारत में फ्रान्सीसियों को अंग्रेजों के सामने क्यों हार हुई। ७

७—बंगाल पर अंग्रेजी सरकार का अधिकार किस प्रकार हुआ। इसका पूरा वर्णन करो। ७

८—लार्ड वेलेज़ली और लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने मरहठों की शक्ति का किस तरह नाश किया, संक्षेप में वर्णन करो। ७

९—लार्ड विलियम बैंटिङ्क के राज्यकाल में जो सुधार हुए उनके विषय में जो कुछ जानते हो लिखो। ७

१०—निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर नोट लिखोः—
फ़ाहियान, बहमनी राज्य, तैमूर, पानीपत का पहला युद्ध, रेग्यूलेटिङ्ग ऐक्ट, सहायक सन्धि, शेर अली, ब्रह्मा का तीसरा युद्ध।

११—भारतवर्ष का नक़शा खींचकर उसमें (a) अकबर के

राज्य का फैलाव और (b) निम्नलिखित स्थान दिखाओ:—देहली, टेक्सिला, देवगिरी, पानीपत, अर्काट, झाँसी, चित्तौड़, चिलयानवाला।

१६४१

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल इम्तिहान

भारतवर्ष का इतिहास

समय—३ घण्टे

नोट—कुल छः सवालों के उत्तर लिखो किन्तु पाँचवें सवाल का उत्तर अवश्य लिखो।

१—रामायण और महाभारत के समय का हाल लिखकर समझाओ—तुम्हारी राय में कौन सा समय अच्छा था और क्यों? १६

२—अशोक ने क्या-क्या प्रसिद्ध कार्य किये। इसके वंश का खुलासा हाल लिखकर बताओ, उस समय हिन्दुस्तान की क्या हालत थी? १६

३—महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी की तुलना करो। तुम्हारी राय में कौन अच्छा था और क्यों? १६

४—दिल्ली सल्तनत का खुलासा हाल लिखो। इसके पतन के क्या-क्या कारण थे? १६

५—बाबर के आक्रमण के समय हिन्दुस्तान की क्या हालत थी। उस समय भारत में कौन-कौन से राज्य थे—नक़शा खींचकर बताओ। २०

६—ईस्टइण्डिया कम्पनी का संक्षेप में हाल लिखकर अंग्रेजों की विजय के कारण लिखो? १६

७—कार्नवालिस के बारे में क्या जानते हो? इस्तमरारी

बन्दोवस्त से क्या समझते हो। इससे क्या-क्या हानि लाभ हुए ? १६

८—(क) ब्रह्मा पर अंग्रेजों का अधिकार कैसे हुआ ? ८

(ख) मराठों की खास-खास रियासतों के नाम लिखकर समझाओ उनकी शक्ति क्यों कर नष्ट हुई ? ८

६—नीचे लिखे में से कोई से पाँच पर नोट लिखो— १६

रैगूलेटिङ्ग एक्ट, सर टामस रो, महाराज मानसिंह (प्रथम) बक्सर की लड़ाई, बलवन, हर्षवर्धन, सन् १८५७ का गदर।

1941

JAIPUR A. V. MIDDLE EXAMINATION

History

१—भारतवर्ष का नकशा खींचकर उसमें 1707 A. D. में मुग़ल राज्य का फैलाव दिखाओ और संक्षेप में वर्णन करो कि इस राज्य की अवनति के क्या कारण थे।

२—बौद्ध धर्म और जैन धर्म के सिद्धान्तों में तुम क्या अन्तर पाते हो ? बौद्ध धर्म की उन्नति और अवनति के क्या कारण थे ?

३—फाहियान और ह्वानसाँग भारतवर्ष में किन राजाओं के समय में आये थे। उन्होंने भारत के विषय में जो कुछ लिखा है उसे संक्षेप में बयान करो।

४—मोहम्मद तुग़लक के राज्यकाल के विषय में जो कुछ जानते हो उसका वर्णन करो।

५—शेरशाह भारत के इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है, पूरा वर्णन करो।

६—लार्ड कार्नवालिस के राज्यकाल का पूरा हाल लिखो।

७—लार्ड हेस्टिंग्ज ने भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य को दृढ़ करने

और शान्ति स्थापित करने के लिये क्या कार्य किये उनका वर्णन करो।

८—सन् १८५७ के विद्रोह के क्या कारण थे? इसका क्या फल हुआ और विद्रोह के शान्त होने पर भारत के शासन में क्या परिवर्तन हुआ?

९—सन् १९०९ के मार्ले-मिण्टो सुधार और १९१९ के मॉंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार के विषय में जो कुछ जानते हो, उसका वर्णन करो।

१०—निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षेप नोट लिखो :—
कनिष्क, समुद्रगुप्त, कबीर नादिरशाह, टीपू सुलतान, अफगानिस्तान की दूसरी लड़ाई, साइमन कमीशन, सन् १९३० की गोलमेज कान्फ्रेंस।

१९४२

वर्नाक्यूलर फ़ाइनल इम्तिहान

भारतवर्ष का इतिहास

समय—३ घण्टे

नोट—केवल ६ सवालों के उत्तर लिखो। इनमें से छठे सवाल का उत्तर देना आवश्यक है।

१—वैदिक काल में आर्यों के जीवन का हाल लिखो।

२—सिकन्दर के आक्रमण का वर्णन करो और लिखो कि उसका भारतवर्ष पर क्या प्रभाव पड़ा।

३—गुप्त-काल हिन्दुस्तान के इतिहास में स्वर्ण-काल कहलाता है। कैसे? विस्तारपूर्वक लिखो।

४—अलाउद्दीन खिलजी ने किस नीति और किन-किन उपायों-

द्वारा अपना शासन दृढ़ किया और उसमें वह कहाँ तक सफल हुआ, यह समझाकर लिखो।

५—अकबर को 'अकबर महान्' क्यों कहते हैं ? समझाकर लिखो।

६—मुग़ल-साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे ? लिखो और उस समय का नकशा खींचकर दिखाओ।

७—लार्ड क्लाइव के जीवन-चरित्र और उसकी नीति का वर्णन करो।

८—लार्ड विलियम वैण्टिङ्क ने जो-जो सुधार किये उनका वर्णन करो।

९—'क्लाइव का काम डलहौज़ी ने समाप्त किया'। कैसे ? समझाकर इसका उत्तर दो।

१०—नीचे लिखों पर नोट लिखोः—(अ) फ़ाह्यान, (ब) तानसेन, (स) नाना फड़नवीस और (द) रेग्यूलेटिंग ऐक्ट।

ANGLO-VERNACULAR MIDDLE EXAM—1942

History

Time—2½ hours

नोट—निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई से ६ प्रश्नों के उत्तर दो। मगर हर Section में से कम से कम किसी १ प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है।

Section—A

१—चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल का पूरा हाल वर्णन करो। ८

२—समुद्रगुप्त के राज्यकाल का हाल लिखो और बताओ कि गुप्तकाल को स्वर्णयुग क्यों कहते हैं। ८

३—हर्षवर्धन को भारतवर्ष के प्रसिद्ध राजाओं में क्यों गिना जाता है। ८

Section—B

४—सुलतान अलाउद्दीन की विजय और शासन-प्रवन्ध के विषय में जो कुछ जानते हो उसका वर्णन करो। ८

५—बाबर का जीवनचरित्र लिखो और बताओ कि उसको लड़ाइयों में सफलता क्यों हुई। भारतवर्ष का नक़शा खींचकर उसके राज्य का फैलाव दिखाओ। १०

६—अकबर को राज्यसिंहासन पर बैठने के बाद किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसने उनको किस प्रकार दूर किया और अपने राज्य को फैलाया। ८

Section—C

७—१७०७ से १७६३ तक (राजा साहू के मुक्त होने के बाद से पानीपत के तीसरे युद्ध तक) मरहठों की उन्नति और अवनति का हाल संक्षेप में लिखो और बताओ कि पानीपत के युद्ध में मरहठों की हार क्यों हुई। ८

८—अंगरेजों और फ्रांसीसियों में जो युद्ध दक्षिण में हुए उनका हाल संक्षेप में वर्णन करो और बताओ कि फ्रांसीसियों की हार के क्या कारण थे। ८

९—प्लासी और बक्सर की लड़ाइयों का हाल बयान करके समझाओ कि उनका भारतवर्ष के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा। ८

Section—D

१०—लार्ड कार्नवालिस के राज्यकाल का पूरा हाल लिखो। ८

११—लार्ड वेलेज़ली ने भारतवर्ष में अंगरेजी राज्य की नींव दृढ़ करने के लिए क्या किया। पूरा वर्णन करो। ८

१२—लार्ड डलहौज़ी को भारतवर्ष का सबसे बड़ा गवर्नर-जनरल क्यों माना जाता है। ८